स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

अप्रैल 2024, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

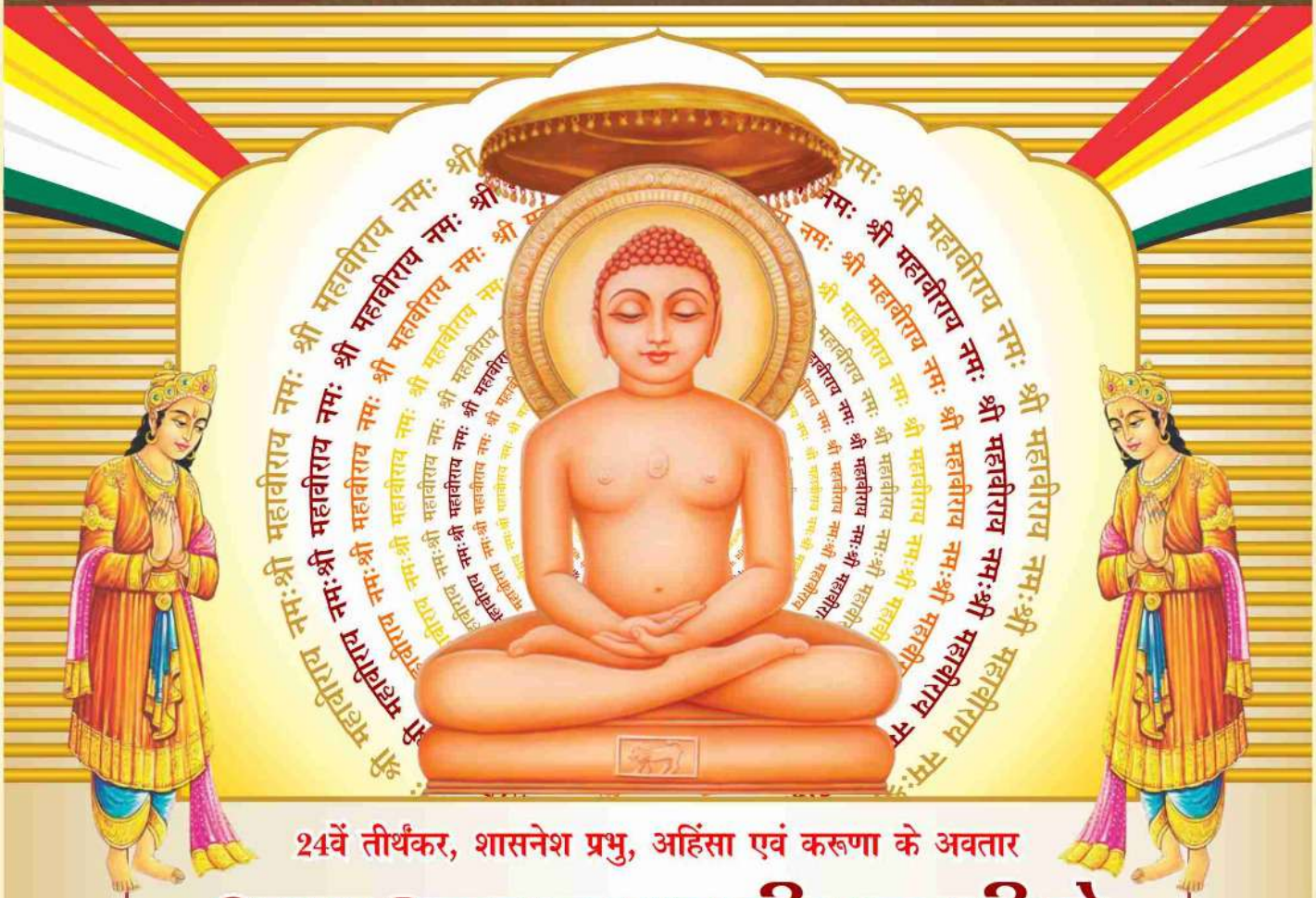

24वें तीर्थंकर, शासनेश प्रभु, अहिंसा एवं करूणा के अवतार

श्रमण भगवान महावीर स्वामी के

2623वें जन्म कल्याणक

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी वीर निर्वाण सम्वत् 2550 पर चतुर्विध संघ को

मंगलमय बधाईयाँ शुभकामनाएं

सत्य व अहिंसा के शाश्वत प्रतीक भगवान महावीर स्वामी जी ने कर्म प्रधानता से परिपूर्ण अपनी शिक्षाओं द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया, उनके जीवन्त विचार सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

One who neglects or disregards the existence of earth, air, fire, water and vegetation disregards his own existence which is entwined with them.

— Lord Mahavira

जो पृथ्वी, वायु, अग्नि, जल और वनस्पति के अस्तित्व की उपेक्षा या अवहेलना करता है वह अपने अस्तित्व से, जो उसके साथ जुडा है, उसका अनादर करता हैं।

— भगवान महावीर

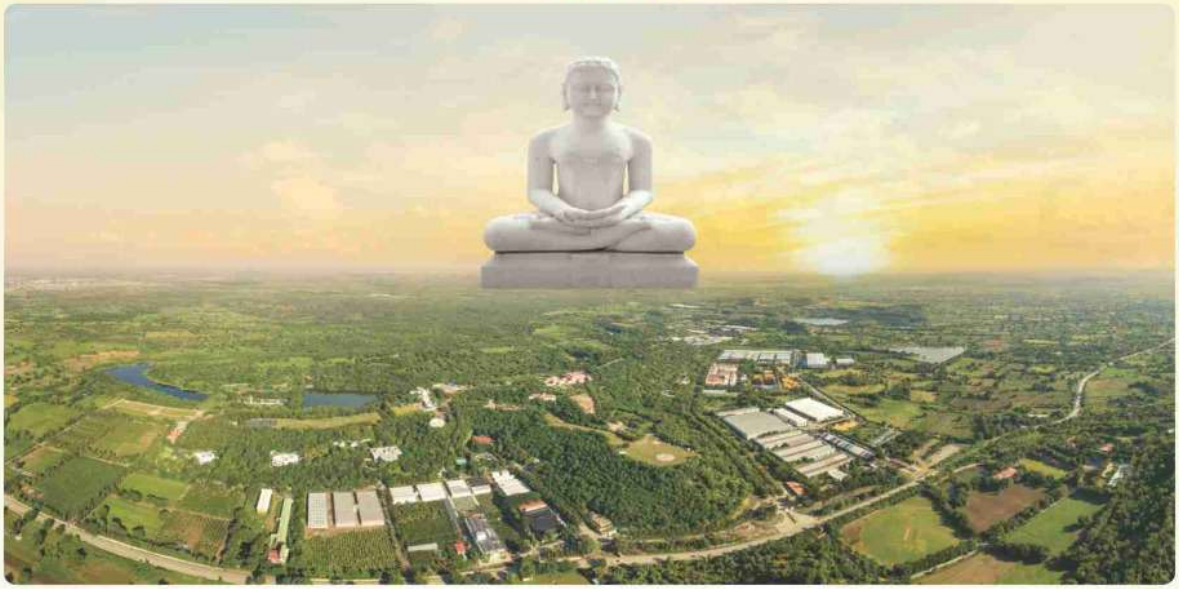

Jain Agri Park, Jain Hills, Jalgaon, Maharashtra (India). जैन ॲग्री पार्क, जैन हिल्स्, जलगाँव, महाराष्ट्र (भारत)।

We revere these elements of our universe. They reflect our ethos.

Yellow, Green, Blue and Brown are colours of Nature and have been embodied in our logo.
They encapsulate the conviction of the Founder and
the lasting commitment of the Corporation to agriculture.
Jain Irrigation is striving to add value to the entire agri-chain.
At the same time, they produce and process a complete range of agri-products
for the exacting world markets and growing domestic clientele.
The Corporation is poised to grow and attain water, food and energy security.

— Bhavarlal Hiralal Jain, Founder

हम अपने ब्रह्मांड के इन तत्वों का सम्मान करते हैं। ये हमारे लोकाचार को दर्शाते हैं।

पीला, हरा, नीला और भूरा, प्रकृति के रंग हैं और हमारे 'प्रतीक चिन्ह (लोगो)' में समाहित हैं।
वे संस्थापक के दृढ़ विश्वास और कृषि के प्रति निगम की स्थायी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।
जैन इरिगेशन संपूर्ण कृषि-श्रृंखला में मूल्य संवर्धन करने के प्रयास के साथ ही उत्पादन और प्रसंस्करण भी कर रहा हैं।
कठिन व स्पर्धात्मक विश्व बाज़ारों और बढ़ते घरेलू ग्राहकों के लिए कृषि-उत्पादों की एक पूरी श्रृंखला का निर्माण करके जल,
खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा विकसित करने और प्राप्त करने के लिए संस्था कटिबद्ध है।

— भवरलाल हीरालाल जैन, संस्थापक

श्रमण भगवान महावीर जयंती की शुभकामनाएं।

जियो और जीने दो

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.™
छोटे छोटे कदम. आसमाँ छुनेका दम.®

Jain Irrigation Systems Ltd.®
Small Ideas. Big Revolutions.®

Live & Let Live

www.jains.com

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 04 | अप्रैल- 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल
संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560
डॉ. भद्रेश कुमार जैन, चेन्नई
93822 91400
एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

aissjc137342@cnrb

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10
भगवान महावीर का जन्म...	- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी म.सा.	11-12
प्रभु शासनेस महावीर	- उपाध्याय पू. श्री केवलमुनिजी म.सा.	13-18
जैन श्रमण संघ	- उपाध्याय पू. श्री रवेन्द्रमुनिजी म.सा.	19-20
भगवान महावीर की दृष्टि...	- प्रवर्तक पू. श्री गणेशमुनि म.सा. 'शास्त्री'	21-22
जीवन की सरलता...	- उप-प्रवर्तक पू. श्री गौतममुनिजी म.सा.	23-25
श्रावक के बारह व्रत	- तत्वचिंतक पू. श्री उत्तममुनिजी म.सा.	26-27
पू. श्री ताराचंदजी म.सा.	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	28-29
जिनशासन की श्रेष्ठ मणियाँ	- महासती सुन्दरी	30-31
मेरे महावीर	- श्री स्वराज जैन, टाइम्स ऑफ इंडिया	31
भगवान महावीर के...	- श्री त्रिलोकचंद जैन, दिल्ली	32-33
तीर्थंकर भगवान	- श्री लादूलाल सिंघवी जैन, स्वाध्यायी	34
भगवान महावीर की...	- श्री पदमचंद गांधी जैन, जयपुर	35-37
विश्व की समस्या...	- डॉ. अशोक के. गादिया जैन, कल्याण	38-39
चॉकलेट का डिब्बा	- श्री धर्मीचन्द कांकरिया जैन, चेन्नई	39
स्वयं के निर्माता :...	- सौ. शुभांगी मनोजकुमार कात्रेला, पुणे	40-41
बंद करें, बोन चाईना...	- श्री भद्रेश कुमार जैन, चेन्नई	42
शराब की पार्टी	- श्री नेकराम सिक्योरिटी गार्ड, दिल्ली	43-44
राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा मार्च माह में सम्पन्न		45
समाचार प्रकाश		46-49

अस्वीकरण : समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री ज्ञानप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	07.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	08.	श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा	94141 13056
03.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	09.	श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
04.	श्री प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर	98456 71449	10.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	11.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
06.	श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली	98104 35108	12.	श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत	98251 35744

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन
श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत 98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद 98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली 98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली 93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर 98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे 98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली 98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर 93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर 92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर 93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर 98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद 92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई 98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई 94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना 98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर 98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली 98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर 78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली 98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली 98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता 98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना 70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव 98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे 98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई 98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी 87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर 94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद 99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली 98104 35108

जीवन प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे 98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे 98903 01635

मानव सेवा योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर 93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर 98452 21302

जीव दया योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत 70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई 98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर 83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर 94480 81348

वैय्यावच्च योजना
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर 99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर 93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु 98220 31788

अल्पसंख्यक योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर 98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर 92149 63701

विहारधाम योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती 98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर) 98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री
श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर 93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर 98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद 92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई 98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली 93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना 98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर 98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत 98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ 94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली 93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

– सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि	
संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	रु. 1000/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह
व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पदुम चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर	99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे	88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर	98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर	98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर	98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर	98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

सम्पादकीय

बिना एकता के ज़िंदगी वीरान होती है...

E-mail: ajvk1973@gmail.com

– अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री – जैन कॉन्फ्रेंस

आदरणीय पाठकगण-आत्मप्रिय बंधुओं,

सादर जय जिनेन्द्र !

मनुष्य के लिए एक बात पक्के तौर पर कही जा सकती है कि वह एक सभ्य प्राणी है। सभ्यता जहाँ उसके व्यवहार में देखी जा सकती है वहीं मानवतापूर्ण बातें उसके विचारों में शामिल रहती हैं और तो और व्यक्ति का आकर्षण उसकी वाणी में भी सहज रूप से देखा जा सकता है।

कहते हैं कि संयम केवल मात्र श्रमण का विषय नहीं है, वह मानवीय व्यवहार एवं आचरण का भी विषय कहा जा सकता है। संयम से तात्पर्य केवल मोक्ष मार्ग पर चलने का आलम्बन नहीं अपितु मानवीय व्यवहारिकता का स्पष्ट आलम्बन भी इसमें शामिल है। व्यक्ति के पास ही केवल यह समझ है कि अपने बोलने या सोचने के ढंग को वह किस प्रकार नियंत्रित कर सकता है और अपनी भाषा को किस प्रकार से सहज बना सकता है। व्यक्ति वैमनस्य के मैल को हृदय में जमा किए हुए रहता है और उसी में अपना अधिकांश जीवन खो देता है, यही समय को यदि वह आपसी समन्वय में व्यतीत करे तो मानवता का स्वरूप ही बदल जाए। व्यक्ति को चाहिए कि हृदय में व्याप्त मनमुटाव को यथाशीघ्र दूर करने का प्रयास करे, यदि वह इसमें सफल होगा तो हृदय में प्राकृतिक प्रेम व आदर्श आचरण उसके मानस में स्वतः स्थापित होगा। मनुष्य के व्यवहार में सहनशीलता का होना परम आवश्यक होता जा रहा है, जिसका कि आज सर्वथा अभाव है। हालांकि मनुष्य ने आज विज्ञान के क्षेत्र में, रहन-सहन के तरीके में, खान-पान में काफी उन्नत्ति की है, प्रगति की है, लेकिन उसने अपने आत्मीय गुणों में उन्नत्ति की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, उसने आज सादगी को छोड़ दिया है।

मुझे यह लिखते हुए कुछ हंसी भी आ रही है कि आज ज़मीन के भाव तो बढ़े लेकिन जीवन में उन्नत्ति के भाव नहीं बढ़े। व्यक्ति के पिछड़ने का कारण है-एकाकीपन, आज परिवारवाद व संगठनवाद की भावना दिलों से ही गौण होती जा रही है। मानवीय प्रगति अथवा उन्नत्ति का सार एकता के समूह में और अपनेपन की गहराई में छिपा है। मनुष्य आज स्वार्थ की भावना के वशीभूत है जबकि आपसी मिलन एवं मेलजोल से रहना उचित एवं सामाजिक रूप से शान्तिप्रद है।

आज लोग मन में छोटे-छोटे अहम् पालने लगे हैं, जीवन में असंयम एवं असहजता का यह भी एक कारण है जबकि नम्रता जीवन में संयम का पर्याय है। किसी भी बुरी बात को ज़ोर से बोल कर गर्व मानने वाला व्यक्ति, वास्तव में वह अपनी मूर्खता पर गर्व करता है। अज्ञानता की अधीनता का यह उसका सार्वजनिक प्रदर्षन है।

वास्तव में व्यक्ति को यह जान लेना चाहिए कि उसे किसी की भी बुराई करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। यदि आप सच्चे समाज हितचिन्तक हैं तो आप अपनी विनय से, अपने विवेक से दूसरों की बुराई दूर करने का प्रयास करें। सदा प्रयत्न करें कि आपके मन में विनय भाव हो, आपकी वाणी में विवेक हो। कठोर संयम की बात करें तो वास्तव में यह कतिपय कठोरता विचारों की ही रहती है वास्तव में आपके अंतस की विचारधारा को ही दर्शाने वाली होती है। यदि माना जाए तो, संयम वास्तव में सहज है और वाणी में सच्चाई, सत्य बोलना भी वास्तव में सहज है, जबकि असत्य से पूर्ण भाषा मन की कठोरता है, असंयम है।

भगवान महावीर ने भी कठोर भाषा अथवा कठोर सत्य की मनाही की है, वास्तव में हमारा स्वार्थ ही हमें कठोर बनाता है। कठोर संयम यदि हमारे आपस में मिलने में बाधक बनता है तो सोचिए वह हमारे लिए परमात्मा से मिलने का रास्ता कैसे खोलेगा? ऐसी कठोरता से मनुष्य का मनुष्य से मिलन कैसे संभव होगा, इसमें संशय है।

हमारी दृष्टि ऐसी होनी चाहिए कि किसी व्यक्ति के व्यवहार अथवा आचरण में व्याप्त अवगुणों में से कम से कम उसका एक गुण तो हम देख ही सकें। अतः हम प्रयास करें कि दृढ़ सम्प्रदायी की अपेक्षा हम दृढ़धर्मी बनें तो समाजहित के बारे में हम व्यापकता पूर्ण ढंग से सोच पाएंगे। जय जिनेन्द्र, जय महावीर !

बिना एकता के ज़िंदगी वीरान होती है,
अकेले रहने से हर राह सुनसान होती है।
संग अपने प्रियजनों का होना बहुत ज़रूरी है,
क्योंकि, एक-दूजे के सहारों से
हर मुश्किल आसान होती है ❖❖

अध्यक्षीय उद्गार

E-mail : rjachallani@gmail.com

भगवान महावीर के सिद्धान्तों का प्रचार करें

– आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष – जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

अहिंसा के अवतार, करुणा के सिंधु, अंतिम तीर्थंकर, शासनपति, भगवान महावीर को वन्दन ! भगवान महावीर का 2550वाँ निर्वाणोत्सव **'अहिंसा वर्ष'** के रूप में मनाया जा रहा है। विविध सम्प्रदायों एवं पंथों द्वारा कार्यक्रम समायोजित हो रहे हैं तथापि जो उत्साह होना चाहिये चतुर्विध संघ में, वह बहुत कम दिखाई दे रहा है। उसका एक कारण है, भगवान महावीर स्वामी गौण हो गये और पंथ-सम्प्रदायें अग्रणी हो गई।

भारत सरकार ने भी मात्र दो यूनिर्वर्सिटी (एक गुजरात, एक मध्य प्रदेश की) को 80 करोड़ रुपये का अनुदान देकर अपनी इतिश्री मान ली। भगवान महावीर 2600वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में भी 100 करोड़ का अनुदान दिया गया था, वह 100 करोड़ कहाँ गया? आज तक पता ही नहीं चला। इससे पूर्व दिल्ली में एक विशाल जगह भारत सरकार द्वारा प्रदान जैन समाज को प्रदान की गई, परन्तु वह जगह अभी भी बंजर हैं तथा भगवान महावीर के सिद्धान्तों को प्रचारित-प्रसारित करने में अभी तक कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा सकी।

हम भगवान महावीर का राग जरूर अलापते हैं, किन्तु सकारात्मक, ठोस बुनियादी कार्य अभी तक कुछ कर नहीं पाये। जबकि 500 करोड़ रुपये का अनुदान देकर अमेरिका की विश्वविद्यालय में वहीं के जैन बंधुओं ने **'जैन विभाग'** खुलवा दिया, जहाँ जैन धर्म का अध्ययन होगा, शोधार्थी शोध-खोज कर पायेंगे।

भगवान महावीर के 2500वें निर्वाणोत्सव पर कई आचार्यों ने विचार-विमर्श कर अनेक ग्रंथों से संकलित कर **'समणसुत्तं'** की रचना की, आज उस ग्रंथ का श्रावक-श्राविकाओं की तो बात छोड़िये, कई संत-सती तक उसका नाम नहीं जानते, स्वाध्याय या उस पर उपदेश देने की बात तो दूर की बात है। आज विदेशों में वेदों एवं आगमों पर शोध-खोज हो रही हैं, परंतु उन महापुरुषों की जन्मभूमि भारतवर्ष में ही आगमों पर कोई शोध का काम नहीं हो पा रहा है। आज गीता-बाईबिल-कुरान आदि विश्व की हर भाषा में उपलब्ध है।

जैन आचार्यों, विद्वद्जनों एवं जैन शोधार्थियों को इस बात पर विशेष ध्यान देने की महती आवश्यकता है कि जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्तों तथा भगवान महावीर के विश्व व्यापी विचारों को विश्व के जन-जन तक हम कैसे पहुँचाये?

आज यही भगवान महावीर अन्य जातियों के पूजनीय-वन्दनीय होते तथा हमारा वोट बैंक ताकतवर होता तो विशालकाय मूर्तियों की, कार्यों की एक बाढ़-सी आ गई होती। वर्तमान में भगवान महावीर का चोला पहन कर सभी धर्मगुरु अपनी-अपनी गुरु-परम्पराओं, सम्प्रदायों को ही महत्व दे रहे हैं। व्यक्तिगत संस्थाओं, समाधियों का निर्माण कर रहे हैं। अपने ही हाथों से ही अपने ही सिद्धान्तों पर कुठाराघात करते नजर आ रहे हैं। भगवान महावीर एवं उनके सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के व्यापक दृष्टिकोण को छोड़, केवल अपनी प्रसिद्धि, वाह-वाही तक ही आज के ध र्मगुरु सीमित रह गये हैं।

भगवान महावीर या अन्य तीर्थकरों के नाम से ही पूर्व में संस्थाएं निर्मित होती थी। आज सभी अपने नाम पर संस्थाओं का निर्माण चाहते हैं। आप संसार-त्यागी है या कोई मठाधीश है, समझ में ही नहीं आता। अपने आपको महत्व न देकर भगवान महावीर को महत्व प्रदान करें, उनकी जनकल्याणी एवं हितकारी वाणी का ही उपदेश दें, तभी आपका गृहत्याग सफल हो सकेगा। आप भी तिरें एवं औरों को भी तारें तभी आपकी संयम-साधना सार्थक हो सकेगी।

आज तीर्थंकरों के कल्याणकों को विस्मृत कर, केवल अपने आचार्यों, गुरुओं के जन्मोत्सव, दीक्षोत्सव, स्मृति-दिवस धूमधाम से मनाये जाते हैं, समाज भी पूरा साथ दे रहा हैं। छोटे-छोटे संत-सतियों के जन्म-दीक्षा प्रसंगों के शुभकामना-वन्दन-अभिनंदन आदि से आधुनिक मीडिया भरा पड़ा रहता है। याद रखिये, छह खंड दिग्विजित करके भी भरत चक्रवर्ती को अपना नाम तक लिखने की जगह नहीं मिल पाई तो फिर अहंकार किस बात का, ज्ञान-संयम या जप-तप-साधना का अथवा अपने अंधभक्तों का ? भगवान महावीर को केवल जानें ही नहीं उन्हें माने भी। समताभाव से विभूषित ही श्रमण होता है। जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली की सभी गतिविधियाँ सुचारू रूप से प्रारंभ है। विहार यात्राएं भी सुखदरूपेण प्रारंभ हैं। सेवा, वैय्यावृत्य आदि का लाभ लेवे। जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली की ओर से तथा मेरी ओर से आप सभी को भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर्व की अनेकशः शुभकामनाएं। जय महावीर! जय सन्मति सिंधु!! जय शासनपति! ❖❖

भगवान महावीर का जन्म कल्याणक क्यों व कैसे मनाएं?

- आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

इस सृष्टि में प्रतिदिन अनंत जीव जन्म-मरण करते हुए अपनी यात्रा में आगे बढ़ रहे हैं। प्रत्येक जीव चार गति चौरासी लाख जीव योनि में यात्रा कर रहा है, परन्तु कुछ जीव ऐसे है जिनको हम अपना आदर्श मानकर उनके गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवल व निर्वाण कल्याणक मनाते हैं। उनमें प्रभु महावीर का जीव जो चैत्र सुदि तेरस के दिन माता त्रिशला के गर्भ से देह रूप में अवतरित हुआ, उसे हम जन्म कल्याणक कहते हैं।

जन्म कल्याणक : वास्तव में कोई माता किसी जीव को जन्म नहीं देती, जीव यात्री बनकर वहाँ आता है। उदय कर्म के अधीन माता के निमित्त से देह का निर्माण होता है। वह देह त्रयोदशी के दिन गर्भ से बाहर आई उसे व्यवहार भाषा में जन्म कल्याणक कहते है। वास्तव में देह का अवतरण हुआ। प्रभु महावीर के जीव ने उस देह का उपयोग किया।

संकल्प : उस देह और जीव का भेद विज्ञान कर उन्होंने गर्भ में ही देख लिया कि माँ मेरे देह के मोह में है, उन्होंने देह से ही मोह न करने का संकल्प लेकर जीवन यात्रा को प्रारम्भ किया। उनकी देह का पालन राज घराने में हुआ, किन्तु वे बचपन से ही वैराग्य में रहे अर्थात् वे किसी के राग में फंसे ही नहीं, वे त्यागमय जीवन जीने लगे।

त्याग : हम त्याग किसे समझते है? हम वस्तुओं के त्याग को त्याग समझते है, किन्तु प्रभु महावीर ने मिथ्यात्व व मोह का त्याग किया। जड़ को जीव मानना मिथ्यात्व है, जीव को जड़ मानना संसार का कारण है। इसी कारण कषाय होते है, इसी कारण विभाव आता है, इसी कारण कर्म का बंधन होता है, इसी कारण जीव चार गति में यात्रा कर रहा है। इसी कारण जीव धर्म को नहीं समझकर अधर्म में आसक्त रहता है। पुण्य-पाप में ही लगकर कर्म बढ़ाते जाता है।

क्षायिक सम्यक्त्व : प्रभु महावीर जन्म से ही क्षायिक सम्यक्त्वी थे। अतः उन्होंने जीव को जीव मानकर, सारा समय अपने जीव को दिया। देह व देह से जुड़े संसार को गौण किया। माता-पिता, भाई, परिवार, राज्य, सत्ता उनके लिए गौण थी, उन्होंने उसे महत्व ही नहीं दिया। वे प्रतिपल-प्रतिक्षण अपने जीव के ध्यान में रहते थे। जीव के अष्ट गुणों का चिंतन करते थे एवं आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान से ऊपर उठकर वे शुक्लध्यान में रत रहते थे।

ध्यान : देह व पुद्गलों का ध्यान आर्त्तध्यान व रौद्रध्यान है। जीव का चिंतन व देह के द्वारा होने वाली धर्म की क्रियाएं धर्मध्यान है, किन्तु प्रभु महावीर अधिकांश निर्विचार, निर्विकल्प होकर अपनी आत्मा का ध्यान करते थे, जिसे हम शुक्ल ध्यान कहते है, वे इसी में लीन रहते थे। इसीलिए हम उनका जन्म कल्याणक मनाते हैं।

क्षेत्र : उन्होंने भी भरत क्षेत्र में जन्म लेकर अपने शेष मोह कर्म को क्षय कर लिया और निर्वाण को प्राप्त कर गए, यह उनका 2550वाँ निर्वाण वर्ष चल रहा है।

हम तुलना करें हमने भी इसी भारत क्षेत्र में जन्म लिया। पुण्योदय से जिनशासक रसिक बने। उनके द्वारा प्ररूपित धर्म, जैन आचार, उत्तम संस्कार भी हमें मिलें। हम अवलोकन करें, हम क्या कर रहे हैं? और प्रभु ने क्या किया?

- हम जन्म लेकर माँ के गर्भ से बाहर आते ही माँ के मोह में पड़ गये।
- देह को अपनी मानने लग गये, यही हमारी सबसे बड़ी गलती हुई।
- जो तत्त्व हमारा था नहीं, उसे हमने अपना मान लिया और परिणाम स्वरूप हमने इस असत्य में जीकर चौबीसों घंटे कर्म बंधन किया।
- मिथ्यादर्शनशल्य का सेवन कर जीवन पर्यन्त पाप-पुण्य के कर्म बंधन में लगे रहे और अपना कार्मण शरीर बढ़ाते गए।
- औदारिक शरीर की साता के लिए रात-दिन पुरुषार्थ करते रहे और कुछ धर्म की क्रियाएं करके तृप्त हो गए।

महावीर की साधना : भगवान महावीर ने इसके विपरीत गर्भ में ही जड़ और जीव का भेद कर लिया उसका दृष्टान्त शरीर के अंगों का संकुचन है, जिससे माँ मोह में

चिन्तित हो गई, उन्होंने वहाँ से ही अपने विवेक का उपयोग किया क्योंकि ज्ञान व दर्शन जीव के साथ चलता है।

- उन्होंने जड़ और जीव का भेद कर लिया, माँ का मोह देह से है जीव से नहीं।
- वे अपने जीव के ध्यान में उतर गए।
- गर्भ से बाहर आने पर भी वे अपना अधिकांश समय जीव को देते थे।
- धर्म क्रिया में नहीं है, धर्म स्वभाव में है।
- वर्धमान जन्म से ही अपने स्वभाव में रहते थे, विभाव में नहीं जाते थे।
- स्वभाव धर्म है, विभाव अधर्म है।
- अधर्म मिथ्यात्व व मोह है, उसका त्याग महावीर ने किया। उन्होंने इस जीवन में नए मिथ्यात्व व मोह का बंधन नहीं किया व पिछले जन्मों से साथ लाए कार्मण शरीर को हल्का करते-करते मोह कर्म को क्षय कर लिया।

हमारा संकल्प : हमने उनके जन्म कल्याणक पर पुरुषार्थ के साथ संकल्प करना है कि -

- मैं जीवात्मा हूँ और मुझे अपने जीवन का अधिकांश समय जीव को देना है।
- जड़ देह को पराया मानकर इसके मोह को क्षय करना है।
- जड़ और जीव के भेद विज्ञान को जीने का पुरुषार्थ करना है।
- स्वरूप के बोध को प्राप्त कर स्वरूप में ठहरने का पुरुषार्थ करना है।
- अगर हम पुण्य-पाप से ऊपर उठकर शुद्ध वीतराग धर्म को ज्ञाता-दृष्टा भाव से जीकर जीव के अष्ट गुणों को प्रकट करेंगे तो हमारा प्रभु महावीर के शासन में, भरत क्षेत्र में होते हुए भी कर्मक्षय का पुरुषार्थ होगा और उनका जन्म कल्याणक मनाना सार्थक होगा।

प्रभु महावीर के शासन का प्रत्येक तीर्थवासी, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका संकल्पपूर्वक वीतराग दर्शन में आगे बढ़ेंगें तो शेष जीवन सफल होगा। आपके जीवन की प्रत्येक श्वांस धर्ममय हो, यही प्रभु महावीर के जन्म कल्याणक पर आत्मीय शुभकामनाएँ।

❖❖

1 : जब लोग आपको "COPY" करने लगें तो समझ लेना जिंदगी में "SUCCESS" हो रहे हो।

2 : कमाओ-कमाते रहो और तब तक कमाओ, जब तक महंगी चीज सस्ती न लगने लगे।

3 : जिस व्यक्ति का लालच खत्म, उसकी तरक्की भी खत्म।

4 : जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की, उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।

5 : भीड़ हौंसला तो देती हैं, लेकिन पहचान छीन लेती है।

6 : कोई भी महान व्यक्ति अवसरों की कमीं के बारे में शिकायत नहीं करता।

7 : महानता, कभी ना गिरने में नहीं है, बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है।

8 : जिस चीज में आपका Interest हैं उसे करने का कोई टाईम फिक्स नही होता, चाहे रात के 1 ही क्यों न बजे हो।

9 : अगर आप चाहते हैं कि, कोई चीज अच्छे से हो तो उसे खुद कीजिये।

10 : सिर्फ खड़े होकर पानी देखने से आप नदी नहीं पार कर सकते।

प्रभु शासनेस महावीर

- उपाध्याय पू. श्री केवलमुनिजी म.सा.

जन्म कल्याणकः जन-कल्याण का उद्घोष- वसन्त का महीना, प्रकृति अपने संपूर्ण सौन्दर्य के साथ विकसित थी। दिशाएं स्वच्छ और निर्मल थीं। शीतल सुगन्धित पवन मन्द-मन्द गति से प्रकृति के कण-कण को आनन्दित कर रहा था। मध्य रात्रि का शान्त नीरव समय। धरती और आकाश पर चारों ओर दूधिया चांदनी छितराई हुई थी। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की शुभ तिथि। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के साथ चन्द्रमा का योग। विजय सूचक शकुन। उस पुण्य घड़ी में माता त्रिशला ने एक दिव्य शिशु को जन्म दिया।

शिशु क्या था, एक दिव्य प्रकाशपुंज था। धरती पर प्रथम चरण रखते ही क्षण भर के लिए समूचा संसार आलोक से जगमगा उठा। प्रकाश की यह दिव्य किरण देखने के लिए जैसे अंधों को भी आंखें मिल गईं। नरक की घोर तमिस्रा में प्रकाश फैल गया। नारक जीव अपनी वेदना भूल गये। कलह, संघर्ष और युद्ध बन्द हो गये। जन्म भर के भूखे प्यासे जन जैसे अमृत पीकर अपूर्व तृप्ति का अनुभव करने लगे। सर्वत्र शीतल सुगन्धित आरोग्यदायी हवाएँ बहने लगीं। असाध्य रोगी भी आरोग्य का अनुभव करने लग गये। जन्मजात वैरियों के मन में भी मैत्री की लहरें उठने लगीं। तीनों लोकों में एक अज्ञात आनन्द की हिलोरें उठ रहीं थीं, शिशु के जन्म लेते ही समूचे संसार के वातावरण में कुछ समय के लिए अद्भुत परिवर्तन आ गया।

उस समय तार-टेलीफोन आदि दूर संचार के साधन विकसित नहीं हुए थे, परन्तु प्रकृति का पर्यावरण संतुलित था। इसलिए सम्प्रेषण के अति शीघ्रगामी मानसिक एवं प्राकृतिक साधन अवश्य ही विद्यमान थे। शिशु का जन्म होते ही स्वर्ग में शक्रेन्द्र महाराज का सिंहासन कंपित हुआ। शक्रेन्द्र ने देखा- पृथ्वी पर भावी चौबीसवें तीर्थंकर का जन्म हो गया है। तुरन्त आसन से नीचे उतर कर शक्रेन्द्र ने भगवान की वन्दना की।

भगवान के जन्म का सुखद संवाद सुनकर समस्त देवलोकवासी हर्ष से नाचने लगे थे। भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक चारों निकाय के देव-देवियां, इन्द्र-इन्द्राणी झुण्ड के झुण्ड कुण्डलपुर की दिशा में चल पड़े, चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान का जन्म कल्याणक महोत्सव मनाने। सर्वप्रथम देवराज शक्रेन्द्र ने भगवान को नमस्कार किया, फिर रत्न कुक्षि धारिणी माता त्रिशला की तीन बार प्रदक्षिणा की, सभी देव-देवियां, गंधर्व, किन्नरियों ने मिलकर गीत गाये नृत्य किया, हर्षावेग से तीर्थंकर देव का जन्म कल्याण उत्सव मनाया। क्षत्रिय कुण्डलपुर के आकाश में चारों तरफ देव-देवियों के नृत्य-गीत-वीणानाद हर्ष उल्लास से भरा वातावरण देखकर दूर-दूर तक के जनपदों के नागरिक उत्सुक होकर किसी अत्यन्त सुखद संवाद की प्रतीक्षा करने लगे। कल्पसूत्र के अनुसार जिस रात्रि में बालक का जन्म हुआ, उसी रात्रि में सर्वप्रथम छप्पन दिशाकुमारियों ने सूतिका कर्म किया तथा देवताओं ने भगवान का जन्म-उत्सव मनाया। शक्रेन्द्र आदि देवताओं ने मिलकर मेरुपर्वत पर ले जाकर भगवान का जन्म अभिषेक किया, जन्म-महिमा की।

इधर प्रातःकाल का प्रथम प्रकाश फूटने के साथ ही प्रियंवदा दासी दौड़ती हुई महाराज सिद्धार्थ के पास आई-बधाई हो महाराज, बधाई हो! महारानी त्रिशला ने पुत्र रत्न को जन्म दिया है। हर्ष-उल्लास से पुलकित हो गये महाराज। हृदय में आनन्द का ज्वार उठने लगा। आंखों में हर्ष के आंसू छलक आये। महाराज ने राजचिन्ह के सिवाय शरीर पर पहने मूल्यवान आभूषण उतार कर प्रियंवदा को उपहार में दे डाले। साथ ही जीवन भर के लिए उसे दास-कर्म के बंधन से छुटकारा दे दिया। इस प्रकार भाग्यशाली पुत्र के जन्म का शुभ संवाद सुनाने वाली दासी जीवन भर के लिए दरिद्रता एवं दासता के बन्धनों से मुक्त हो गई।

अद्भुत जन्म उत्सव : सूर्य की किरणों में आज कुछ अद्भुत कान्ति थी। पवन में आज कुछ विलक्षण सुगन्ध थी। आज का सूर्योदय जैसे सब के अभ्युदय का सन्देश लेकर आया था। महाराज सिद्धार्थ ने महामात्य को बुलाकर कहा- नगर के उत्सव आयोजन अधिकारी को कहो- राजकुमार के

जन्म-उत्सव का अपूर्व आयोजन करें। महाराज की आज्ञा होते ही क्षत्रियकुण्ड नगर की गलियों, राज-पथों आदि की सफाई की गई। सुगन्धित जल छिड़का गया। स्थान-स्थान पर पुष्पमालाएं, बन्दनवारें टांगी गई। घर-घर बधाईयां बाँटी गईं। लोग खुशियों से नाचने गाने लगे। मंगल गीतों की ध्वनियों से क्षत्रियकुण्ड की चारों दिशाएं गूंजने लगीं।

महाराज सिद्धार्थ के मन में एक कल्पना उठी, महामात्य को बुलाकर कहा- 'अमात्यवर! हमारे कुल में पुत्र जन्म के उत्सव का परम्परागत आयोजन तो हमेशा होता ही है, आज भी होगा, परन्तु आज कुछ नया, कुछ विलक्षण होना चाहिए।'

महामात्य ने निवेदन किया- महाराज! आप आज्ञा दीजिए, आप जैसा चाहते है वैसा ही होगा। महाराज सिद्धार्थ ने कहा- आज बन्दीगृहों से समस्त बन्दियों को मुक्त कर दो, समस्त कर्जदारों के कर्ज माफ कर दो, जिनके पास आवश्यक सामग्री खरीदने के साधन नहीं हैं उन्हें वस्तु खरीदने के लिए धन दो, व्यापारियों से कहो, अन्न-वस्त्र आदि वस्तुएँ आधे मूल्य में दी जायें। उनका घाटा राज कोष से पूरा कर दिया जायेगा। नगर में जो वृद्ध, अपंग, दरिद्र हैं उन्हें राजकीय दानशालाओं से भोजन, वस्त्र आदि दिये जायें। रोगी तथा वृद्ध दासों को दास्य कर्म से मुक्त कर दिया जाये।

इस प्रकार समस्त नगरवासी आज दरिद्रता, दीनता, क्षुधा एवं बन्धनों की पीडा से मुक्त होकर स्वतंत्रतापूर्वक खुशियां मनाएं। राजा सिद्धार्थ का आदेश क्रियान्वित हुआ। उत्सव अलौकिक उल्लास के साथ दस दिन तक मनाया गया। लोग धन्य-धन्य कह रहे थे। आज संसार को ताप-संताप से मुक्ति दिलाने वाला कोई महापुरुष अवतरित हुआ है।

वर्धमान : त्रिकाल सत्य - जन्म के बारहवें दिन राजा सिद्धार्थ ने एक विशाल प्रीतिभोज का आयोजन किया। जिसमें अपने समस्त मित्र, स्वजन, परिजनों को आमंत्रित किया। सभी को भोजन-पान-मान से सम्मानित करके राजा सिद्धार्थ ने उनके समक्ष अपने विचार व्यक्त किये- जब से यह बालक देवी त्रिशला के गर्भ में आया है, उसी दिन से हमारे परिवार में परस्पर प्रीति, सद्भाव, सम्मान और लक्ष्मी की वृद्धि हुई है। कोषागार में धन, धान्य, मणि-सुवर्ण आदि की अभिवृद्धि हुई है। राजकोष बढ़ा है। प्रजा में आरोग्य, सुख-शान्ति, सौहार्द बढ़ा है। इस प्रकार इस पुत्र रत्न के आगमन से हमारी श्री, समृद्धि, आरोग्य, कीर्ति निरन्तर वर्धमान रही है। जिस कारण देवी त्रिशला एवं मैंने यह विचार किया है कि इस बालक का गुण संपन्न नाम 'वर्द्धमान' रखा जाय।

राजा सिद्धार्थ के प्रस्ताव का सर्वानुमति से अनुमोदन किया गया। बालक को वर्धमान नाम से पुकारा जाने लगा।

प्राचीन आचार्यों के उल्लेख के अनुसार राजा सिद्धार्थ के परिवार एवं राज्य की चतुर्मुखी अभिवृद्धि देखकर बालक का नामकरण-वर्धमान किया, यह केवल वर्तमान की अवधारणा थी। किन्तु उसकी आध्यात्मिक अभिवृद्धि का अनुमान तो तब तक कौन कर सकता था। भौतिक वृद्धि की एक सीमा है, परन्तु आत्मिक ऐश्वर्य की अभिवृद्धि तो असीम है, अनन्त है!

वर्धमान की आत्मा प्रियमित्र चक्रवर्ती के भव से ही अपनी आत्म-विभूतियों से बढ़ता रहा है, नन्दन मुनि के भव में उसने आत्म-ऐश्वर्य की असीम वृद्धि की और अब वर्धमान के जन्म में अनन्त आत्म-ऐश्वर्य का द्वार खुलने वाला है । इस प्रकार देखें तो वर्धमान नाम अतीत की अनुभूति में यथार्थ है, वर्तमान की अवधारणा में भी यथार्थ है और भविष्य की संभावना में यथार्थ होगा। वर्धमान एक त्रिकाल सत्य नाम है।

परिवार-परिचय : राजा सिद्धार्थ जिस ज्ञात कुल के अधिनायक का इक्ष्वाकुवंशीय कुल था। भगवान ऋषभदेव का गोत्र भी काश्यप था। सिद्धार्थ का गोत्र भी काश्यप था। गौरव की बात यह है कि 22 तीर्थंकर इक्ष्वाकुवंशीय काश्यप गोत्री हुए है। राजा सिद्धार्थ के दो अन्य नाम भी थे- श्रेयांस और यशस्वी। देवी त्रिशला वैशाली गणाध्यक्ष चेटक की बहन थी। 'विदेह' से पैतृक सम्बन्ध होने के कारण त्रिशला का अपर नाम विदेहदत्ता (दिन्ना) तथा प्रियकारिणी प्रसिद्ध था।

राजा सिद्धार्थ के छोटे भाई वर्धमान के पितृव्य (काका) का नाम सुपार्श्व था तथा राजा सिद्धार्थ के ज्येष्ठ पुत्र का नाम था नन्दिवर्धन। भाभी का नाम ज्येष्ठा था। वर्धमान की एक बहन भी थी सुदर्शना। सुदर्शना का विवाह किसके साथ कब हुआ इसका उल्लेख नहीं मिलता है, किन्तु सुदर्शना का पुत्र जमालि राजकुमार प्रसिद्ध है, जिसका विवाह महावीर की पुत्री प्रियदर्शना के साथ किया गया और वह भगवान महावीर के पास दीक्षित हुआ और प्रथम निन्हव भी हुआ।

आचारांग सूत्र के अनुसार वर्धमान के तीन नाम बहुत प्रसिद्ध हैं - **1.** वद्धमाणे-वर्धमान नाम माता पिता ने रखा।, **2.** समणे-स्वाभाविक सन्मति होने के कारण-समण-श्रमण।, **3.** महावीरे-महावीर नाम उनकी अप्रतिम वीरता, निर्भीकता, परीषह सहिष्णुता देखकर देवताओं ने रखा। (आचारांग २/१४; कल्पसूत्र १००)

सन्मति अत्यन्त निर्मल बुद्धि होने के कारण महावीर का नाम 'सन्मति' प्रसिद्ध हुआ। उत्तर पुराण में एक घटना है-

एक बार संजय-विजय नाम के जंघाचारण मुनियों के मन में तत्त्व विषयक कोई शंका हुई। शंका-निवारण के लिए वे बालक वर्धमान के पास आये। वर्धमान को देखते ही उनकी शंका का निवारण हो गया। चारण मुनियों ने इस ज्ञान पुंज बालक वर्धमान को 'सन्मति' नाम से सम्बोधित किया (उत्तर पुराण-७४/२८२)

ज्ञातपुत्र, वैशालिक, वीर, अतिवीर और अन्य काश्यप (काश्यप कुल के अन्तिम तीर्थंकर) आगम तथा अन्य साहित्य में इन नामों का भी उल्लेख मिलता है। भगवान महावीर के मातृकुल का परिचय वैशाली के राज परिवार के अन्तर्गत दिया जा चुका है।

अभय मूर्ति वर्धमान : बालक वर्धमान बाल्यकाल से ही अति शान्त और चिन्तनशील थे। उनकी बुद्धि अत्यन्त प्रखर और सूक्ष्मग्राहिणी थी।

वर्धमान क्षत्रिय कुमार थे। इसलिए वीरता के संस्कार तो उन्हें जन्म घुटी में मिल गये थे। किन्तु उनके भीतर पराक्रम की एक अक्षय दीप्ति थी, जो पूर्वजन्मों के संस्कारों को प्रकट कर रही थी। विश्वभूति मुनि के भव में वे अद्‌भुत बली थे और फिर त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में तो अतुल पराक्रम के धनी, देव-दानवों से भी भयभीत नहीं होने वाले वासुदेव थे। फिर प्रियमित्र चक्रवर्ती सम्राट् के रूप में पराक्रमशाली बनें तो इस जन्म में तीर्थंकर पद के अनुरूप वे संसार में सर्वोत्तम अतुल बली सिद्ध हुए।

आचार्य जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने कहा है- वासुदेव संसार में अद्‌भुत पराक्रम का धनी होता है, वासुदेव से बढ़कर चक्रवर्ती का बल होता है और चक्रवर्ती से भी अनेक गुना बल तीर्थंकर में होता है। तीर्थंकर शरीर बल में भी अद्वितीय होते हैं और आत्मबल में तो अनन्त आत्मबली हैं ही।

वर्धमान शरीर-बल एवं आत्मबल-दोनों ही दृष्टियों से अपराजेय थे किन्तु अब उनके कषाय, विकार सब शान्त हो चुके थे, इसलिए अतुल बल-पराक्रम के प्रदर्शन का कोई भी अवसर कुमार वर्धमान के सामने नहीं आया। उनकी शक्तियाँ अब अन्तर्मुखी हो चुकी थीं। इसलिए शरीर-बल का भी उनके लिए कोई महत्व नहीं रह गया था। बल एवं शक्ति का प्रदर्शन एक प्रकार का अहंकार है और महावीर ने अहंकार की धार को भी तितिक्षा में बदल दिया था।

एक बार शक्रेन्द्र ने देव सभा के बीच चर्चा करते हुए कहा- संसार में आज कुमार वर्धमान जैसा साहसी, पराक्रमी और अभयमूर्ति दूसरा कोई नहीं है। देव सभा में एक आठ वर्षीय बालक के साहस व वीरता की प्रशंसा आश्चर्य की बात थी। एक शंकालु देव ने देवेन्द्र के कथन को अतिशयोक्ति कहकर मजाक किया और कुमार वर्धमान के साहस की परीक्षा लेने के लिए धरती पर आया।

वर्धमान अनेक समवयस्क बालकों के साथ ज्ञातखंड वन में एक बार आमलकी खेल रहे थे। इस खेल में एक विशाल वृक्ष को लक्ष्य बनाकर सभी बालक वृक्ष की तरफ दौड़ते हैं। दौड़ने वालों में से जो बालक सबसे पहले वृक्ष पर चढ़कर उतर आता है, वह विजयी कहलाता है।

वर्धमान बच्चों के साथ दौड़े, सबसे पहले वृक्ष पर चढ़ गये। तभी नीचे खड़े बच्चों ने देखा एक भयंकर काला नाग वृक्ष के तने से लिपटा हुआ है, ऊपर की ओर फन फैलाकर फुंकार रहा है।

नाग की फुंकार सुनकर नीचे खड़े बच्चों को कंपकपी छूट गई। वे दूर-दूर भाग गये और दूर से ही चिल्लाने लगे- वर्धमान! सावधान ! नीचे मत उतरना, काला नाग है।

कुमार बर्धमान वृक्ष से नीचे उतर रहे थे, तने पर लिपटे काले नाग को देखा, भयाक्रान्त बच्चों की चीख-चिल्लाहट भी सुनी, ऊपर खड़े-खड़े ही उन्होंने साथी बालकों से कहा- शान्त रहो! डरो मत और ऊपर से ही सीथी छलांग लगाकर नीचे कूद आये। नाग भी फुंकारता हुआ वर्धमान पर झपटा तो कुमार ने विचित्र फुर्ती से पंजे से नाग का फन पकड़ लिया

और हाथ का एक झटका देकर रस्सी के टुकड़े की तरह खेल के मैदान से दूर फेंक दिया। सभी बालकों ने वीर वर्धमान की पीठ थपथपाई, उसे कंधों पर बिठाकर नाचने लगे।

अब दूसरा खेल प्रारंभ हुआ। इस क्रीड़ा का नाम है तिंदुषक क्रीड़ा। इस खेल में एक वृक्ष को लक्ष्य बनाकर सभी बाल खिलाड़ी दौड़ते हैं जो बालक सबसे पहले वृक्ष को छू लेता है वह विजयी होता है। विजेता बालक दूसरे बच्चों की पीठ पर सवार होकर खेल प्रारंभ होने के स्थान तक जाता है। परीक्षा लेने आया देव भी बालक बनकर बच्चों की टोली में मिल गया। खेलते-खेलते हारकर वर्धमान को अपनी पीठ पर बैठाया, कुछ दूर चला कि ताड़ जैसा विशाल रौद्र रूप बनाता हुआ आकाश में उड़ने लगा। अन्य बालक चिल्लाने लगे। भय के मारे कांपने लगे। तभी कुमार वर्धमान ने कसकर उसकी पीठ पर एक मुक्का मारा, मुक्के की मार लगते ही दैत्य के मुँह से चीख निकली, असह्य पीड़ा से वह कराह उठा। तत्काल अपना रौद्र रूप समेट कर धरती पर आ गया। वर्धमान झट से उसकी पीठ से नीचे उतरे। देखा तो दैत्य हवा में गायब हो गया।

बच्चे इधर-उधर देखने लगे, तभी एक दिव्य रूपधारी देवता बालक वर्धमान के चरणों में झुककर क्षमा मांगने लगा- कुमार आप महान् बलशाली हैं, आपकी निर्भीकता और साहस अद्वितीय हैं। मुझे क्षमा कीजिए, मैं आपकी परीक्षा लेने आया था, अस्तु। अब प्रशंसा करता हुआ जा रहा हूँ। आप अद्भुत साहसी और अभय की मूर्ति हैं।

इस प्रकार आठ वर्षीय बालक वर्धमान के साहस, सूझ-बूझ और निर्भीकता की चर्चा दूर-दूर तक फैल गई। स्वर्ग में भी उनके अद्वितीय पराक्रम की प्रशंसा होने लगी।

सूर्य को दीपक : अनेक बार देखने-सुनने में आता है, कुछ बालक बाल्यकाल में ही विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न होते हैं। संस्कृत आदि भाषाओं का अध्ययन नहीं करने पर भी वे धारा प्रवाह संस्कृत बोलते हैं। बहुत से श्लोक उन्हें कण्ठस्थ होते हैं। इस विलक्षण प्रतिभा का कारण पूर्वजन्मगत ज्ञान की निर्मलता के अतिरिक्त और क्या माना जाये?

बालक वर्धमान ने पूर्वजन्म में ज्ञान की विशिष्ट आराधना की थी। जिस कारण उनके ज्ञानावरण कर्म का विशेष क्षयोपशम हो गया था, वे गर्भ में ही मति, श्रुत अवधि ज्ञान से सम्पन्न थे। शब्द शास्त्र का संपूर्ण रहस्य उन्हें ज्ञात था। विद्या के पारगामी थे। वे जिस प्रकार पराक्रम में अद्वितीय थे, उसी प्रकार उनकी प्रतिभा भी अद्वितीय थी, किन्तु न कभी उन्होंने अपने पराक्रम का प्रदर्शन किया और न ही कभी अपने ज्ञान का चमत्कार दिखाया। शक्ति और ज्ञान को पचाना सीखा था वर्धमान ने।

बाल्यकाल की घटनाओं ने उनके अद्भुत पराक्रम, साहस और निर्भीकता को सबके सामने उजागर कर दिया, परन्तु उनकी ज्ञान-गरिमा का परिचय देने वाला कोई प्रसंग अभी तक घटित नहीं हुआ था। वर्धमान आठ वर्ष पूर्ण कर नवें वर्ष में प्रवेश कर रहे थे, तभी एक प्रसंग बना।

माता-पिता ने सोचा, वर्धमान को क्षत्रियोचित शस्त्र-विद्या और शास्त्र-विद्या दोनों का ही ज्ञान कराना चाहिए। इसलिए पाठशाला में भेजने का निश्चय किया।

शुभ मुहूर्त देखकर वर्धमान को पाठशाला में भेजा गया। वर्धमान गंभीर थे। सब कुछ जानते हुए भी माता-पिता की इच्छा का आदर करना उनका कर्त्तव्य था। पाठशाला में जाकर एक सामान्य विद्यार्थी की भांति आचार्य को सम्मानपूर्वक अभिवादन किया। ज्ञानी होते हुए भी विद्यादाता गुरु का सम्मान करके वर्धमान ने परम्परागत आदर्शों को गरिमा प्रदान की। आचार्य ने वर्णमाला का पहला पाठ वर्धमान को पढ़ाया। वर्धमान चुपचाप सुनते रहे। कुछ समय बाद आचार्य ने वर्धमान को बुलाकर पूछा- कुमार! तुम चुपचाप बैठे हो, पाठ याद नहीं करते? कुमार ने सम्पूर्ण वर्णमाला सुना दी, आचार्य चकित होकर देखते रह गये।

कुछ क्षण तक अवाक् से वे कुमार वर्धमान को घूरते रहे, उस बालक की विलक्षण प्रतिभा का ओर-छोर ढूंढने का प्रयास कर रहे थे कि तभी एक तिलकधारी वृद्ध ब्राह्मण ने पाठशाला में प्रवेश किया। उसकी तेजस्वी मुखमुद्रा देखकर आचार्य ने आगत विद्वान् का सम्मान किया, अपना आसन देकर बैठने को कहा, विद्वान् ब्राह्मण ने कहा- नहीं! मैं अपनी जिज्ञासा लेकर आया हूँ, जिज्ञासु तो गुरु के समक्ष खड़ा ही रहता है न? मेरे कुछ प्रश्न हैं? कृपा कर इनका समाधान कीजिए। आगत ब्राह्मण ने व्याकरण के कुछ जटिल प्रश्न

आचार्य से पूछे। आचार्य उत्तर नहीं दे सके। वे मौन होकर भूमि की ओर देखने लग गये। ब्राह्मण मुस्कराकर बोला आचार्य ! आप जाने दीजिए। आपका यह शैक्ष (नया विद्यार्थी) शायद मेरी शंकाओं का सही समाधान कर सकेगा। आप आज्ञा दें, तो मैं इन से पूछ लूं।

आचार्य कभी बालक वर्धमान की तरफ देखते, कभी समागत विद्वान् ब्राह्मण की मुखमुद्रा पढ़ते। जिन प्रश्नों का उत्तर मैं नहीं दे सका, क्या यह नया विद्यार्थी इन प्रश्नों का उत्तर दे पायेगा? मेरा कैसा मजाक हो रहा है?

वृद्ध ब्राह्मण ने कहा - आचार्य ! आप लज्जित न हों, न संकोच करें। आप आज्ञा दे, मुझे विश्वास है यह बालक अवश्य मेरी शंकाओं का समाधान दे सकेगा।

आचार्य ने बालक वर्धमान की तरफ देखकर कहा-ठीक है, आप कुमार से पूछिए। वृद्ध ब्राह्मण ने बाल वर्धमान से व्याकरण के जटिल सूत्र, अक्षरों के पर्याय, उनके विकल्प आदि पूछे, तो बालक वर्धमान ने निःसंकोच धारा प्रवाह उन सबके सटीक उत्तर दिये। आचार्य तो दांतों तले अंगुली दबाकर दिग्मूढ़ से देखते रह गये एक आठ वर्षीय बालक की अलौकिक प्रतिभा। अस्खलित ज्ञान और उनका धारा प्रवाह उत्तर और ये वृद्ध ब्राह्मण कौन हैं? कोई ब्रह्मर्षि जान पड़ते हैं? मेरी पाठशाला में, मेरे छात्रों के समक्ष मेरी परीक्षा लेकर मुझे पराजित करने को क्यों आये हैं? अनेक कूट प्रश्न आचार्य के मन को कचोटने लगे।

तभी वृद्ध ब्राह्मण मुस्कराये, आचार्य ! आप स्वयं को अपमानित अनुभव मत कीजिए। आपको पता है राजकुमार वर्धमान के रूप में इस युग का ज्ञान-सूर्य आपके समक्ष उपस्थित है। हम इस बिम्ब में अनन्त प्रकाशयुक्त सूर्य का दर्शन नहीं कर पाते, हमारी अक्षमता है, कुमार के सहज असीम ज्ञान का पार पा लेना, किसी के लिए भी संभव नहीं है। आप पराजित नहीं, गौरवान्वित है। कुमार वर्धमान जैसा शैक्ष प्राप्त कर।

आचार्य गद्गद् हो उठे, तुरन्त आसन से नीचे उतर कर उन्होंने कुमार वर्धमान को नमस्कार किया 'धन्य है कुमार ! ज्ञान-सूर्य होकर भी टिमटिमाते तारों के समक्ष स्वयं को आच्छादित करते रहे। आपको कौन क्या पढ़ा सकेगा? सब कुछ जानते हुए भी आपने मुझ अज्ञ को क्यों नहीं बताया, कुमार ! अलौकिक है आपकी महिमा !' आचार्य ने मुड़कर देखा, तो वृद्ध ब्राह्मण के स्थान पर देवराज इन्द्र स्वयं भाव विभोर होकर कुमार वर्धमान को प्रणाम कर रहे थे। कुमार वर्धमान फिर भी शान्त और निर्विकल्प से खड़े रहे।

पाठशाला की घटना हवा के परों से चारों तरफ उड़ गई। महाराज सिद्धार्थ और समस्त राज परिवार को पता चल गया- कुमार वर्धमान की अलौकिक ज्ञान-शक्ति का। जो स्वयं सूर्य है, उसको कौन विद्यादान का दीपक दिखाने का हास्यास्पद प्रयास करेगा? राजकुमार वर्धमान पाठशाला से लौट आये।

कहा जाता है- देवराज ने अपने प्रश्नों और वर्धमान द्वारा प्रदत्त उत्तरों को संकलित कर एक ग्रंथ बनाया 'ऐन्द्र व्याकरण'।

वर्धमान का सर्वतोभद्र व्यक्तित्व : राजकुमार वर्धमान का जीवन निवृत्ति की ओर उन्मुख जीवन था। उनके जीवन की कुछ ही घटनाएँ इतिहास के पृष्ठों पर अंकित हुई है। यद्यपि तीस वर्ष के जीवन में अनेक घटनाएँ, प्रसंग आये होंगे जिनसे वर्धमान के शौर्य, साहस, सेवाभाव, मातृभक्ति, करुणाशीलता, सत्योन्मुखता, प्रतिभा, मेघाशक्ति, स्वतंत्रता प्रेम, जीवन दया आदि के जीवन्त रूप प्रकट होते रहे होंगे परन्तु वे लिखित रूप में प्राप्त नहीं होने में उन पर कुछ लिखना उचित नहीं होगा।

बीजरूप में आगम वाक्यों में महावीर के बाह्य एवं आन्तर व्यक्तित्व का जो कुछ शब्द चित्र मिलता है उन सब चित्रकोण को जोड़ने से महावीर का एक सर्वतोभद्र व्यक्तित्व हमारे सामने उपस्थित होता है।

भगवती सूत्र शतक १ सूत्र १४ के अनुसार वर्धमान का शरीर सात हाथ ऊँचा, अत्यन्त सुदर्शन था। तपे हुए सोने के समान तथा प्रज्वलित निर्धूम अग्नि की लौ की भाँति उनके शरीर की कांति थी, गौर वर्ण था। उनकी आँखें विकसित नील कमल के समान विशाल व सदा प्रफुल्लित रहती थीं। दोनों भुजाएँ दीर्घ, सुदृढ़ और मांसल थीं। उनका शरीर अत्यन्त सुगठित और दर्शनीय था, उनके जैसा सुन्दर रूप संसार में दूसरा नहीं था। वे बिना अलंकारों के ही अत्यधिक

आकर्षक लगते थे। वे अत्यन्त पराक्रमी और साहसी होते हुए भी बहुत सौम्य और शान्त थे। उनके दर्शन मात्र से मन में प्रियता, भव्यता और समता के संस्कार जागृत होते थे। उनके श्वास में कमल जैसी सुगंध फूटती थी। उनकी वाणी अतीव गंभीर, सुस्पष्ट कर्णप्रिय और ओजस्वी थी।

वर्धमान बाल्यकाल से ही निर्भीक और साहसी थे। ये स्वतन्त्रता प्रिय अवश्य थे, परन्तु उपद्रव करने वाली आसुरी शक्तियों का दमन करने में भी पीछे नहीं हटे। अतिशय ज्ञानी होते हुए भी विनम्र वृत्ति के थे। गुरुजन एवं माता-पिता का सम्मान करते थे।

वर्धमान प्रकृति से चिन्तनशील और मितभाषी थे। उनका हृदय बहुत ही कोमल और संवेदनशील था। किसी को दुःखी, आपद्ग्रस्त और दासता के बन्धन में देखकर वे द्रवित हो उठते थे। नारी को माता के रूप में पूज्य और सम्माननीय मानते थे। नारी जाति की अवमानना, प्रताड़ना और दुर्दशा देखकर वे कभी-कभी बहुत चिंतित हो उठते थे। पशु-पक्षियों के प्रति उनके मन में गहरी करुणा और आत्मीयता थी। यज्ञ मंडपों में होती पशुबलि की घटनाएँ सुनकर वे तड़फ उठते थे। मनुष्यों को दास बनाना, उनसे अति श्रम लेना, पशुओं पर अति भार लादना, उनको पीड़ा देना यह सब देखकर राजकुमार वर्धमान विचलित हो जाते और इन सब हृदयद्रावी प्रथाओं को समाप्त करने के लिए दूरगामी योजनाओं पर गंभीर होकर सोचते रहते। यही कारण था कि अपार राजसी वैभव और समस्त सुख-सुविधाएँ प्राप्त होने पर भी वर्धमान को इनमें कभी सुख और आनन्द का अनुभव नहीं हुआ। क्योंकि उनका अन्तःकरण जीव मात्र की पीड़ा का संवेदन कर उस पीड़ा मुक्ति के लिए प्रयत्नशील रहता था।

परिवार के सदस्यों के अलावा, अपने सेवकों, परिचारकों और कर्मकरों के प्रति वर्धमान का जीवन व्यवहार बहुत ही स्नेहिल तथा कोमलता पूर्ण था। वर्धमान माता-पिता के परम भक्त थे। माता का हृदय दुःखी न हो, इसके लिए उन्होंने दो बार अपनी भावनाओं को दबाकर माता का मन रखा। अपने ज्येष्ठ भ्राता का भी बहुत सम्मान करते थे। भाई के प्रेमाग्रह का आदर कर दो वर्ष तक वे न चाहते हुए भी गृहस्थ जीवन में टिके रहे। वर्धमान का समग्र जीवन व्यवहार बहुत ही सरल, स्वाभाविक और विनम्र था। वे मधुरभाषी थे। किन्तु सरलता के साथ दक्षता, मधुर भाषण के समय सत्य-भाषण का सामंजस्य रखकर वे अपने लक्ष्य के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहते थे। इसलिए उनके लिए दक्खे (दक्ष) दक्खपइण्णे, (दृढ़ प्रतिज्ञ) भद्दए (भद्र, सरल) विणीये (विनम्न) आदि अनेक विशेषण प्रचलित हुए।

वर्धमान की ज्ञान-चेतना अत्यधिक विकसित थी। अपने युग के सर्वोत्कृष्ट प्रतिभा सम्पन्न पुरुष थे। सत्य की गंभीर गवेषणा तथा सत्य को मधुरता के साथ प्रकट करने की कला में वे निपुण थे। आर्य सुधर्मा ने उनके व्यक्तित्व के विशेष घटक गुणों की चर्चा करते हुए कहा है- वे तीव्र मेधावी थे, आसुपन्ने-आशुप्रज्ञ तुरंत स्फुरणशील प्रज्ञा वाले और दीहपन्ने दीर्घदर्शी-दूरदर्शी थे। इस प्रकार सर्वतोभद्र व्यक्तित्व था- वर्धमान का। ❖❖

जिंदगी एक रंगमंच है !

जिंदगी एक रंगमंच है और हम लोग इस रंगमंच के कलाकार। सभी लोग जीवन को अपने-अपने नजरिये से देखते है। अपनी जिन्दगी के उद्देश्य को जान लेना आसान है, कठिन तो यह है कि उसे हर रोज अपने साथ रखना और खुद पर काम करना ताकि एक दिन आप खुद वो उद्देश्य बन जायें। इस तरह हम कह सकते है कि मनुष्य का जीवन एक प्रकार की यात्रा है और इस यात्रा में कदम-कदम पर हमें बहुत तरह की परिस्थिति का सामना करना परता है और खुद को संभालना पड़ता है जिन्दगी से संबंधित कुछ प्रेरक बातें जो किसी महान लोगों के द्वारा कही गयी हो उसे पढ़ के और समझ के।

कभी-कभी अपनी जिंदगी में किसी परिस्थिति में हमें खुद को संभालने की जरूरत पड़ती है और उस वक्त हम कुछ ऐसे शब्द या किसी के द्वारा कही गयी प्रेरणात्मक वाक्य का सहारा लेते हैं, जिसे हम छोटे शब्द में Life Quotes कह सकते है। ❖❖

(गतांक से आगे ...)

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

जैन श्रमण संघ अतीत से आज तक

- उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रमण संघ और स्थानकवासी परम्परा : स्थानकवासी जैन समाज जो सदा ही क्रियागत क्रान्तिकारी समाज रहा है, इसका जन्म ही सत्य अन्वेषणा और धर्म के विशुद्ध व निराडम्बर आचरण को लेकर हुआ है। इस सम्प्रदाय के मूल में तप-त्याग संयम और विशुद्ध आचरण प्रमुख रहा है। धर्मप्राण वीर लोकाशाह की क्रान्तिकारी उद्घोषणा के पश्चात् पूज्य श्री जीवराजजी म.सा., आचार्य श्री लवजीऋषि जी म.सा., आचार्य श्री हरिदासजी म.सा. आदि पाँच महापुरुषों ने अपने संघ का क्रियोद्धार कर विशुद्ध धर्म का रूप जन-मानस के सामने प्रस्तुत किया। उसके पश्चात् विकसित होकर इन्हीं पाँच आचार्यों की परम्परा ही कालक्रम से 22 सम्प्रदाय के रूप में विश्रुत हुई।

प्रथम स्थानकवासी जैन सम्मेलन : संवत् 1810 वैशाख शुक्ला 5 मंगलवार को पंचेवर गांव में आचार्य प्रवर श्री अमरसिंहजी के नेतृत्व में एक संत सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन में कानजी ऋषि संप्रदाय के आचार्य श्री ताराचंद जी म., श्री जीवाजी म., श्री तिलोकचंदजी म. एवं आचार्य श्री हरिदासजी म. के अनुयायी श्री मलूकचंदजी म., आचार्य फूलाजी म., आचार्य श्री परशरामजी म. के आज्ञानुवर्ती खेतसिंहजी म., खींवसिंहजी म. तथा आचार्य श्री केशरजी म. आदि संत-सतीवृन्द पंचेश्वर ग्राम में एकत्रित हुए और परस्पर उल्लास के क्षणों में मिले। एक दूसरे से परस्पर वंदना व्यवहार संबंध प्रारम्भ किया तथा स्थानकवासी श्रमण संघ की उन्नति के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पारित किए गए। **स्थानकवासी परंपरा की दृष्टि से यह प्रथम स्वतंत्र संघीय सम्मेलन था। इस सम्मेलन में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पारित हुए।**

स्थानकवासी संप्रदाय जब धीरे-धीरे अनेकों उपसंप्रदायों में विभक्त हो गया था। तब परस्पर एक दूसरे की आलोचना प्रारंभ हुई। परस्पर संवाद का अभाव होने से संघर्ष की स्थिति समुत्पन्न होने लगी। यातायात के साधन बढ़ जाने से सड़कें और पुल हो जाने से साधु-साध्वियों का विचरण क्षेत्र विस्तृत होने लगा। आचार और विचार के तनिक भेद पर **'हम श्रेष्ठ हैं, और वे कनिष्ठ हैं'**- इस प्रकार की विचारधारा के कारण विभक्त श्रमण एक स्थान पर ठहरने से कतराने लगे, प्रवचन आदि भी पृथक् करने लगे।

जब समाज की यह स्थिति मूर्धन्य मनीषी संतों ने तथा कर्मठ कार्यकर्ता सुश्रावकों ने देखी तो उनका हृदय द्रवित हुआ। उन्होंने यह प्रार्थना की कि यह स्थिति स्थानकवासी संघ के लिए हितावह नहीं है। आप सभी मताग्रह और सांप्रदायिक भावना छोड़कर एक बनें। पारस्परिक द्वेष, मनोमालिन्य, कटुता, ये तत्व क्षोभ बढ़ाने वाले हैं। सांप्रदायिकता के नाम पर जो विषम स्थिति समुत्पन्न हुई है, इस स्थिति को हमें मिटाना होगा। स्थानकवासी समाज में बढ़ती हुई विघटनकारी प्रवृत्ति को समाप्त करने के लिए महान् तत्त्व चिन्तक स्व. वाड़ीलाल मोतीलाल शाह ने अपने ओजस्वी व तेजस्वी भाषणों से और पत्रिका में लिखे लेखों से जनमानस में एक लहर पैदा की, फिर भी कुछ संप्रदायवाद के रंग में रंगे हुए व्यक्तियों ने उधर ध्यान नहीं दिया। तब स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रमुख व्यक्ति अहर्निश इस प्रयास में संलग्न रहे, उनके सामूहिक प्रयत्नों के फलस्वरूप समाज में एक अभिनव चेतना की लहर व्याप्त हुई।

मौरवी संकल्पों के सन्दर्भ में सन् 1930 में भारतवर्ष में धर्मवीर सुश्रावक दुलर्भजी भाई जौहरी ने मन में यह निश्चय किया कि हमें पुरजोर यह प्रयास करना है और वृहत् साधु-सम्मेलन कर सभी संतों को एक मंच पर एकत्रित कर स्थानकवासी समाज का कायाकल्प करना है। वे शिष्टमंडल लेकर स्थानकवासी समाज के प्रमुख संतों और आचार्यों की सेवा में पहुंचे और प्रभावशाली संतों की एक समिति **'साधु-सम्मेलन समिति'** के नाम से गठित की गई। यह निश्चय किया गया कि वृहत साधु-सम्मेलन के पूर्व प्रान्तीय सम्मेलन किए जाएं जिससे कि वृहत् साधु-सम्मेलन पूर्ण सफल हो सकें। इस सन्दर्भ में प्रथम मरुधर प्रान्तीय सम्मेलन 10 मार्च 1932 वि.सं. 1988 फाल्गुन सुदी 3 को पाली में

प्रारंभ हुआ। संघ ऐक्य की भावना से इस प्रान्तीय सम्मेलन में मरुधर प्रान्त में विचरने वाले 5 संप्रदायों के प्रमुख संत इस सम्मेलन में पधारे। इन्हीं दिनों में, एक ओर तो पूज्यश्री सोहनलालजी म.सा. की रोग परिचर्या की जा रही थी और दूसरी ओर उनका बनाया हुआ नया जैन पंचांग मुनियों की चर्चा का विषय बना हुआ था। पूज्यश्री का आगमाभ्यास गंभीर तथा तलस्पर्शी था। जैन ज्योतिष के तो आप प्रकाण्ड पंडित थे। सूर्य प्रज्ञप्ति-चन्दप्रज्ञप्ति आदि सूत्रों के रहस्य भी आप के लिए हस्तामलकवत् थे।

पूज्य सोहनलालजी महाराज ने अपनी युवाचार्य अवस्था में पूज्य आचार्य श्री मोतीरामजी महाराज तथा मुनि संघ की इच्छानुसार नवीन जैन तिथिपत्र के कार्य को अपने हाथ में लिया था। उन्होंने आगम ग्रन्थों, सूर्य प्रज्ञप्ति तथा चन्द्रप्रज्ञप्ति आदि ग्रन्थों का गंभीर अध्ययन करने के पश्चात् एक नवीन जैन पंचांग की रचना भी कर दी थी। किन्तु जैन पंचांग बन जाने पर भी आपने उसको कार्यरूप में परिणत करने के लिए कोई आज्ञा संवत् 1972 तक भी प्रचारित नहीं की थी, लेकिन कुछ समय पश्चात् तत्कालीन उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज इस सम्बन्ध में पूज्यश्री के साथ विचार-विनिमय करने के लिए अमृतसर पधारे। आपने पूज्यश्री को वन्दना करके उनसे निवेदन किया- 'गुरुदेव! आपने जैन आगमों के सूक्ष्म तत्त्वों का गहन पारायण करके जैन पंचांग का निर्माण किया है, किन्तु सारा संघ अभी तक प्राचीन सनातनधर्मी शैली से बने हुए पंचांगों के अनुसार ही अपने चातुर्मास आदि मना रहा है, जो संभवतः उचित नहीं है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप आचार्य के अपने बनाये हुए जैन तिथि पत्र को प्रचारित करने की आज्ञा संघ को दें।' इस पर पूज्य महाराज ने उत्तर दिया - 'आत्मारामजी! आपका कहना यथार्थ है, किन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उसको प्रचारित करने की आज्ञा देने से पूर्व मुझे इस संबंध में संघ की सम्मति भी जानने का यत्न करना चाहिए।' पूज्य महाराज के यह शब्द सुनकर उपाध्याय जी बोले- 'मेरी तुच्छ सम्मति में तो इस विषय में आचार्य तथा उपाध्याय की सम्मति ही पर्याप्त है। प्राचीन काल में यही व्यवस्था थी। मैं इस पर पूर्णतया सहमत हूँ। अतएव आप इस संबंध में संघ को आज्ञा प्रचारित कर दें।'

इस पर पूज्य महाराज ने संघ में इस बात की आज्ञा प्रचारित कर दी कि भविष्य में सभी चातुर्मास नवीन जैन तिथि पत्र के अनुसार ही मनाएं जावें। पूज्यश्री की इस आज्ञा का मुनि संघ ने बहुत स्वागत किया। अतएव पंजाब के प्रायः मुनियों ने पूज्यश्री द्वारा बनाए गए नवीन जैन पत्र के अनुसार ही चातुर्मास मनाये, किन्तु मुनि श्री लालचंदजी महाराज, महाआर्या श्री पार्वतीजी महाराज तथा मुनि श्री छोटेलालजी महाराज के साधुओं ने इस नवीन जैन तिथि-पत्र को न माना और उन्होंने अपने-अपने चातुर्मास पुरानी शैली से ही किये। गणी श्री उदयचंदजी ने भी अपना चातुर्मास पूज्यश्री के नवीन जैन तिथिपत्र के अनुसार ही किया। संवत् 1973 के इस चातुर्मास के पश्चात् युवाचार्य श्री कांशीरामजी महाराज, गणावच्छेदक मुनि श्री छोटेलालजी महाराज, मुनि जड़ावचन्दजी महाराज तथा मुनि हीरालालजी महाराज रोहतक में एकत्रित हुए। वहाँ उन्होंने पारस्परिक परामर्श करके यह निर्णय किया कि- 'जब हम लोग घग्घर नदी से पंजाब की ओर जाएंगे तो अपने-अपने चातुर्मास जैन तिथि-पत्र के अनुसार किया करेंगे, किन्तु जब जब हम घग्घर नदी के दूसरी ओर जाया करेंगे तो अपने चातुर्मास पुरानी परिपाटी पर ही किया करेंगे। क्योंकि उधर पुराने विचार रखने वालों की संख्या अधिक है।'

इस प्रकार समाज में पत्री-परम्परा का एक भारी संघर्ष खड़ा हो जाने पर जालंधर में मुनियों का एक सम्मेलन किया गया। इस सम्मेलन में आर्या पार्वतीजी महाराज तथा गणी उदयचन्दजी महाराज का जैन तिथि पत्र के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ हुआ। इस शास्त्रार्थ में अंतिम रूप से यह निश्चय किया गया कि - 'सभी जैन मुनि अपना-अपना चातुर्मास केवल चार महीने का ही करें। क्योंकि एक तो जैन शास्त्रों के अनुसार चातुर्मास लौंद महीनों में नहीं हो सकता और दूसरे जैन मुनियों का चातुर्मास चार मास से अधिक का भी नहीं होता।' किन्तु कुछ मुनियों तथा आचार्यों ने इस निर्णय को भी न माना और पत्री तथा परम्परा इन दोनों दलों में कोई भी सामंजस्य अन्तिम रूप से न हो सका। **मरुधरा के मुनि श्री मिश्रीमलजी 'मरुधर केसरी' महाराज ने तो इसी भावना के वशवर्ती होकर जैन तिथि-पत्र के विरूद्ध सत्याग्रह भी किया, किन्तु उसमें उनको तत्काल सफलता नहीं मिली।**

(... क्रमशः)

भगवान महावीर की दृष्टि में सर्वोदय

- ज्ञान दिवाकर, राष्ट्रसंत, प्रवर्तक पू. श्री गणेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'

विनोबा भावे का आंदोलन सर्वोदय, जाना-पहचाना आंदोलन था। उनके भूदान यज्ञ में अधिक भूमि वालों से धरती का दान मांगकर भूमिहीनों को भूमि दी गई। इससे निर्धन और खेतिहर मजदूरों को कुछ राहत तो मिली, पर यह सर्वोदय एक शब्द में सिमट कर रह गया। इससे हजारों वर्ष पूर्व महावीर ने हमको, आपको और सबको सर्वोत्कृष्ट की दृष्टि दी। तब समाज में मिथ्यात्व और अज्ञान का अंधकार था। मानों महावीर के सूर्य का उदय हुआ और हर घर, हर हृदय का अंधकार दूर हुआ था।

महावीर की दृष्टि में सर्वोदय : उस युग में अधर्म ही धर्म था। संस्कृति का ध्यान विकृति ने ले लिया था। नारी का सम्मान नहीं था, अपितु उसका घोर असम्मान था। उसे भेड़-बकरी की तरह बेचा और खरीदा जाता था। चम्पा की राजकुमारी पहले एक वेश्या को बेची गई, फिर उसे एक श्रेष्ठी धनवाह ने वेश्या से खरीद लिया। श्रेष्ठी की पत्नी मूला ने उसके पैरों में बेड़ी डालीं और तलघर में बंद कर दिया।

महावीर ने छह महीने तक आहार का त्याग समाज की दृष्टि देने के लिए किया, सबकी आंखें खुली। राजा शतानीक और रानी मृगावती की आंखें खुलीं। समाज त्राहि-त्राहि कर उठा। वह राजकुमारी चंदना कहलाई। उसकी बेड़ियां तो कटी, पर महावीर ने उसे एक समर्थ साधन धर्म का दिया, जिससे वह कर्म के बंधनों को काट सकी। वह जन्म-मरण से मुक्त होकर नारी जगत् को एक दिशा दे गई। नारी जागरण का जैसा बिगुल महावीर ने बजाया, कदाचित् किसी और ने नहीं बजाया हो। उनके युग में सभी को मुक्त होने का अधिकार नहीं था। यज्ञों में बलि देने को धर्म माना जाता था। कैसा भयावह वातावरण था। महावीर के युग में। चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा था। मानों लोग दृष्टिहीन थे। राजा प्रज्ञा को उचित अनुकरण नहीं दे पा रहे थे। राजा-प्रजा दोनों की आंखों के सामने मोह और मिथ्यात्व का मोटा परदा था। परदे के पार देखने की सामर्थ्य किसी में नहीं थी। परदे को हटाए बिना एक का भी उदय सम्भव नहीं था, फिर सर्वोदय की बात तो बहुत दूर थी। कल्पना करो कि आपके सामने एक परदा है। उसमें एक छोटा-सा छेद कर दिया जाता है। उस छेद में से आप परदे के बाहर थोड़ा-सा देख सकते हैं। फिर छिद्र कुछ बड़ा होता है तो सामने का दृश्य भी कुछ अधिक फैलकर दिखेगा। जब यह छेद पूरे परदे में व्यापक हो जाता है, तब आप कुछ स्पष्ट देख सकते हैं। यहां तुममें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। तुम जो थे, जैसे थे, वहीं रहे, वैसे ही रहे। ज्यों-ज्यों छिद्र का क्रमिक विकास होता रहा, उसके साथ ही क्रमशः तुम्हारी अभिव्यक्ति भी बढ़ती रही।

आत्मा के संबंध में भी यही बात है। तुम पहले से ही मुक्त स्वभाव और पूर्ण हो। तुम्हें प्रयत्न करके पूर्णत्व को मिलाना नहीं है। वह तो मिला हुआ है, केवल परदे के छिद्र को व्यापक करना है।

महावीर की उदय दृष्टि : महावीर ने यही किया। उन्होंने सर्वज्ञता प्राप्त की, सर्वदर्शी और सर्वसमर्थ बने। वे केवली बने। उनके सामने कोई परदा नहीं था। अब उन्होंने सबके सामने लगे परदे में छिद्र किया और उसे क्रमशः बड़ा करते गए। इससे उनकी सर्वोदयी दृष्टि का विस्तार होता गया। उन्होंने जीव-मात्र का कल्याण सोचा। उनकी दृष्टि मनुष्यों के कल्याण से भी ऊपर थी। उनका 'सर्व' मनुष्य नहीं था, पशु-पक्षी, तिर्यंच, नारकी, देव-सभी उनकी उदय दृष्टि में थे।

भगवान महावीर ने अपने जो चार धर्मतीर्थ बनाए। उनमें उन्होंने कोई भेदभाव नहीं रखा। वहाँ हरेक जा सकता था। स्त्रियों के लिए उन्होंने श्रमणी और श्राविका - दो तीर्थ बनाए। चोर-डाकू, दुराचारी, चाण्डाल, वधिक, दास, दासी आदि सभी के लिए आत्मोद्धार के द्वार उन्होंने खोले। उनका धर्म ऊँचे आकाश का मेघों से रहित सूर्य था, जिसकी किरणें सभी पर समान भाव से पड़ती थीं। पवित्र-अपवित्र सभी का स्पर्श सूर्य करता है। वह अपावनों की अपावनता सोखकर भी स्वयं अपावन नहीं होता, क्योंकि सूर्य समर्थ है -

भानु कृसानु सर्व रस खाहीं।
तन्ह कहँ मन्त कहत कोउ नाहीं।

सूर्य और अग्नि सभी रसों को सोखते हैं - नष्ट कर डालते हैं, पर इनको कोई मंद-निकृष्ट नहीं करता। महावीर के धर्म की भी यही गति थी। वह समर्थ था और समर्थ है। सभी के उद्धार की सामर्थ्य महावीर के धर्म में थी और है। महावीर ने सबको यह दृष्टि दी कि तुम किसी के आश्रित या मोहताज नहीं हो। तुम स्वयं ही अपना उद्धार करोगे। तुम्हारा कल्याण कोई दूसरा नहीं कर सकता। हाथी को हाथी ही दलदल से निकाल सकता है। मूषक और कुत्ते तथा आदमी हाथी को नहीं खींच सकते। जो आत्मा स्वयं तिर चुकी है, वही दूसरी आत्मा को भी तिरा सकती है।

हाथी का दृष्टान्त : हाथी का दृष्टांत यों है। एक हाथी दलदल में फंस गया। वह निकल नहीं पा रहा था। मूषकों ने उसे दलदल में फंसा देखा तो एक मोटा रस्सा उसके पैरों में बांध दिया। उसे खींचा, पर भला वे एक हाथी को कैसे खींच पाते। फिर वे एक कुत्ते को ले जाए। कुत्ता भी असमर्थ रहा। कुत्ता एक मनुष्य को ले आया। हाथी को खींचने की शक्ति मनुष्य में भी नहीं थी। मनुष्य एक दूसरा हाथी ले आया। रस्से का दूसरा छोर हाथी के पैर से बांधा और उसे भगाया तो उसने बल लगाकर दलदल में फंसे हाथी को बाहर निकालकर किनारे पर ला दिया। हाथी को हाथी की निकाल सकता था, सो उसने निकाला।

अहिंसा का समर्थ आलोक : महावीर ने श्रमण संघ के संतों को यह सामर्थ्य दी कि वे दूसरे मुमुक्षुओं को तार सकें। इस तरह महावीर की दृष्टि चराचर जगत् के उद्धार की सर्वोदयी दृष्टि थी। वे सर्वोदय के प्रतीक थे। उनका सर्वोदय आज भी प्रशस्त है। आज के भोग संस्कृति वाले युग में महावीर की दृष्टि अहिंसा के समर्थ आलोक से सुख-शांति का मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ है। ❖❖

साधु-संतों के आगमोक्त विचारों का प्रसार हो
न कि गूगल वाले सद्विचारों का

आजकल सोशल मीडिया व्हाट्सएप्प, फेसबुक, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम पर साधु-संतों के नाम से सद्विचारों की भरमार हो रही है। कई जगह तो एक संत के नाम से दो-तीन सद्विचारो के संदेश प्रसारित होते हैं। अनेक जगहों पर साधु-संत व प्रेषक दोनो की फोटो भी रहती है, लेकिन इनमें से अधिकांश सद्विचार इधर-उधर से कॉपी करके पेस्ट किए होते हैं या गूगल से सर्च करके बनाए जा रहे हैं। कई जगह पर इमेज बनाने वालों ने इसका मासिक ठेका दे रखा है, जिसका उन्हें प्रतिदिन प्रचार करना है। जबकि प्रस्तुत विषय की जगह गुरु भंगवतों के साहित्य, प्रवचन आदि विवरण के साथ पोस्ट को व्यवस्थित रूप से प्रसारित होना चाहिए। एक विद्वान का एक दिन में एक विचार से अधिक प्रेषित नहीं होना चाहिए। जैन आगम मौलिक इतिहास तत्व साहित्य का सार ही जैन साधु-संतों के सद्विचारो में होना चाहिए तभी जैन धर्म जन धर्म बनेगा ।

- निवेदक -
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
नई दिल्ली

जीवन की सरलता में ही धर्म ठहर पाता है

- उप-प्रवर्तक पू. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'गुणाकार'

तीर्थंकरों की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य संत करते हैं। जो बिना किसी स्वार्थ के धर्म बोध देते हैं, वे ही सही अर्थों में बड़े परमार्थी व जन हितैषी कहे गए हैं। वे भाग्यशाली आत्माएँ होती है जो कि संत वाणी सुनकर अपना जीवन बदल पाते हैं, परन्तु जीवन में जब तक सरलता नहीं आ पाएगी तब तक धर्म आत्मा में ठहर नहीं पाएगा। इसीलिए सरल व सहज जीवन जीने को धर्ममय जीवन कहा गया है। मनुष्य जीवन का लक्ष्य वासना नहीं, संयम तप साधना है। भोग नहीं, त्याग है। विलासिता के नहीं, विराग के सोपान चढ़ना है। वासना मनुष्य को पशु से भी बदत्तर बना देती है। संयम तप साधना मनुष्य को नर से नारायण, पशु से परमेश्वर बना देती है। वासना मृत्यु है, जहर है, रोग है, नर्क है, दुःख है, पीड़ा है, जबकि संयम तप साधना जीवन है, अमृत है, स्वस्थ है, स्वर्ग है, सुख है, आनंद है। भोग जीवन को क्षीण करते हैं। इन्द्रिय सुख तलवार की धार पर लगे उस शहद को चाटने के समान है, जिसके चाटने पर प्रारंभ में तो कुछ सुखानुभव होता है, किन्तु हर पल जीभ कट जाने का भय बना रहता है। मानव में मानवता अर्थात् आर्यत्व आ जाए-बस यही उसके जीवन का सुंदर लक्ष्य है। हम अपने निज रूप में आ जाये। विभाव दशाओं को छोड़कर स्वभाव में आ जावें। ऐसी आत्मा एक दिन धर्म को अपने अंतर मन में स्थिर कर संसार के राग-मोह से अपनी आत्मा को मुक्त कर शाश्वत सुखों को पा लेती है। इसीलिए तो कवि ने कहा है- यह देख तुझे दुःख क्या है? इस मायावी जगत् में सुख क्या है? इन आँखों से यही देख, तेरे जीवन का सही लक्ष्य क्या है? सुख-दुःख से मुक्त होने के लिये धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए।

जब तक मनुष्य बाह्य परिस्थितियों में उलझा हुआ रहता है, तब तक वह आत्म-चिंतन नहीं कर सकता है। बाह्य परिस्थितियों की विसंगतियाँ तो चलती ही रहेंगी। अनुकूलता-प्रतिकूलता का चक्र तो जीवन पर्यंत चलता ही रहेगा, तो फिर आत्मा के इष्ट अनिष्ट का चिंतन कब करेंगे? बिना धर्म चिंतन के व्रत-नियमों की महत्ता कैसे समझ पायेंगे? बिना धर्म चिंतन किये, सम्यग्ज्ञान की आवश्यकता कैसे महसूस करेंगे।

संसार के समस्त प्राणियों को सुख ही प्रिय है और दुःख अप्रिय है। दुःख को स्वेच्छा से कोई भी अपनाना नहीं चाहता। वास्तविक परम सुख क्या है? मनुष्य विषयों के क्षणिक सुख को परम सुख मान लेता है, सुखानुभव समझ लेता है। वह सुख तो उस कुत्ते के सुखानुभव जैसा है, जिसके मुँह में हड्डी का टुकड़ा आ जाता है, कुत्ता उस हड्डी को चबाने व चूसने का प्रयत्न करता है। हड्डी तो टूटती नहीं है, परन्तु उसके मुंह में घाव जरूर हो जाता। उस घाव में से खून रिसता है। कुत्ता समझता है कि हड्डी से रस टपकता है, परन्तु वह अपना ही खून गले उतारता जाता है और सुख का अनुभव करता है, जो कि वास्तव में वह परम सुख नहीं है। सुखाभास है, तुच्छ सुख का आभास मात्र है। क्योंकि उस सुख के साथ तो अनन्तानन्त दुःख भी जुड़े हुए है। यदि सचमुच सच्चा परम सुख ही पाना चाहते हैं तो दुःख के कारणों को ढूंढ़कर उन्हें दूर करना होगा। तभी वास्तविक परम सुख का अनुभव कर सकेंगे। यद्यपि यह कार्य कठिन जरूर है, किन्तु असंभव नहीं है।

दुःखी कौन है? अभाव की, असंतोष की जिन्दगी जीने वाला। अभाव पर ध्यान रखने वाला। सद्भाव को भूल जाने वाला। जो उसके पास है, उसका भोग न करते हुए, उस पर संतोष न करते हुए तथा जो नहीं है उसे पाने की चिन्ता में लीन रहता है वह दुःखी है। जिसका वह मालिक है, उसे भूल जाता है, जिसका पड़ौसी मालिक है, उसका सतत ख्याल रखता है, उसे पकड़ने का, अपना बनाने का सतत प्रयास करता है।

सुख का उपाय है - सद्भाव एवं संतोष की जिन्दगी जीना, जो है उसमें चला लेना। अर्थात् जो अपनी आवश्यकताएँ सीमित रखता है तथा जो परिस्थितियाँ से समझौता करता है वह सुखी है। जितना है उतने में संतोष रखना। जो मिला खा लिया, कल की फिक्र न रखना। जो नहीं है उसकी चिंता न

करना, पुण्य पाप में विश्वास रखना। आज हर मनुष्य दुःखी है, क्योंकि वह अभाव में जीता है, वह अभाव की, असंतोष की जिन्दगी जीने का आदी है। जो उसके पास होता है, उसकी वह परवाह नहीं करता, उसके प्रति लापरवाह बन जाता है। लेकिन जो उसके पास नहीं होता, उसके पीछे भागता है, उसे पानी के लिए दिन-रात एक कर देता है, उसकी रातों की नीदें खो जाती है, दिन का अमन चैन खो जाता है और उसे जब अभीष्ट वस्तु पुण्य की कमी से नहीं मिलती, तब वह हताश हो जाता है, निराश हो जाता है, दुःखी हो जाता है, पुण्य-पाप के उदय को नहीं सोचता है। दुःख का पहला कारण आपकी आकांक्षा है। दुःख कहीं बाहर से नहीं आता, वह आपकी कामना (इच्छा) से आता है, वह आपकी वासना से आता है, वह आपके चित्त (मन) से आता है, पूर्व पाप के हृदय से आता है।

जो भगवान की वाणी सुनकर बिना किसी दलील अथवा तर्क के उस भगवत् वाणी के बताये मार्ग पर चल पड़ता है, वही सरल हृदयी है। जिसके मन में अपने परमेश्वर के प्रति पूरी निष्ठा, आस्था और अंतर की भक्ति होगी, वह कभी परमात्मा के प्रति किसी भी तरह की शंका और उनकी आज्ञा का उलंघन कर ही नहीं सकता। सरल जीवन जीने वाला ही अपने हृदय के कपाट खोलकर अपने परमात्मा को साक्षात् पा सकता है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) के युग में लोग बहुत सरल (ऋजु) होते थे परन्तु अंतिम तीर्थंकर महावीर के शासन में लोग बड़े वक्र और जड़ होते हैं। अपनी गलती को भी व्यक्ति आसानी से नहीं मानता बल्कि दूसरों को ही गलत मानता है। परमात्मा की वाणी पर भी उसका विश्वास नहीं रह पाता और यही कारण है कि आज के व्यक्ति में सरलता लुप्त होती जा रही है। सब कृत्रिम जीवन जी रहे है किन्तु यह न भूले कि जो सरल जीवन को छोड़कर अपने अहंकार या किसी तरह के मद में जी रहे हैं, उन्हें एक दिन धूल चाटनी पड़ेगी। घमण्ड और अहंकार जब रावण, दुर्योधन, कंस जैसे महारथियों को ले डूबा फिर अन्य लोगों की हालत कैसी होगी? उसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। प्रभु वाणी से जीवन को सरल व सहज तरीके से जीना सीखो जिससे कि जीवन के तत्त्व बोध का अनुभव कर सको। संसार में वही तो महान् कहलाता है जो अपने सामने सब प्रकार की सुख-सुविधाएँ होते हुए भी वैराग्य भाव से जीवन निर्वाह करे। धर्ममय जीवन जीने के लिए अपने जीवन को सरलता से जोड़िए, इसी से एक दिन आत्म-सुख अनुभव हो पाएगा।

नींद में सोया हुआ व्यक्ति अंधकार में रहता है। इसी तरह प्रमादी व्यक्ति आँखें होते हुए भी अंधकार में है। प्रमाद कर्म रूपी भयंकर रोग है, वही अप्रमाद ऐसी औषधि है जिससे व्यक्ति अपने चेतन को जाग्रत कर सकता है। अशुभ कर्म रूपी व्याधि में जीव अनादिकाल से जकड़ा हुआ है जिसका कारण है प्रमाद अवस्था। प्रमाद से बचने के लिए व्यक्ति को खुद तैयार होना पड़ेगा, तभी वह मद, विषय-वासना, निन्दा-परनिन्दा से छुटकारा पा सकेगा। प्रमाद को त्यागने से ही जीवन धर्ममय बन सकेगा और इसके लिए संत-संगति ही सबसे श्रेष्ठतम माध्यम है।

जिनवाणी का सुधापान जो श्रद्धा और सद्भाव के साथ करते हैं, वे अपना जीवन धन्य और मंगलमय बना सकते हैं। जिनवाणी के स्वाध्याय से मन के मैल धुल जाते हैं और आत्मा शुद्ध बनती है। भगवान अरिष्टनेमी, राजकुमारी राजमति और रथनेमी की जीवन गाथा यही बताती है कि स्वाध्याय के द्वारा उन्हें जब अपनी आत्मा का तत्त्व बोध हुआ तभी वे विषय-भोगों को ठुकरा कर वीतराग धर्म के द्वारा अपनी आत्मा का कल्याण कर सके। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप का मार्ग स्वाध्याय तथा सम्यक् ज्ञान के द्वारा ही साधक भली प्रकार अनुभव कर सकता है। दान, शील, तप और संयम त्याग की भावना को जीवन में अपनाये ताकि यह मनुष्य जीवन सार्थक बन सकें।

सभी मनुष्यों को रसमय जीवन जीना पसंद है, परन्तु जीवन का रस किसमें रहता है, यह समझना ही तो समझदारी कही गई है। आर्य देश भारत भूमि में जब तक संस्कृति की ध्वजा लहराती थी, तब तक व्यक्ति में इतना कडुवापन नहीं था, जितना कि आज चौतरफा है। अब तो परिवार के सदस्यों में ही एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता नहीं है बल्कि ऐसे रूखेपन की स्थिति पैदा होती जा रही है, जिससे

संयुक्त परिवार निरंतर बिखर रहे हैं। फिर जीवन में रस कैसे आये? जब रस को हमने भोगों में मान लिया, धन-संपत्ति में समझ लिया फिर आत्म-रस का पान कैसे संभव है? हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जीवन का वास्तविक रस धर्म में ही है और वह तभी सुलभ हो सकेगा जब धर्म को हम अपने स्वयं के जीवन में धारण करेंगे।

हमें अपनी आध्यात्मिक दृष्टि को पैनी बनानी होगी। सम्यक्त्व धारण करना होगा यही दृष्टि धर्म साधना को गति देती है। साधना की चर्चाएं कर लेने से कुछ नहीं होने वाला है। साधना का थोड़ा सा अंश भी भीतर प्रवेश हो जाये तभी साधना फलीभूत हो सकती है। जितनी-जितनी मात्रा में साधना आपके अंतर्मन में बैठ गई उतने-उतने आप साधक बनते जायेंगे और जीवन में रूपांतरण भी आता रहेगा। जहाँ धर्म है वहाँ शुष्कता का क्या काम? वहाँ तो हर ओर सरसता का साम्राज्य फैला रहता है। धर्म मनुष्य को अन्तःकरण में उतरने की कला सिखाता है। जो आनंद उदारता में है वह आनंद अन्यत्र नहीं है। उदार मन मस्तिष्क वाला कहीं नहीं टकराता है। धर्म की दृढ़ नींव पर जीवन के भव्य महल का निर्माण करो। धर्म के भव्य महल पर चढ़ने के लिए सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम, सेवा, परोपकार, मैत्री, तप, विनय, विवेक के सोपान लगाओ। गुणानुरागी बनकर उस पर शुभ कर्मों का लेप चढ़ाओ। दुःखों से घबराकर धर्म का साथ मत छोड़ों। जीवन में सुबह तब ही आयेगी जब जीवन धर्ममय होगा, व्यवहार में पवित्रता होगी, धरती पर प्रेम एवं करूणा का निर्झर प्रवाहित होगा। आप अपने में धर्म को उतारने का प्रयास करें। धर्म भीतर उतरेगा तो उसके प्रकाश से आत्मा आलोकित हो उठेगी और यही जीवन की सफलता होगी। आत्मा की प्यास धर्मरूपी अनुष्ठान के जल से बुझ सकती है। धर्मकूप के जल को खींचकर जन्म-जन्म की अतृप्त आत्मा को तृप्त किया जा सकता है। धर्म की साधना करके कर्मों को निर्जरा करने का समय आपके पास अभी है इसलिये इसका सदुपयोग कर जीवन को उन्नत बनायें। दीपक के बुझने के पश्चात् तेल डालने से क्या लाभ? चोर के माल ले जाने के बाद सावधान होने से क्या फायदा? खेती के सूखने के बाद यदि बादल जमकर बरसे तो क्या खेती फिर हरी-भरी हो सकती है? नहीं, भाई! नहीं हो सकती। यह मानव भव बड़ा दुर्लभ है, चला गया तो फिर लौटकर आना मुश्किल है।

अपनी आत्मा ने कितनी बार जन्म-मरण को प्राप्त किया होगा। अब तक हम संसार के अनुसार जीते-मरते हुए आ रहे हैं, किन्तु एक बार यदि परमात्मा के अनुसार मरण को सुधार लिया तो फिर भव-भव सुधर जाएगा। सिर्फ एक बार अपना जीवन परमात्मा के सुपुर्द कर दें और अंतर मन में यह भावना बनायें कि मुझे अब यह जीवन प्रभु के बताये मार्गों पर अर्पित करना है, फिर आत्मा से परमात्मा बनना कदापि मुश्किल नहीं है। निष्काम भाव से की जाने वाली भक्ति और संसार से परे हटने की प्रवृत्ति जीवन को आनंद से भाव विभोर कर देगी परन्तु पुरुषार्थ स्वयं को ही करना पड़ेगा। ❖❖

जय-जय जिनवर, जय महावीर !

- **श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष-वैय्यावच्च योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

जय जय जिनेन्द्र, जय परमधीर ।
जय जय जिनवर, जय महावीर ।।
हम बालक हैं तुम पालक हो, इस जीवन के तुम चालक हो।
भव जल में डूब नहीं सकते, उद्धारक हो प्रतिपालक हो ।।
कब हुआ आप-सा कौन धीर,
जय जय जिनवर, जय महावीर ।।
सिद्धार्थ पुत्रा प्यारे-प्यारे, माता त्रिशला के ध्रुव तारे।
हे दिव्य ज्योति कुण्डलपुर की,
प्रकटे तम हरते उजियारे ।।
जानी तुमने अग-अग की पीर,
जय जय जिनवर, जय महावीर ।।
वह चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी, कार्तिक अमावस का दीपोत्सव।
धरती पर आई महाज्योति,
तारे कितने ही जन-भव-भव ।।
उतरे तुम भू पर तमस चीर,
जय जय जिनवर, जय महावीर ।।

❖❖

श्रावक के बारह व्रत

- तत्व चिंतक पू. श्री उत्तममुनिजी म.सा.

ज्ञानी महापुरुषों ने दो प्रकार के धर्म की प्ररूपणा की है। आगार धर्म और अणगार धर्म। अणगार धर्म को साधु धर्म भी कहा जाता है। उनके व्रतों को महाव्रत भी कहते हैं। क्योंकि साधु के नियमों में किसी भी प्रकार की छूट नहीं होती है; जबकि गृहस्थ धर्म को आगार धर्म कहा गया है; क्योंकि उनके व्रत और नियमों मे अनेक प्रकार की छूट रहती है। श्रावक अपने व्रतों का पूर्ण रूप से नहीं अपितु आंशिक रूप से पालन करता है। उसके छोटे-मोटे व्रतों को अणुव्रत कहते हैं। आगार का अर्थ है - घर । जो गृहस्थ घर में रहकर भी धर्माराधना आदि करते हैं उसे सागार धर्म कहते हैं। साधु के व्रत मोती के समान अखंडित होते हैं; जबकि श्रावक व्रत सोने के समान है। सोने के छोटे-मोटे टुकड़े करके भी बेचा जा सकता है। गृहस्थ अपनी इच्छा और शक्ति अनुसार एक करण एक योग से अथवा एक करण तीन योग से भी व्रत ले सकता है, सागार धर्म को गृहस्थ या श्रावक धर्म भी कहा जाता है। श्रावक शब्द का अर्थ निकालना हो तो -

श्रा = श्रद्धावान या शास्त्र श्रवण करने वाला ।
व = दान का वपन करे या विवेकवान हो ।
क = पाप काटे या क्रियावान हो ।

श्रावक के 12 व्रत होते हैं। उन्हें अणुव्रत भी कहते हैं। अणु का अर्थ छोटा होता है। संसार में घर गृहस्थी में रहते हुए अपने जीवन को कुछ नियम, मर्यादा, त्याग में व्यतीत किया जाना ही अणुव्रत कहलाता है। इनमें 5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत और 4 शिक्षाव्रत मिलाकर गृहस्थ धर्म के कुल 12 व्रत होते हैं।

पहला अणुव्रत स्थूल प्राणातिपात विरमण : निरपराधी त्रस जीवों की हिंसा का त्याग करना। संसारी जीवों के दो भेद किये गये हैं - त्रस और स्थावर। संसारी लोग स्थावर हिंसा से बच नहीं सकते। क्योंकि पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा और वनस्पति की हिंसा का प्रसंग आता ही रहता है। पर स्थूल त्रस जीवों की हिंसा का त्याग तो होना जरूरी है। स्थावर की मर्यादा होनी चाहिए। पहला व्रत 2 करण तीन योग से लिया जाता है। इस व्रत के पांच अतिचार से सदा बचना चाहिए।

दूसरा अणुव्रत स्थूल मृष्ठावाद विरमण : गृहस्थ का सभी प्रकार के झूठों से तो निवृत्त होना कठिन है। अतः बड़े-बड़े झूठों से तो उसे निवृत्त होना ही चाहिए। पाँच प्रकार के बड़े झूठ कहे गये हैं -

1. कन्या सम्बन्धी बड़ा झूठ - बड़े या अच्छे घर में कन्या देने के लिए कन्या सम्बन्धी दोषों को ढक देना।

2. गौ सम्बन्धी बड़ा झूठ जैसे जानवरों में दूध देने की या अन्य गुण न होते हुए भी झूठ बोलना।

3. जमीन सम्बन्धी झूठ बोलकर खराब जमीन को अच्छी कहना।

4. किसी की धरोहर दबाने के लिए झूठ बोलना।

5. झूठी गवाही देना - वकील, जज, पंच आदि सत्य को झूठ और झूठ को सच के रूप में फैसला देते हैं।

ऐसे बड़े झूठों को श्रावक जन कभी भी न बोले।

तीसरा अणुव्रत स्थूल अदत्तादान विरमण : बड़ी-बड़ी चोरियों का त्याग करना। क्योंकि साधु की भांति गृहस्थ सम्पूर्ण रूप से चोरी का त्याग नहीं कर सकता है। वैसे तो सामान्य चोरी यद्यपि लोक विरूद्ध न भी हो, पर धर्म विरूद्ध तो है ही। उससे भी बचो तो अच्छा है, अन्यथा निम्नोक्त 5 प्रकार की चोरी का तो अवश्य त्याग करें।

1. सेंध लगाकर चोरी करना।, **2.** दूसरे के विश्वास का नाजायज फायदा उठाकर माल हड़पना।, **3.** राहगीरों को डरा-धमका कर, मार-पीट कर लूटना।, **4.** ताले में चाबी लगाकर माल निकालना फिर वैसा ही बंद करके छोड़ देना।, **5.** पड़ी हुई वस्तु के मालिक को जानते हुए भी उसे उठाकर अपने घर में छुपाकर रखना। - ऐसा काम कभी न करें।

चौथा अणुव्रत स्वदार संतोष : स्व स्त्री से संतुष्टि। समस्त सिद्धि प्राप्ति और आत्म-कल्याण के लिए मानसिक शक्ति का विकास और शारीरिक शक्ति टिकाये रखने में ब्रह्मचर्य से बढ़कर कोई श्रेष्ठ साधन नहीं है। सभी मनुष्य पूर्ण रूप से विषय-वासना को त्याग नहीं सकते। दर्शन और चारित्र मोहनीय का उदय रहता है। अन्य गतियों की अपेक्षा मनुष्य गति में मैथुन संज्ञा ज्यादा है। अतः गृहस्थ स्वदार संतोष व्रत धारण करते हैं। पंचों की साक्षी से जिस स्त्री के साथ विधिवत् विवाह हुआ वह स्व स्त्री है। उसके अलावा सभी नारी पर स्त्री है। सद्गृहस्थ अपनी स्त्री में संतुष्ट रहें, पर स्त्री को माता-बहन और बेटी मानें। श्रावक स्व स्त्री में भी ज्यादा आसक्त नहीं रहता, क्योंकि विषयासक्ति से चिकने कर्मों का बंध हो जाता है। साथ ही अनेक भयंकर रोग पैदा हो जाते हैं। असंख्यात वर्षों तक देवांगनाओं के साथ अनंत बार भोग भोगे, फिर भी तृप्ति नहीं हुई। मनुष्य सम्बन्धी अल्पकालीन और अशुचिमय भोगों से तृप्ति कब और कैसे संभव है? धार्मिक तिथियाँ, तीर्थंकरों के पंच कल्याणक तिथि

एवं दिन के समय सर्वथा मैथुन का त्याग होना चाहिए। धार्मिक तिथियों में स्त्री प्रसंग से कुगति की आयु का बंध होता है, तो दिन में स्त्री प्रसंग से निर्बल और खराब संतान की उत्पत्ति हो जाती है।

ऐसे सद्गृहस्थ को इन पाँच बातों से बचना चाहिए -

1. छोटी उम्र वाली अपनी विवाहिता स्व स्त्री से गमन न करें।, **2.** शादी से पूर्व (मात्र सगाई हुई है) मैथुन सेवन न करें।, **3.** अनंग क्रीड़ा न करें।, **4.** स्व जन के अतिरिक्त पराये का विवाह सम्बन्ध न करें।, **5.** काम भोग की तीव्राभिलाषा न करें।

पाँचवां अणुव्रत परिग्रह परिमाण : परिग्रह की मर्यादा रखना । गृहस्थ सर्वथा परिग्रह का त्याग नहीं कर सकता है। कहा भी है - 'साधु कोड़ी रखे तो कोड़ी का, गृहस्थ के पास कोड़ी न हो तो कोड़ी का।' अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए, शरीर-परिवार के भरण-पोषण के लिए द्रव्य की आवश्कता पड़ती है। न्यायपूर्वक अर्जित अर्थ पर संतोष धारण करना ही परिग्रह परिमाण व्रत है। कहा भी है - 'तृष्णायां परमं दुखम्' तृष्णा को परम दुःख का है। बिना पाल का तालाब कभी भरता नहीं है। वैसे ही तृष्णातुर को कितना भी द्रव्य मिले संतोष नहीं होता। जैसे-जैसे लाभ लेता है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता जाता है। उस परिग्रह रूप तृष्णा को रोकने के लिए प्रत्याख्यान जरूरी है। मर्यादा ग्रहण करने से संतोष की प्रवृत्ति आ जाती है। संतोषी ही इस दुनियां में परम सुखी माना गया है। इन पाँच प्रकार के परिग्रह को सीमित (मर्यादित) करें - **1.** खुली भूमि (जगह-खेत) की इच्छित मर्यादा करें।, **2.** ढ़की हुई वस्तु (मकान-दुकान) की मर्यादा करें।, **3.** सोना चांदी की मर्यादा करें।, **4.** नगद-धन आदि की मर्यादा करें।, **5.** अनाज, पशु-पक्षी दास-दासी की मर्यादा करें। उपरोक्त 5 अणुव्रतों का संक्षिप्त में वर्णन किया है।

तीन गुणव्रत : ये तीन गुणव्रत उपरोक्त पाँच अणुव्रतों के सहयोगी है। जैसे कोठार में रखा थान्य नष्ट नहीं होता इसी प्रकार निम्नोक्त तीन गुणव्रत धारण करने से अणुव्रतों की रक्षा होती है। छठा, सातवां और आठवां व्रत गुणव्रत है।

छठा व्रत दिशा परिमाण : पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर और नीचे - ये छह दिशाएँ हैं। इन दिशाओं में गमनागमन करने की मर्यादा न होने से, सारे जगत् में होने वाले पाप कर्मों का हिस्सा लगता है। जैसे खिड़की खुली रहने पर बाहर का कूड़ा-कचरा घर में भर जाता है उसी प्रकार त्याग-पच्चक्खाण न होने पर पाँच आश्रव और 18 पापों का कचरा आत्मा में आकर उसे मलीन कर देते हैं। अतः ऊँची, नीची और तिरछी दिशा गमन की गर्यादा रखें।

सातवाँ व्रत उपभोग परिभोग परिमाण : जो वस्तु एक ही बार उपयोग में आती हो, दूसरी बार काम नहीं आती वह उपभोग है। जैसे कि अन्न, पानी, इत्र आदि। जो वस्तु बार-बार भोगी जाती हो वह परिभोग है। जैसे कि - स्थान, वस्त्र, आभूषण, शैया आदि। इसके 26 भेद बताये गये हैं। इनकी मर्यादा करनी चाहिए।

आठवाँ व्रत अनर्थदण्ड विरमण : दण्ड दो प्रकार होते हैं - अर्थ दण्ड और अनर्थ दण्ड। अर्थदण्ड अपने शरीर की रक्षा के लिए कुटुम्ब परिवार, समाज, देश की रक्षा और पालन पोषण में जो आरंभ (पाप) होता है वह अर्थदण्ड है। बिना प्रयोजन के जो आरंभ आदि किया जाता है, वह अनर्थदण्ड है। अर्थदण्ड की अपेक्षा अनर्थदण्ड से ज्यादा पाप लगता है। जैसे खोटे विचार करना, मदिरा-नशा का सेवन, बिना प्रयोजन हिंसा करना, छोटे-मोटे जीवों को मारते रहना। यह सभी अनर्थदण्ड में आता है। इस पाप से सदा बचना ।

नौवाँ व्रत सामायिक : जीव, अजीव, शत्रु, मित्र पर समभाव रख कर, आत्म-भाव में रमण करना। प्राणी मात्र पर समता, पाँचों इन्द्रियों को वश में रखना, आर्त्त-रौद्रध्यान का त्याग कर धर्मध्यान में लीन रहना। समभाव की क्रिया और साधना ही सामायिक कहलाती है। इसे रोज धारण करें।

दसवाँ व्रत देशावगासिक : छठे और सातवें व्रत में जो मर्यादा बाँधी थी वह जीवन भर के लिए थी। उन व्रतों में रखे छूटों को और सीमित करना। प्रतिदिन चौदह नियम पालना तथा वृत्तियों को संक्षेप करना ही इस व्रत का लक्ष्य है। इसमें आठ आगार है।

ग्यारहवाँ व्रत पौषध : सम्यक् ज्ञान और रत्नत्रय का पोषक तथा निज गुणों में रमण कराकर स्वात्मा का पोषक होने से और इस आराधना में छः काय जीवों की रक्षा होने से पौषध व्रत कहलाता है।

पौषध व्रत की विधि : पौषध लेने से एक दिन पूर्व एक बार भोजन करें, अहोरात्रि ब्रह्मचर्य पालें, जहाँ संसारी कार्य न होते हो, त्रस, स्थावर जीवों की हिंसा न होती हो वहाँ पर पौषध करें। यदि शुद्ध पौषध करें तो आत्मा एक भवावतारी होती है।

बारहवाँ व्रत अतिथि संविभाग : जिसके आने की कोई भी तिथि न हो वह अतिथि है। ऐसे श्रमण-निर्ग्रंथों को सदैव निर्दोष, अचित्त, ऐषणीय भोजन आदि देना, भोजन के वक्त साधु-मुनिराज को आहार दान देने की भावना भाना। साधु को 14 प्रकार की निर्दोष वस्तुएं बहराई जाती है। मुनिराज को चारों आहार, वस्त्र, पात्र, कम्बल आदि देना अतिथि संविभाग है। ❖❖

स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

कलाकार, सेवाभावी, फक्कड़बाबा, महास्थविर श्री ताराचंदजी म.सा.

मामा द्वारा माँ के विरूद्ध मुकदमा होने पर एक बालक को न्यायाधीश के सम्मुख हाजिर होना पड़ा। न्यायाधीश ने पूछा- 'बालक क्या तुम्हें तुम्हारी माता जबरदस्ती साधु बनाना चाहती है ?' बालक ने कहा - नहीं, मैं अपनी ही इच्छा से जैन साधु बनना चाहता हूँ। बालक की दृढ़ता देखकर न्यायाधीश ने माँ को आरोप मुक्त कर दिया। मामा श्री हंसराजजी भण्डारी पानी-पानी हो गए।

इसी बालक ने वि.सं. 1950 में समदड़ी ग्राम में जैन भगवती दीक्षा को अंगीकार करके जिनशासन की महती सेवा एवं प्रभावना की। सेवा करना आपको अत्यन्त प्रिय था। आपश्री को जब भी सेवा से अवकाश प्राप्त होता था। आप धर्म-ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ उतारते रहते थे। आपके अक्षर मोती के समान सुन्दर थे। आपको सैकड़ों भजन एवं चौपाइयाँ भी लिखी थीं। सेवा के अतिरिक्त आपको जप करने में गहरी तल्लीनता प्राप्त थी। आप संगठन के प्रबल पक्षधर थे। मारवाड़ प्रान्तीय सम्मेलन एवं सादड़ी व अजमेर सम्मेलन में भी आपने बड़ा योगदान दिया।

संसार में तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं - जन्म से महान्, जीवन में पुरुषार्थ से महान् बनने वाले और वे व्यक्ति जिन पर महानता थोपी जाती है। निपट साधारण परिवेश और परिस्थितियों में जन्मे महास्थविर श्री ताराचन्दजी महाराज ने अपने जीवन को प्रखर पुरुषार्थ से महान् बनाया। उन्होंने अपनी सतत अप्रमत्त साधना से जीवन को लक्ष्य के लिए समर्पित कर दिया तथा कई जिन्दगियों के वे प्रेरणास्रोत बन गये।

वह उनके साधनामय व्यक्तित्व के पारस स्पर्श का ही अद्भुत प्रभाव था कि ब्राह्मण कुल का एक बालक उनके पास आया तो उसे साथना में इतना आगे बढ़ाया कि वह साधना के शिखर पुरुष उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म. के रूप में वन्दनीय हो गया। यही नहीं, उपाध्यायश्री, श्रमण संघ के तीसरे आचार्य के भी गुरु के रूप में पूजनीय बने। स्वयं आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म. फरमाया करते थे कि उनके जीवन-निर्माण में जिन व्यक्तियों का विशेष योगदान व उपकार रहा, उनमें एक उनके दादागुरु महास्थविर श्री ताराचन्दजी महाराज थे। वे प्रेरणा के दृश्य व अदृश्य शक्तिपुंज थे।

श्री देवेन्द्रमुनिजी म. ने महज नौ वर्ष की बालवय में श्रमण जीवन अंगीकार कर लिया था। मुनि श्री ताराचन्दजी म. ने बालमुनि देवेन्द्र को अपार स्नेह दिया और मुनि-जीवन की चर्या व जिम्मेदारियों से अवगत कराया। वस्तुतः मुनि श्री ताराचन्दजी सेवाभाव की प्रतिमूर्ति थे। ऐसे कई अवसर आए जब उन्होंने संघस्थ मुनियों की अग्लानभाव से सेवा-सुश्रुषा की और ऐसे अवसर आए जब अन्य सम्प्रदाय के मुनिजनों की भी मुनि श्री ताराचन्दजी ने निष्ठापूर्वक सेवा करके वैयावृत्य को तप के रूप में निभाया और प्रेम, सद्भाव और सहिष्णुता का परिचय दिया। आचार्य श्री हस्ती ने उनके लिए कहा- 'उनकी सन्तों पर वत्सलता ऐसी अनूठी थी कि रात्रि को छोटे-मोटे सभी संतों को संभाल कर फिर शयन करते थे। सन्तों को प्रेम और आचार की शिक्षा देने में उनका बड़ा रस था।' वर्तमान समय में जीवन के ऐसे प्रसंग सबके लिए प्रेरणा लेने योग्य हैं।

शिष्य श्री पुष्करमुनिजी को ज्ञान-ध्यान में आगे बढ़ाया। गुरु के साहसपूर्ण मार्गदर्शन में श्री पुष्करमुनिजी ने प्राकृत-संस्कृत भाषाओं का अच्छा ज्ञान किया। उस जमाने में उन्होंने किंग्स कॉलेज, बनारस और कलकत्ता एसोसिएशन की काव्यतीर्थ और न्यायतीर्थ की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। मुनि श्री ताराचन्दजी म. के इस कदम से कई अन्य साधु-साध्वियों के अध्ययन का मार्ग भी प्रशस्त हुआ और दीप से दीप जलते गये। इस बीच उन्होंने उनके शिष्य-शिष्याओं को साधना और साधुता के प्रति भी सजग रखा। यही बात उनके सम्पूर्ण जीवन में देखने को मिलती है। उन्होंने प्रमाद में समय नहीं गंवाया। अध्यात्मयोगी श्री ज्येष्ठमलजी महाराज की प्रेरणा से वे अपना अतिरिक्त समय जप-साधना में नियोजित करते थे। बालमुनि देवेन्द्र के आग्रहपूर्वक पूछने पर एक बार उन्होंने बताया कि वे सवा करोड़ से अधिक नवकार जप कर चुके हैं।

सरलता उनकी साधना को अभिव्यक्त करती थी। आचार्य प्रवर श्री आत्मारामजी म. ने लिखा- 'निरभिमानता, सरलता, नम्रता एवं मधुरता उनके जीवन की अनमोल मणियां थीं।' उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म. ने लिखा कि - 'मेरे तर्क प्रधान मस्तिष्क को उनकी सहज सरलता ने प्रभावित किया है। उनकी अलंकारहीन सुमधुर भद्रवाणी में साधुता के दिव्य भाव छलक-छलक जाते थे।'

ऐसे महास्थविर मुनि श्री ताराचन्दजी म. का जन्म मेवाड़ के छोटे-से ग्राम 'बम्बोरा' में आश्विन शुक्ला 14 वि.सं. 1940 में हुआ। जन्मोपरान्त उनका नाम 'हजारीमल' रखा गया। जब वे मात्र सात वर्ष के थे, उनके पिता शिवलालजी मेहता परलोक सिधार गए। जीवन की उन विकट घड़ियों में धर्मनिष्ठ माँ ज्ञानकंवर ने असीम धैर्य रखा और कुछ समय बाद वे अपने पुत्र के साथ उदयपुर रहने लगीं।

हजारीमल को उदयपुर में धर्म और शिक्षा का सुयोग प्राप्त हुआ। उन्हें जीवन और जगत् के यथार्थ का बोध होने लगा। इसी बीच आचार्य श्री पूनमचन्दजी म. का उदयपुर पदार्पण हुआ। उनके सान्निध्य में श्री हजारीमल के मन में वैराग्य की भावनाएँ आकार लेने लगीं। उनकी वीर माता में न सिर्फ उनकी भावनाओं का समर्थन किया, अपितु वह स्वयं भी संयम के कठिन मार्ग पर बढ़ने के लिए तैयार हो गई।

माँ-पुत्र के वैराग्य की चर्चा हजारीमल के मामा श्री हंसराजजी भण्डारी तक पहुँची। अपनी बहन और भांजे की संकल्पपूर्ण जीवनचर्या से अपरिचित मामा उनकी दीक्षा के विरोध में अदालत में चले गये, लेकिन अदालत ने दस वर्षीय बालक हजारीमल ने दीक्षा के पक्ष में जो उत्तर दिये, उससे माँ और माटी दोनों गौरवान्वित हुए। छोटे-से दृढ़ निश्चयी बालक में त्याग तथा तप के प्रति अनुराग से प्रभावित न्यायाधीश ने दीक्षा के पक्ष में अपना फैसला सुना दिया। अदालत के इस फैसले के साथ मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा श्री फतेहसिंहजी ने भी उनकी दीक्षा के प्रति अपना मुक्त समर्थन प्रकट किया।

उस समय आचार्य श्री पूनमचंदजी म. जालोर में विराजित थे। एक उदारमना श्राविका के सहयोग से माँ-पुत्र उदयपुर से चित्तौड़गढ़ तक बैलगाड़ी से, चित्तौड़गढ़ से समदड़ी तक रेलगाड़ी से और समदड़ी से जालोर तक ऊँट से पहुँचे। संयम मार्ग पर चलने का संकल्प करने वालों के लिए सारी बाधाएँ छोटी हो जाती हैं। माँ ज्ञानकंवर ने अपने पुत्र के लिए दीक्षा का आज्ञा-पत्र आचार्य श्री को समर्पित करने के बाद वि.सं. 1950, चैत्र शुक्ला 2 को श्रमणी जीवन अंगीकार कर लिया। माँ की दीक्षा के दो माह पश्चात् ज्येष्ठ शुक्ला 13 को श्री हजारीमल ने भी श्रमण जीवन अपना लिया और उनका नाम मुनि श्री ताराचन्दजी म. रखा गया। 53 वर्ष तक उन्होंने श्रमण जीवन की आराधना की।

मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म. ने उन्हें काव्य-सुमन अर्पित करते हुए लिखा है -

"वय व्रत पुनरपि ज्ञान बुध, स्थानकवासी स्तंभ ।
जयपुर में जातो रयो, स्वर्गां बीच विहंभ ।।
मेल घणो महिमा घणी, विचर्या देश-प्रदेश ।
संत-सती-श्रावक अजू, करते याद हमेश ।।"

भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने 3 दिसम्बर 1954 को उदयपुर में आपके दर्शन किए। निश्रायी संतों ने पंडित जी से खूब चर्चाएं की मगर जपलीन महास्थविर मुनिराज मौन ही रहे। नेहरू जी ने उठते-उठते आपको अद्भुत महात्मा कहते हुए बारम्बार नमन किया। वास्तव में आप थे ही फक्कड़ संत, जो आरम्भ-समारम्भ से दूर केवल साधना में ही लीन रहते थे वचनसिद्धि का उदाहरण देखिए- वि.सं. 2013 में आप जयपुर में विराजमान थे। यहीं पर श्रमणसंघ के प्रधानमंत्री व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म. भी विराजमान थे। तब आपने कहा था- 'जब मेरी दाणी बंद हो जाए तब संथारा करा देना।' ऐसा ही हुआ तब श्री मदनलालजी म. ने आपको संथारा करवाया। 73 वर्ष की उम्र में वि.सं. 2013 की कार्तिक शुक्ला 14 को जयपुर के लाल भवन में आपका समाधिपूर्वक देवलोकगमन हो गया।

उनके नाम पर संस्थापित "श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय" देश भर में विख्यात है। कई स्थानों पर उनके नाम पर पुस्तकालय भी संचालित है। जिन्होंने ज्ञान-ध्यान से अपना और शिष्यों का जीवन सजाया, उनके लिए यही अभीष्ट है।

❖❖

जिनशासन की श्रेष्ठ मणियाँ ...

महासती सुन्दरी

भगवान ऋषभदेव के भरत, बाहुबली आदि सौ पुत्र एवं ब्राह्मी, सुन्दरी नामक दो पुत्रियाँ थी। भगवान् को अपने पुत्रों से भी पुत्रियों पर अधिक स्नेह था। अतः उन्होंने अपनी दोनों पुत्रियों को इस युग का प्रथम ज्ञान प्रदान करने का निश्चय किया। ब्राह्मी को बायीं और लिखे जाने वाला अक्षरज्ञान करवाया। सुन्दरी को दायीं ओर लिखे जाने वाला अंक (गणित) ज्ञान सिखाया। ब्राह्मी को दिया गया ज्ञान इस युग का प्रथम अक्षर ज्ञान, ब्राह्मी लिपि के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अपनी दूसरी पुत्री सुन्दरी को भगवान् ने इस युग का प्रथम गणित ज्ञान प्रदान किया।

राजकुमारी सुन्दरी का रूप लावण्य अद्वितीय था। उस समय उसके जैसी सौन्दर्यशील नारी कोई नहीं थी। इसी कारण से शायद उसका नाम सुन्दरी प्रसिद्ध हुआ होगा। अपनी दोनों बहनों में से सुन्दरी पर भरत का स्नेह अधिक था। जब ब्राह्मी ने भगवान् ऋषभदेव के पास दीक्षा अंगीकार करने की आज्ञा भांगी, उस समय सुन्दरी की भी दीक्षा धारण करने की तीव्र अभिलाषा थी। मगर भरत ने उसके प्रति अपने स्नेह के कारण आज्ञा प्रदान नहीं की और उसे दीक्षा लेने से रोक लिया।

उस समय सुन्दरी ने अपने भाई की आज्ञा का पालन अवश्य कर लिया। मगर उसका मन संसार के सुख एवं भोग-विलासों से बिल्कुल उदासीन हो चला था। वह महलों में रहते हुए भी साध्वी की तरह सादा जीवन बिताने लगी। कुछ काल पश्चात् उसने भरत से फिर एक बार दीक्षा धारण करने के लिये अनुमति मांगी तो भरत ने उसे आज्ञा प्रदान नहीं की। भरत की आँखों में उसे वात्सल्य के स्थान पर वासना का आभास हो रहा था। उसे प्रतीत हुआ कि अकर्म युग की तरह इस कर्मयुग में भी युगल परम्परा के अनुसार भरत का मन सुन्दरी के सौन्दर्य को पत्नी के रूप में पाना चाहता है। सुन्दरी के दिमाग में भाई की इस दृष्टि से बिजली-सी कौंध गई। मगर उसने उस समय अपने आपको संयमित रखा।

कुछ काल पश्चात् भरत अपनी विशाल सेना को लेकर दिग्विजय के लिए निकल पड़ा। अब सुन्दरी पर आज्ञा चलाने वाला राजमहल में कोई नहीं था। उसने सफेद वस्त्र धारण कर लिए और अपनी आत्मा को तप-त्याग में लगा दिया। कठोर तपस्या के कारण उसका तन सूख कर काँटा हो गया। चेहरे पर तो चमक एवं प्रसन्नता थी मगर तन नर कंकाल-सा प्रतीत हो रहा था। कुछ काल पश्चात् भरत दिग्विजय करके अयोध्या लौटा। भागता हुआ वह महल में आया। उसकी नजरें महल में सुन्दरी को ढूँढ़ रही थी। पता लगा कर जब वह सुन्दरी के पास आया तो उसके बदले हुए रूप को देख कर वह अवाक् रह गया।

भरत के दिमाग में घंटियाँ-सी बजने लगी। उसे अपनी भूल का अहसास हुआ। वासना पर त्याग ने विजय प्राप्त की। सुन्दरी की इच्छानुसार भरत ने उसे भागवती दीक्षा अंगीकार करने की आज्ञा प्रदान की। राजसी धूमधाम के साथ सुन्दरी ने भगवान् ऋषभदेव के पास दीक्षा अंगीकार कर ली। महाश्रमणी ब्राह्मी के साथ महाश्रमणी सुन्दरी का मधुर मिलन हुआ। भगवान् ऋषभदेव की आज्ञा से विचरण करती हुई दोनों बहनें तप और त्याग से अपनी आत्मा को भावित करने लगी।

भरत को अपने दिग्विजय में सहयोग देने हेतु उसके अट्ठाणवें भाईयों ने अपने राज्यपाट का त्याग कर दिया। शाश्वत साम्राज्य की प्राप्ति हेतु उन्होंने भगवान् ऋषभदेव के पास दीक्षा अंगीकार कर ली। मगर बाहुबली ने भरत की आधीनता को स्वीकार नहीं किया। दोनों में तरह-तरह के द्वन्द्व युद्ध हुए। सब में बाहुबली की जीत हुई। देवों ने बाहुबली को अनुनय-विनय करके शांत किया। उन्हें आत्मबोध हुआ। अपना पंचमुष्ठि लोच कर वे स्वयमेव दीक्षित हुए और निर्जन वन में जाकर ध्यान में तल्लीन हो गये।

भूखे-प्यासे ध्यान और तपस्या में मग्न बाहुबली को बारह वर्ष बीत गये। वे अहंकारवश भगवान् ऋषभदेव के दर्शनार्थ नहीं गये, क्योंकि वहाँ भगवान् के पास उनके अट्ठाणवें लघु भ्राता उनसे पहले ही दीक्षित थे। भगवान् के पास जाते तो अपने छोटे भाइयों को नमन करना पड़ता। इसी अहंकारवश

इतनी कठिन साधना के उपरान्त भी उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं हो रही थी। ब्राह्मी और सुन्दरी महाश्रमणियों को अपने ज्ञान से इस बात का पता चला तो उन्होंने भगवान् से आज्ञा प्राप्त करके बाहुबली को इस अहंकार से निवृत्त करने का निश्चय किया।

"वीरा म्हारा गज थकी नीचे ऊतरो,
गज चढ्यां केवल न होसी ओ।"

ध्यानस्थ बाहुबली के कानों में जानी-पहचानी सी मधुर ध्वनि सुनाई पड़ी। वे तुरन्त पहचान गये कि यह तो उनकी प्रिय बहनों की आवाज है। उन्होंने सोचा कि मैं तो निर्जन वन में ध्यानस्थ खड़ा हूँ, फिर बहनें मुझे किस हाथी के नीचे उतरने का उपदेश दे रही हैं। तुरन्त उन्हें अपनी भूल का अहसास हुआ। अपने लघुभ्राता अट्ठाणवें श्रमणों को नमन करते हेतु अपने कदम को ज्यों ही उठाया, गगन में देवी-देवताओं ने केवली बाहुबली का जयनाद करते हुए दिव्य पुष्पों की वर्षा प्रारंभ कर दी। स्व और पर का कल्याण करने वाली महाश्रमणियों ने अनेक भव्यात्माओं का इसी प्रकार कल्याण किया। महश्रमणी सुन्दरी को शत-शत नमन! शत-शत वन्दन!!

❖❖

मेरे महावीर

- श्री स्वराज जैन, टाइम्स ऑफ इंडिया

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर सत्य और अहिंसा के मूर्तिमान प्रतीक थे। उनका जीवन त्याग और तपस्या से ओत-प्रोत था। निडर, सहनशील और अहिंसक होने के कारण उनका नाम महावीर हुआ।

भगवान महावीर का जन्म ईसा पूर्व 599 में बिहार के वैशाली गणतंत्र के क्षत्रिय कुण्डलपुर ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ तथा माता त्रिशला भी। उनके बचपन का नाम वर्धमान था। वर्धमान का बचपन राजमहल में बीता। वे बड़े निर्भीक थे। जब वे आठ वर्ष के हुये तो उन्हें शिक्षा तथा धनुर्विद्या सीखने हेतु शिल्पशाला भेजा गया। तीस वर्ष अवस्था में वे गृह त्याग कर श्रामणी दीक्षा ली। 12 वर्षों की कठोर मौन तपस्या करने के उपरान्त उन्हें **'केवल ज्ञान'** प्राप्त हुआ।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में भारत में दो महान विभूतियों का आविर्भाव हुआ। भगवान महावीर और भगवान बुद्ध। दोनों ने विश्व को अहिंसा का मार्ग दिखाया। विश्व की सारी समस्यायों का समाधान अहिंसा द्वारा किया जा सकता है, इसका उपदेश दोनों ने दिया। सत्य और अहिंसा के उपासक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अहिंसा के द्वारा ही अंग्रेजों की दासता से देश को आजादी दिलाई। भगवान महावीर के उपदेशों की प्रासंगिकता आज सम्पूर्ण मानव जाति को अत्यधिक है। लगभग 2550 साल पहले भगवान महावीर के उपदेश जितने मानव हितकारी थे, आज भी ये उतने ही हितकारी हैं।

भगवान महावीर ने अपने जीवन काल में दिये गये प्रवचनों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पर अत्यधिक जोर दिया। त्याग और संयम, प्रेम और करुणा, शील और सदाचार उनके प्रवचनों का सार था। उन्होंने जैन धर्म के पंचशील सिद्धान्त बताये, जो हैं:- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

भगवान महावीर ने अपने धर्म प्रचार काल में जातिवाद का घोर विरोध किया था। उनके धर्मसंघ में विभिन्न जातियों का समन्वय था। जातिवाद के बन्धनों को तोड़कर उन्होंने एक महान धर्म क्रान्ति का सूत्रपात किया। अतः वे महान समाज सुधारक थे।

तीर्थंकर महावीर ने कहा कि किसी प्राणी को कष्ट देना हिंसा है। यहाँ तक कि पेड़-पौधों को भी कष्ट देना हिंसा है। उन्होंने 'जीयो और जीने दो' का संदेश मानव जाति को दिया। आवश्यकता से अधिक भौतिक वस्तुओं को संग्रह नहीं करना चाहिए। उन्होंने अपने उपदेशों में कहा कि संयम ही जीवन है। अत्यधिक भोग का त्याग किया जाना चाहिए। मनुष्य को हमेशा क्षमा और प्रेम का विचार अपनाना चाहिये। इससे जीवन को न केवल सरल किया जा सकता है बल्कि सम्मान से वह सब कुछ पा सकता है।

भगवान महावीर ने 72 वर्ष की आयु में ईसा पूर्व 527 में पावापुरी (बिहार) में कार्तिक मास की अमावास्या को निर्वाण प्राप्त किया।

हम सब भाग्यशाली हैं कि भगवान महावीर का 2550वाँ निर्वाण महोत्सव वर्ष हमारे जीवन काल में आया है। हमें सत्य और अहिंसा के पुजारी भगवान महावीर के उपदेशों को जन-जन तक पहुंचाने कार्य करना चाहिये। वर्तमान को वर्धमान की अत्यधिक आवश्यकता है। भगवान महावीर है 2550वें महोत्सव वर्ष पर मैं उन्हें अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

❖❖

भगवान महावीर के सत्ताईस पूर्व भव

- श्री त्रिलोकचंद जैन, दिल्ली

कल्पसूत्र में वर्णित भगवान महावीर के सत्ताईस भव- 1. नयसार, 2. प्रथम देवलोक, 3. मरीचि (त्रिदण्डी), ब्रह्म देवलोक, 4. कौशिक, 5. पुष्पमित्र, 6. सौधर्म देवलोक, 7. अग्निद्योत, 8. ईशान देवलोक, 9. अग्नि भूति, 10. सनत्कुमार देवलोक, 11. भारद्वाज, 12. माहेन्द्र देवलोक, 13. स्थावर ब्राह्मण, 14. ब्रह्म देवलोक, 15. विश्वभूति, 16. महाशुक्र देवलोक, 17. त्रिपृष्ठ, 18. सातवीं नरक, 19. सिंह, 20. चतुर्थ नरक, 21. प्रियमित्र चक्रवर्ती, 22. महाशुक्र 23. नन्दन, 24. प्राणत देवलोक, 25. देवानन्दा के गर्भ में, 26. वर्धमान महावीर ।

भगवान महावीर के कुछ उल्लेखनीय भव -

नयसार - भगवान नयसार के भव में ग्राम रक्षक थे। वे भोजन तैयार करके भोजन को खाने का विचार कर ही रहे थे कि कुछ साधुओं का समूह जो मार्ग भूल गया था, वह साधु मंडल वहां से निकला। साधु भूख-प्यास, थकावट से पीड़ित थे। नयसार ने उन्हें भक्ति-भावना से विभोर होकर वह निर्दोष आहार उन साधुओं का प्रदान किया, मार्ग बताया, विश्राम के लिए स्थान दिया। साधुओं ने भी उन्हें मोक्ष मार्ग का उपदेश दिया। जिसमें नयसार को सम्यक्त्व प्राप्त हुआ। और इसके फलस्वरूप वे अल्प संसारी बने।

मरीचि (त्रिदण्डी)- भगवान महावीर का जीव तृतीय भव में चक्रवर्ती सम्राट् भरत के पुत्र मरीचि के रूप में उत्पन्न हुआ। वहां भगवान ऋषभदेव के प्रथम प्रवचन को श्रवण कर श्रमणत्व स्वीकार किया। परंतु एक बार भीषण ग्रीष्म के कारण उनका मन विचलित हो गया। उनके मन में यह विचार उठे कि ''मेरु पर्वत समान' यह संयम का पालन, एक मुहूर्त्त सहन करना अति कठिन है। उसके मन में विचार उठने लगे कि क्या मुझे पुनः गृहस्थाश्रम में चला जाना चाहिए? नहीं, कदापि नहीं। वह गृहस्थाश्रम में तो नहीं गए।

उसने संकल्प किया - ''श्रमण संस्कृति के श्रमण त्रिदण्ड-मन, वचन, काय के अशुभ व्यापारों से रहित होते हैं। इन्द्रिय विजेता होते हैं। इसके प्रतीक रूप में त्रिदण्ड धारण करुंगा। मुनि महाराज द्रव्य और भाव से मुण्डित होते हैं। सर्व प्राणातिपात विरमण महाव्रत के धारक होते हैं, पर मैं शिखा सहित रहूँगा। क्षुर मुंडन कराऊंगा और स्थूल प्राणातिपात का विरमण करुंगा। श्रमण अकिंचन तथा शील की सौरभ से सुरभित होते हैं, पर मैं वैसा नहीं हूं।

मैं शील की सौरभ के अभाव में चंदनादि की सुगंध से सुगंधित रहूंगा। श्रमण निर्मोही होते हैं, पर मैं मोह-ममता से ग्रसित हूँ। इसके प्रतीक रूप में छत्र धारण करुँगा। श्रमण नंगे पैर होते हैं, पर मैं उपानह (काष्ठ पादुका) पहनूँगा। श्रमण पाप भीरु और जीवों की घात करने वाले आरंभ-परिग्रह से मुक्त होते हैं। सचित्त जल का प्रयोग नहीं करते। पर मैं वैसा नहीं कर पाता अतः सचित्त जल, स्नान और पीने के लिए ग्रहण करुंगा। इस प्रकार मरीचि ने मुनि चर्या में नवीन परिकल्पना से साधु की वेशभूषा एवं मर्यादा का निर्माण किया, और भगवान के साथ ग्राम-नगर में विचरने लगे। भगवान के श्रमणों से मरीचि की पृथक् वेषभूषा को देखकर लोगों के मन में कुतूहल उत्पन्न होता। लोग जिज्ञासुपूर्वक पूछते। मरीचि प्रतिबोध देकर उन्हें भगवान का शिष्य बनाता।

एक बार सम्राट् भरत ने तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से जिज्ञासा की- ''प्रभो! क्या इस परिषद् में कोई व्यक्ति ऐसा है जो आपके समान ही भरत क्षेत्र में तीर्थंकर बनेगा?'' इस पर भगवान ने कहा? ''तुम्हारा पुत्र मरीचि साधु बनकर भगवान महावीर नामक अंतिम तीर्थंकर बनेगा। इससे पूर्व मरीचि त्रिपृष्ठ वासुदेव एवं प्रियमित्र नामक चक्रवर्ती भी बनेगा। इस प्रकार तीन विशिष्ठ उपाधियां- चक्रवर्ती, वासुदेव और तीर्थंकर पद अकेला ही वह प्राप्त करेगा।

भगवान की भविष्यवाणी सुनकर चक्रवर्ती भरत मरीचि के पास पहुँचे और बोले, ''हे मरीचि (त्रिदण्डी) महाराज, आप अंतिम तीर्थंकर बनोगे। अतः मैं आपका अभिनंदन करता हूँ।'' यह सुनकर मरीचि कहने लगा- ''मैं वासुदेव बनूंगा, चक्रवर्ती पद प्राप्त करुंगा और तीर्थंकर होऊंगा। मेरे पिता चक्रवर्ती है, मेरे पितामह तीर्थंकर हैं और मैं अकेला ही

तीन पदवियों को धारण करुंगा। मेरा कुल कितना महान् हैं, उत्तम हैं।" यह कहते हुए वह खुशी में उछलने लगे। एक दिन मरीचि का स्वास्थ्य बिगड़ गया। परंतु उनकी सेवा करने वाला कोई नहीं था। वह सोचने लगा- "मैंने अनेकों को उपदेश देकर भगवान का शिष्य बनाया, परंतु आज मैं स्वयं सेवा करने वाले शिष्य से वंचित हूँ।" स्वस्थ होने पर मैं स्वयं अपना शिष्य बनाऊंगा।

स्वस्थ होने पर कपिल राजकुमार उनके पास आया। कपिल ने कहा- "आप जिस मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं, उसमें धर्म नहीं हैं।" कपिल मरीचि का शिष्य बना। मरीचि ने कृत दोषों की आलोचना किए बिना ही आयु पूर्ण किया।

त्रिपृष्ठ - त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में कुछ संगीतज्ञ उनके राजदरबार में आएं। त्रिपृष्ठ वासुदेव ने अपने सेवकों से कहा- "जब मुझे निद्रा आने लगे तो इन संगीतज्ञों को गाने-बजाने से रोक देना" परंतु सेवक संगीत में इतने मुग्ध हो गए कि उन्होंने वासुदेव को सोते हुए भी नहीं देखा। जैसे ही वासुदेव की निद्रा टूटी उन्होंने पूछा- "संगीत क्यों नहीं रोका गया?" इस पर एक सेवक कहने लगा - "स्वामिन्! मैं संगीत सुनने में इतना तल्लीन हो गया कि मुझे ध्यान ही नहीं रहा। यह सुनकर वासुदेव ने उस सेवक के कानों में गर्म-गर्म शीशा डलवा दिया। भयंकर वेदना से छटपटाते हुए सेवक ने प्राण त्याग दिये। त्रिपृष्ठ भव में इस क्रूर कृत्य के कारण उनकी आत्मा ने निकाचित कर्मों का बंधन किया।

नन्दन - राजकुमार नन्दन के भव में, पच्चीस वर्ष की आयु में संयम ग्रहण किया। एक लाख वर्ष तक निरंतर मासखमण की तपस्या की। ग्यारह लाख साठ हजार मासखमण हुए और तीन हजार तीन सौ तेईस वर्ष तीन मास, उन्नतीस दिन पारणा के हुए। बीस स्थानकों की आराधना करके तीर्थंकर नाम गोत्र का उपार्जन किया।

✧✧

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 अप्रैल से 20 मई 2024 तक

मंगलमय जन्म दिवस

अभिग्रहधारी श्री वेणीचंदजी म.सा.	21 अप्रैल
आचार्य श्री अमरसिंहजी म.सा.	26 अप्रैल

आत्मोद्धारक दीक्षा दिवस

आचार्य श्री अमरसिंहजी म.सा.	26 अप्रैल
मालव केसरी श्री सौभाग्यमलजी म.सा.	27 अप्रैल
स्वामीजी श्री रावतमलजी म.सा.	26 अप्रैल
आचार्य श्री शुभचंदजी म.सा.	03 मई
उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	06 मई
स्वामीजी श्री छगनलालजी म.सा.	10 मई
स्वामीजी श्री जोरावरमलजी म.सा.	10 मई
मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा.	10 मई
उप-प्रवर्तक श्री अमृतमुनिजी म.सा.	10 मई
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	12 मई
उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म.सा.	13 मई
युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	18 मई
स्वामीजी श्री ब्रजलालजी म.सा.	19 मई

पुण्य स्मृति दिवस

संघशास्ता श्री सुदर्शनलालजी म.सा.	25 अप्रैल
आचार्य श्री अमरसिंहजी म.सा.	26 अप्रैल
आचार्य सम्राट् श्री आनंदऋषिजी म.सा.	28 अप्रैल
आचार्य श्री लालचंदजी म.सा.	10 मई
संत श्री जेठमलजी म.सा.	11 मई
आचार्य श्री हुकमीचंदजी म.सा.	12 मई
प्रवर्तक श्री शांतिस्वरूपजी म.सा.	12 मई
आचार्य श्री हस्तमलजी म.सा.	15 मई
आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	19 मई
स्वामी श्री रावतमलजी म.सा.	19 मई

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

तीर्थंकर भगवान

प्रस्तुति - श्री लादूलाल सिंघवी जैन (स्वाध्यायी)

तीर्थंकर पद को प्राप्त करने वाला जीव मनुष्य लोक के 15 कर्मभूमि क्षेत्र में, उत्तम निर्मल कुल में अपनी माता को उत्तम 14 स्वप्न होने के साथ इस भूमण्डल पर अवतरित होता है। तीर्थंकर मतिज्ञान, श्रुतज्ञान व अवधिज्ञान इन तीनों ज्ञान सहित गर्भ में आते हैं। तीर्थंकर के जन्म के समय छप्पन दिक्कुमारियाँ एवं चौसठ इन्द्र आदि देव, देवलोक से आकर मेरु पर्वत के मण्डक वन में जाकर अभिषेख शिला पर जन्मोत्सव हर्ष तथा उल्लास के साथ मनाते हैं। फिर तीर्थंकर के पिता जन्म महोत्सव करके नामकरण संस्कार करते हैं।

तीर्थंकर दीक्षा लेने से पूर्व प्रतिदिन एक करोड़ आठ लाख के हिसाब से एक वर्ष में कुल तीन अरब अठासी करोड़ आठ लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान देते हैं। लोकान्तिकदेव देवलोक से आकर तीर्थंकर प्रभु के वैराग्य की अनुमोदना करते हैं। तब तीर्थंकर तीन करण, तीन योग से सिद्ध भगवान को नमन करके स्वयं दीक्षा ग्रहण करते हैं। दीक्षा ग्रहण करते ही चौथे मनःपर्यव ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। तीर्थंकर दीक्षा के समय एक बार ही लोच करते हैं। तीर्थंकर को दीक्षा के समय इन्द्र एक देव-वस्त्र प्रदान करते हैं। इसके पश्चात् तीर्थंकर के केश, दाढ़ी, रोम, नख आदि अतिशय के कारण नहीं बढ़ते हैं। कुछ काल छद्मस्थ अवस्था में रहकर तपस्या करते हैं। तपस्या में देव, तिर्यंच, मनुष्य सम्बन्धी अनेक प्रकार के उपसर्ग आते हैं। जिन्हें समभाव से सहन करते हैं। छद्मस्थ अवस्था में चार कारणों के अलावा नहीं बोलते हैं एवं न ही धर्म देशना देते हैं। अनेक प्रकार की तपस्या करके चार घनघाती कर्मों का क्षय करते हैं। इसके पश्चात् केवलज्ञान होते ही धर्म देशना देना प्रारम्भ कर देते हैं और साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूप चार तीर्थों की स्थापना करते हैं। तीर्थंकर जीवों का कल्याण करने के लिए धर्म देशना देते हैं। देवता समवशरण की रचना करते हैं, अर्धमागधी भाषा में उपदेश देते हैं, परन्तु अतिशय के कारण सभी उपस्थित श्रोता अपनी-अपनी भाषा में समझ जाते हैं।

तीर्थंकर 34 अतिशय, 35 वाणी के गुण, 64 इन्द्रों के वंदनीय-पूजनीय, 12 गुण व 8 महाप्रतिहार्य सहित, 18 दोष रहित, 1008 लक्षणों से युक्त, केवलज्ञान और केवलदर्शन के धारक, सबके वंदनीय-पूजनीय होते हैं। शेष चार अघातीकर्म आयुष्य कर्म की समाप्ति के पश्चात् ही समाप्त हो जाते हैं। तीर्थंकर की कम से कम अवगाहना 7 हाथ व उत्कृष्ट 500 धनुष होती है। जघन्य आयु 72 वर्ष व उत्कृष्ट आयु 84 लाख पूर्व होती है। प्रत्येक तीर्थंकर के पांच कल्याणक - च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं निर्वाण (मोक्ष) होते हैं।

अढ़ाई द्वीप में कम से कम 20 व अधिक से अधिक 170 तीर्थंकर होते हैं परन्तु तीर्थंकर एक समय में एक क्षेत्र में एक ही होते हैं। एक कालचक्र में दो चौबीसी होती है। एक अवसर्पिणी काल में एवं दूसरी उत्सर्पिणी काल में। तीर्थंकर का जन्म तीसरे तथा चौथे आरे में ही होता है।

तीर्थंकर को प्रथम भिक्षा देने वाले के घर पर पाँच दिव्य प्रकट होते हैं। ये पाँच दिव्य- वसुधारा (धन) की वृष्टि, अचित पुष्पों की वर्षा, बहुमूल्य वस्त्रों की वर्षा, आकाश में देवदुंदुभि का निनाद एवं आकाश में अहोदानं-अहोदानं की उद्घोषणा होती है। प्रथम भिक्षा दाता जघन्य उसी भव में, मध्यम 3 भव में तथा उत्कृष्ट 7-8 भव में मोक्ष जाता है। तीर्थंकर के समचतुरस्र संस्थान व वज्रऋषभनाराच संहनन होता है। शरीर सर्वोत्तम परमाणु से बना होता है। शरीर निरोग रहता है। इनका आहार-निहार अदृश्य होता है। इनके विचरण के 25 योजन तक महामारी, काल, भूखमरी, उपद्रव, अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक विपदाए नहीं होती है। मोक्ष (निर्वाण) कल्याणक के समय तीनों लोकों में क्षण भर के लिए अंधकार हो जाता है।

भगवान के मोक्षगमन करने पर 64 इन्द्रों के आसन कंपायमान होते हैं फिर से अवधिज्ञान से देखकर दुःखी होकर आते हैं और अन्तिम संस्कार क्रिया देवों के साथ मिलकर करते हैं। ये दाह संस्कार के पश्चात् परिनिर्वाण महोत्सव मनाते हैं। सभी तीर्थंकरों के अनेक गणधर केवलज्ञानी, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका आदि आज्ञा एवं शासन में चलने वाले होते हैं। इस अवसर्पिणी काल में इस चौबीसी के चौसठ समवसरण लगे हैं। तीर्थंकरों की स्तुति लोगस्स के पाठ से की जाती है, जिसके चार पद शाश्वत व तीन पद अशाश्वत हैं, शकेन्द्र नमोत्थुणं के पाठ से स्तुति करते हैं। ऐसे तीर्थंकर भगवान को मैं मन-वचन-काया से वंदना करता हूँ।

❖❖

भगवान महावीर की अद्भुत करूणा एवं वात्सल्य भाव

- श्री पदमचंद गांधी जैन, जयपुर (राजस्थान)

जिनके हृदय में संसार के प्रत्येक प्राणी के प्रति अपूर्व करुणा हो, दया हो, वात्सल्य भाव हो जो सभी के लिए कल्याण का पथ प्रशस्त करते हो, वे ही वीतरागी बनते हैं। जिनका दुःख जब स्वयं को लगने लगे, जो दूसरों की पीड़ा का अनुभव स्वयं करने लगे वही वात्सल्य भाव है, करुणा भाव है। आचरण करने योग्य आठ सम्यक् तत्त्व के आचरण में सातवां तत्व 'वात्सल्य भाव' है। जिस प्रकार माता का पुत्र के प्रति वात्सल्य भाव आता है, उसी प्रकार प्रत्येक प्राणी पर सम्यक् दृष्टि का निःस्वार्थ वात्सल्य बन जाये तो प्रत्येक आत्मा के साथ अनन्य भाव पैदा किए जा सकते हैं। स्व-पर का भेद भूलकर सबके साथ आत्मवत् व्यवहार करें, वही वात्सल्य भाव है। वात्सल्य भाव से ही करुणा, मैत्री, दया, क्षमा, अहिंसा का उदय होता है। प्रभु महावीर का वात्सल्य भाव चाहे वो पूर्व भव के हो या बाल्यकाल, साधनाकाल के - सभी अद्भुत है।

जन्म से पूर्व के २७ भवों में से प्रथम भव नयसार का था, जिसमें राजा के आदेश से वन में लकड़ियाँ काटते समय एक मुनि-मंडल रास्ता भटकने से जंगल में आ गया। उन्हें देखकर भक्तिपूर्वक निर्दोष आहार/सुपात्र दान दिया और उन्हें रास्ता बताया। मुनि के उद्बोधन से उन्हें सम्यक्त्व की प्राप्त हुई। सम्यक्त्व प्राप्ति उनकी श्रद्धा, समपर्ण एवं अहोभाव का ही परिणाम था। चौबीसवें भव में प्रभु महावीर का जीव छत्रा नगरी के महाराज जितशत्रु के पुत्र नन्दन के रूप में था, जिन्होंने २४ लाख वर्ष तक सांसारिक जीवन व्यतीत किया तत्पश्चात् राजश्री-वैभव आदि का परित्याग कर, दीक्षा ग्रहण की, निरन्तर मास-मास की तपस्या करते रहे तथा कर्मशूर से धर्मशूर बनने की कहावत चरितार्थ की। अपने संयम काल में उन्होंने ग्यारह लाख साठ हजार मास खामण किए। तप-संयम और अर्हत् आदि बीसों ही बोलों की उत्कृष्ट आराधना-साधना करते हुए उन्होंने तीर्थंकर नाम कर्म बन्ध कर लिया। यह भव अपूर्व दया करुणा से ओत-प्रोत था।

महावीर जब आठ वर्ष की बाल्यावस्था में अपने साथियों के साथ राजभवन के 'संकुली' उद्यान में खेल रहे थे, तब देवाधिपति शुक्र ने देवों के समक्ष उनकी निर्भयता एवं निडरता की प्रशंसा की, तब एक देव ने उनकी परीक्षा हेतु विषधर का रूप बनाकर वृक्ष पर लिपट कर फुफकारने लगा। खेलने वाले सभी बच्चे डर कर भागने लगे, तब प्रभु ने कहा- "तुम भागो मत, इसे पकड़ कर दूर छोड़ आते हैं, तब बच्चों ने कहा- यह विषधर है, इसके काटने से आदमी मर जाता है।" प्रभु के मन में प्रत्येक जीव के प्रति वात्सल्य भाव था, अपने छोटे-छोटे कोमल हाथों से विषधर को ऐसे पकड़ लिया, जैसे रस्सी को उठाते हैं। सर्प को उठाकर उन्होंने जंगल में छोड़ दिया। सर्प को छोड़कर जब बच्चे पुनः खेलने लगे तब दूसरे देव ने एक बालक का रूप धारण किया। महावीर ने उसे दौड़ में पराजित कर वृक्ष को छू लिया तब देव रूपी बालक की पीठ पर बैठ घोड़े की सवारी करने लगे, तब उसका अपहरण कर विकराल रूप धारण कर वर्धमान को भयभीत करने लगा। इस दृश्य को देखकर सभी बालक डर गये, तब महावीर ने अपने ज्ञान-ध्यान से जाना कि यह मायावी जीव हमसे वंचना करना चाहता है तब उसे सबक सिखाने के लिए हल्का सा मुष्ठि प्रहार किया और वह चीख उठा और गेंद की तरह दबकर वामन हो गया। वे चाहते तो उसे मार भी सकते थे लेकिन करुणा, अनुकम्पा, वात्सल्य भाव से उन्होंने ऐसा नहीं किया। एक समय राजा का हाथी मदमस्त होकर प्रजा को कष्ट देने लगा तो बालक वर्धमान तुरन्त खाली हाथों से भागे और प्रेम एवं करुणा से हाथी को वश में कर लिया। इस प्रकार महावीर की वीरता, धीरता, सहिष्णुता, वात्सल्य भाव से बाल्यावस्था भी अनुपम थी।

जब प्रभु महावीर ने चारित्र धर्म (संयम) ग्रहण किया तब उन्हें मनःपर्यवज्ञान प्राप्त हो गया। इससे वे अढ़ाई द्वीप और दो समुद्र तक के समनस्क प्राणियों के मनोगत भावों को जानने लगे। प्रभु संयम ग्रहण कर जब विदा हुए तब उन्होंने अभिग्रह धारण कर निश्चय किया कि "आज से साढे बारह वर्ष पर्यन्त जब तक केवलज्ञान प्राप्त न हो तब तक मैं देह की ममता छोड़कर रहूँगा अर्थात् इसी बीच में देव मनुष्य या तिर्यंच जीवों की ओर से जो भी उपसर्ग, कष्ट उत्पन्न होंगे, उनको समता भाव से सम्यक् रूपेण सहन करुँगा।"

प्रभु जब सर्वस्व दान कर संयम के मार्ग पर आगे बढ़ने लगे तब केवल मात्र उनके पास देवदूष्य वस्त्र ही था। जब वे

ध्यान में खड़े थे तब एक दीन-हीन ब्राह्मण उनसे कुछ मांगने आया, तब प्रभु ने कहा- "हे देवानुप्रिय! मैं सब कुछ त्याग चुका हूँ, अब मेरे पास देने को कुछ शेष नहीं है। उसी समय ब्राह्मण ने कहा- आप मुझे आपका यह वस्त्र दे दीजिए।" प्रभु की अन्तस्थः करुणा एवं वात्सल्य भाव से उस ब्राह्मण को आधा फाड़कर देवदूष्य वस्त्र भी दे दिया। यही उनका करुणा एवं वात्सल्य भाव था।

जब प्रभु विहार करके अस्थिग्राम पहुँचे तब वहाँ शूलपाणी के यक्षायतन में लोगों के मना करने पर भी वहाँ परीषह सहने तथा यक्ष को प्रतिबोध देने ठहरे। उसी रात्रि में शूलपाणी ने भंयकर अट्टहास किया जिससे पूरा जंगल काँप उठा लेकिन महावीर ध्यानस्थ रहे। उसने हाथी का रूप बनाया, महावीर को रौंधा, पिशाच का रूप बनाया, तीक्ष्ण नाखुनों से नोंचा, सर्प बनकर डंसा, उन्हें मारा-पीटा, इस प्रकार रात्रि के चारों प्रहर में बहुत सारे उपसर्ग दिए लेकिन प्रभु शान्त भाव में रहे। अंततः शूलप्राणी हार गया प्रभु के चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगी। प्रभु ने उसे क्षमा कर वात्सल्य भाव से उद्‌बोधन दिया।

मौराक सन्नीवेश में प्रभु कनखल नामक आश्रम पहुंचे। 'वाचाला' पहुंचने के लिए रास्ते में ग्वालों ने निवेदन किया जिस मार्ग पर आप बढ़ रहे हैं, उसमें प्राणाहारी संकट का भय है। इस पथ पर चण्डकौशिक नामक दृष्टिविष वाला भंयकर सर्प रहता है। प्रभु ने उनकी बात नहीं मानकर तथा करुणा भाव से प्रतिबोध से प्रतिबुद्ध करने हेतु वहाँ चले गये। (पूर्व भव में चण्डकौशिक एक तपस्वी मुनी थे, जिसके पांव के नीचे एक मैंढ़क दब कर मर गया। शिष्य द्वारा प्रायश्चित लेने के लिए गुरु को कहा। क्रोधवश उस तपस्वी ने शिष्य को मारने के लिए तत्पर हुआ और अंधेरे में खम्भे से टकराकर कालधर्म को प्राप्त किया।) उस समय पूर्व भव का वैर जागृत होने से चण्डकौशिक ने यातनाएं देना प्रारम्भ कर दिया और आक्रमण कर दिया। कई तरह की यातनाएं देने के बाद प्रभु के पांव को डंस लिया, जिससे उनके अंगूठे से वात्सल्य भाव से दूध की धारा फूट पड़ी और प्रभु ने कहा- "चण्डकौशिक समझो इस तरह क्रोध में जहर डालने से क्या लाभ ? समेट लो अपने को।" ऐसा सुनते ही चण्डकौशिक को जातिस्मरण ज्ञान हो गया और वह शान्त हो गया। यह था- प्रभु का परम वात्सल्य भाव।

जब प्रभु नौका विहार कर रहे थे, उस समय त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में जिस सिंह को मारा था उसी जीव ने वैर भाव के कारण सुदंष्ट्र देव के रूप में नौकाहरण कर तुफान खड़ा कर दिया लेकिन उस देव को भी अनुकम्पा भाव से क्षमा कर नौका को पार लगायी। एक बार प्रभु अपने कर्मों का क्षय करने अनार्य क्षेत्र में पहुंचे। वहाँ पर अनार्य लोग दण्ड, मुष्ठि, भाला, पत्थर तथा ढेलों से प्रहार करते हुए तथा अट्टहास करते हुए उनके शरीर को क्षत-विक्षत कर दिया उन्हें गेंद की तरह उछाल-उछाल कर पटका। फिर भी भगवान् शरीर से ममत्व रहित होकर बिना किसी प्रकार की इच्छा एवं आकांक्षाओं के संयम साधना में स्थिर रहे तथा शान्तिपूर्वक कष्ट सहे लेकिन प्रतिशोध का भाव नहीं लाये। जब प्रभु विहार करते हुए 'शालिशीर्ष' ग्राम में पधारे तब कटपूतना नाम की व्यंतरी ने भगवान को ध्यानस्थ देखा तो पूर्व जन्म का वैर जागृत हुआ। वह परिव्राजिका के रूप में बिखरी जटाओं से मेघ-धारा की तरह कड़कड़ाती सर्दी में शीतल जल की बौछार करती रही। भगवान की सहिष्णुता तथा क्षमता देखकर वह हार गयी, उसने क्षमायाचना करके वन्दना की।

गौशालक नियतिवादी शिष्य होते हुए भी वैचारिक मदभेद रखता था। गौशालक ने भगवान के वचन को मिथ्या प्रमाणित करने के लिए पौधों को उखाड़ कर एक किनारे पर फैंक दिया थोड़ी देर मे वर्षा हुई और उन्हीं में से एक तिल का पौधा पुनः जम कर खड़ा हो गया। वहां से प्रभु कूर्मग्राम आये वहां पर 'वैश्यायन' नाम का तापस आतापना ले रहा था। धूप से संतप्त होकर जूएं नीचे गिर रही थी, उन्हें उठाकर पुनः वह जटाओं में डाल रहा था, तब गौशालक ने देखा तो तापस को बोला- "अरे! तू कोई तपस्वी है या जूंओं का शय्यातर।" बार-बार बोलने पर तापस ने तेजोलब्धि गोशालक को भस्म करने के लिए छोड़ दी तब प्रभु ने उसकी रक्षा के लिए अनुकम्पा कर, शीत लेश्या से तेजो लेश्या को शान्त कर दिया तथा गोशालक की रक्षा की।

जब प्रभु दृढ़भूमि की तरफ पैढ़ाल नामक उद्यान के पोलास नामक चैत्य में अष्टम तप के साथ इन्द्रियों का गोपन कर एक रात्रि की पड़िमा में स्थित हुए तो उनके धैर्य और साहस की शकेन्द्र ने अपनी देवसभा के मध्य अनूठी प्रशंसा की तो संगम देव को उनकी प्रशंसा गले नहीं उतरी और जहां प्रभु ध्यानस्थ थे, वहां आकर एक से बढ़कर एक उपसर्गों का जाल बिछा दिया। प्रलोभन के मनमोहक दृश्य उत्पन्न किए। गगन मण्डल से तरुणी व सुन्दर अप्सराएँ उतरी और

हाव-भाव करती हुई प्रभु से कामयाचना करने लगी, पर प्रभु पर कोई असर नहीं हुआ तब संगम देव ने प्रलयकारी धूल वर्षा, चीटियों से शरीर को कटवाना, मच्छरों के डांस से खून पिलवाना, दीमक द्वारा शरीर चटवाना, बिच्छुओं से डंक लगवाना, नेवले द्वारा मांस खण्ड विखंडित करवाना, हाथी द्वारा सूण्ड में उछलवाना, चूहों द्वारा कटवाना, पैरों के बीच में आग लगाकर खीर पकवाना इत्यादि २०-२० प्रकार के उपसर्ग दिए, चोरी का आरोप लगवाया, उन्हें पिटवाया ऐसे छह मास तक निरन्तर उपसर्ग दिए। लेकिन प्रभु संगम के प्रति क्रोधित नहीं हुए अपितु संगम देव पर समताभाव, अनुकम्पाभाव से वात्सल्यभाव ही प्रकट किया।

विचरण करते हुए प्रभु जब कौशाम्बी पधारे वहाँ यमुना तट पर ध्यानस्थ खड़े थे, तो उन्होंने देखा कि मानव-मानव में जन्मतः कोई अन्तर नहीं है, किन्तु बलवान, समर्थवान, दीन-हीन असमर्थों को क्रीत दास बनाकर उनको मनमानी पीड़ा देता है, यह मानवता नहीं है। इस विचार से उन्होंने कठोर अभिग्रह स्वीकार कर लिया। अभिग्रह फलीभूत करने हेतु नगर में ५ माह २५ दिन तक आहार हेतु गये लेकिन अभिग्रह फलीभूत नहीं हुआ। एक दिन धन्नाश्रेष्ठी के घर गये वहां पर क्रीत दासी जो एक राजकुमारी थी, वह पिता के युद्ध में हारने के कारण पकड़ी गई तथा दासप्रथा के कारण धन्ना सेठ को बेच दी गई तथा धन्नासेठ द्वारा उसे घर ले जाने पर सेठानी मूला ने उसे सपत्नी के कल्पित भय से तहखाने में बन्द कर दिया, उसका सिर मुण्डवा दिया, हाथ में हथकड़ी पाँव में बेड़िया डाल दी गयीं तथा पीहर चली गयी। तीन दिन की भूखी-प्यासी चन्दना सूपड़े में उड़द के बाकले लिए अपने धर्म पिता के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। उस समय अचानक प्रभु को द्वार पर देख पुलकित हुई लेकिन जब प्रभु यह सब देखकर जाने लगे तो चन्दना के नयनों से नीर बह चला, प्रभु ने मुड़कर देखा तो कठोर अभिग्रह फलीभूत होते देख चन्दना क्रीत दासी से भिक्षा ग्रहण की। आकाश में देवदुन्दुभी बजी, पंच दिव्य प्रकट हुए, चन्दना की बेड़ियाँ आभूषणों में बदल गयी, उसका दासित्व छूट गया। यह प्रभु की अनुकम्पा थी, इससे प्रभावित होकर कोशाम्बी नरेश ने पूर्णतः दासप्रथा का अन्त कर दिया। चन्दना प्रभु महावीर की प्रथम शिष्या बन गयी तथा ३६००० आर्यिकाओं के साथ संघ का नेतृत्व करने लगी।

जिस समय प्रभु कुमार जंभियग्राम पधारे वहाँ से छम्माणी ग्राम गये तथा ध्यानस्थ खड़े थे, उस समय एक ग्वाला अपने बैलों सहित आया और वहाँ छोड़कर उनका ध्यान रखने का कहकर चला गया। वापस आने पर बैलों को वहाँ नहीं देखकर उसने पूछा- मेरे बैल कहाँ हैं, उत्तर नहीं मिलने पर उस ग्वाले ने महावीर के दोनों कानों में कांस नामक घास की शलाकाएं डाली और पत्थर से ठोक कर कान के बराबर कर दी। प्रभु को अत्यन्त वेदना हो रही थी तदुपरान्त भी वे इस वेदना को पूर्वसंचित कर्म का फल (१८वां भव त्रिपृष्ठ वासुदेव के जीव द्वारा शय्यापालक के कानों में गरमागरम शीशा डलवाना) समझ कर शान्त और प्रसन्न मन से सहते रहे। ग्वाले के प्रति किसी तरह के प्रतिशोध का भाव नहीं था।

राजगृही के गुणशील उद्यान में जब प्रभु महावीर पधारे तब राजा श्रेणिक ने अर्जुन माली के उपद्रव एवं छह पुरुष एवं एक स्त्री के वध से बचने के लिए नगर के सभी दरवाजे बन्द करवा दिए, तब प्रभु दर्शन हेतु सेठ सुदर्शन अनुनय-विनय से आज्ञा पाकर निकले। पैदल चलते-चलते रास्ते में अर्जुन माली अपना मुद्गर घुमाता हुआ उन्हें मारने हेतु आने लगा, तब सुदर्शन संथारा ग्रहण कर जमीन पर ही बैठ गये। ज्यों ही यक्ष रूप में अर्जुन माली प्रहार करने लगा उनके हाथ रूक गये। यक्ष निकल कर चला गया और वह जमीन पर गिर पड़ा। सचेत होते ही सेठ सुदर्शन उन्हें महावीर के पास लेकर पहुंचे। प्रभु ने करुणा एवं वात्सल्य भाव से अर्जुन माली जैसे हत्यारे जिसने ५ माह १३ दिन में ११४१ मानव हत्याएँ की, उसके प्रति भी वात्सल्य भाव रखा तथा उन्होंने "पाप से घृणा करो पापी से नहीं" कहावत को चरितार्थ करते हुए अर्जुन माली को दीक्षित किया और अर्जुन माली ने मात्र ६ माह में समता भाव से लोगों द्वारा दी गयी प्रताड़ना-यातनाएं और परिषहों को सह कर सिद्ध-बुद्ध मुक्त हो गये।

इस प्रकार स्पष्ट है प्रभु महावीर का वात्सल्य भाव अद्भुत था। उन्होंने कहा "हे आत्मन्! तू सम्पूर्ण विश्व के साथ वात्सल्य भाव रख। जगत् के प्रत्येक जीव से मित्रवत् व्यवहार कर। जैसा तू व्यवहार चाहता है, दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार कर। दूसरों की पीड़ा को स्वयं में अनुभव कर, इसी से जन कल्याण सम्भव है, यही वात्सल्य है, इसी में करुणा है, क्षमा है और अहिंसा भी निहित है।"

❖❖

विश्व की समस्या और भगवान महावीर के सिद्धांत

- डॉ. श्री अशोकजी के. गादिया जैन, कल्याण (महाराष्ट्र)

करीब ढ़ाई हजार साल पुरानी बात है। ईसा से 599 वर्ष पहले वैशाली गणतंत्र के क्षत्रिय कुण्डलपुर (बिहार) में पिता सिद्धार्थ और माता त्रिशला के यहाँ तीसरी संतान के रूप में चैत्र शुक्ल तेरस को वर्धमान का जन्म हुआ। यही वर्धमान बाद में स्वामी महावीर बना। उनका जन्मदिन भगवान श्री महावीर जन्म कल्याणक (जयंती) के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

भगवान महावीर ने अपने प्रवचनों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पर सबसे अधिक जोर दिया। त्याग और संयम, प्रेम और करुणा, शील और सदाचार 'जियो और जीने दो' भगवान महावीर स्वामी का मूल सिद्धांत है। जीना हमारा अधिकार है, तो जगत के प्राणियों को जीने देना हमारा कर्तव्य है। यही अहिंसा है और मानवता का मौलिक अधिकार है। जब भी कोई इंसान पृथ्वी पर संपूर्ण मानवता के मौलिक अधिकार को छीनने की कोशिश करता है, चाहे वह किसी भी समय और स्थान का हो, तो यह मान लीजिए कि यह शुरुआत है किसी क्रांति की, चाहे घटनाएँ नई हों, या चाहे यह महाभारत हो या रामायण।

कहते है -

जीवन एक TEST है,
खुशी के पलों में REST है।
त्यादा सोचना WASTE है,
इसलिए सबसे एक REQUEST है।
जीयो और जीने दो यही BEST है,
क्योंकि हम खुद ही इस जगत में GUEST हैं।

इस एक सिद्धांत / मंत्र से, विश्व की सभी समस्याओं का निराकरण हो सकता है और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक भेदभाव और शोषण से मुक्ति मिल सकती है। जैन धर्म में अहिंसा, कायरों का शस्त्र नहीं, वीरों का भूषण है।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की मंगल भावना, अहिंसा का अमूल्य विचार है। महावीर स्वामी ने शाकाहार को सर्वश्रेष्ठ आहार कहा है और हर दृष्टि से लाभप्रद बताया। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो भी मांसाहार मनुष्य में हिंसक प्रवृत्ति को जन्म देता है। उच्च रक्त-चाप, मधुमेह, हृदय रोग जैसे गंभीर बीमारियाँ विकसित होती हैं। प्रसिद्ध दार्शनिक, जार्ज बर्नाड शॉ शाकाहारी थे। उनका कहना था मेरा पेट, पेट है कोई कब्रिस्तान नहीं, जहाँ मुर्दों को स्थान दिया जाय। वह जैन मत से अत्यधिक प्रभावित थे। अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करते हुए, उन्होंने कहा था यदि मेरा पुर्नजन्म हो तो भारत में हो और जैन कुल में हो। **'सत्य'** महावीर द्वारा बताया गया महत्वपूर्ण सूत्र है। प्रत्येक व्यक्ति का चिंतन, मनन और विचार सत्य पर आधारित होना चाहिये। सत्य ही मानव को आत्मा से परमात्मा बनने की शक्ति देता है। महावीर के विचार में सत्य एवं अहिंसा से कोई राष्ट्र शांति एवं निर्भयता से प्रत्येक समस्या का समाधान कर सकता है।

महावीर का अनेकांतवाद अथवा स्यादवाद का सिद्धांत भी सत्य पर आधारित है। महावीर ने कहा था कि किसी भी वस्तु या घटना को एक नहीं वरन् अनंत सदृष्टिकोणों से देखने की आवश्यकता है। आज समाज में झगड़ा, विवाद आदि एकांगी दृष्टिकोण को लेकर होता है, यदि विवाद के समस्त पहलुओं को समझा जाय, निथ्या अंशों को छोड़, सत्याशों को पकड़ा जाय तो सम्भवतः संघर्ष कम हो जाय। वैज्ञानिक आइंस्टीन का सापेक्षवाद महावीर के अनेकान्तवाद पर ही टिका है।

आज के युग में, मनुष्य को सबसे अधिक आवश्यकता है, महावीर के अपरिग्रह के सिद्धांतों को समझने की। संग्रह अशांति का अग्रदूत है। कार्ल मार्क्स का साम्यवाद इस रोग की दवा नहीं, क्योंकि हिंसा से हिंसा शांत नहीं होती। महावीर का अपरिगृह का विचार ही, इसकी संजीवनी है जो अमीर गरीब की दूरी कम कर सामाजिक समता स्थापित कर सकती है।

महावीर के उपदेशों में, यदि अचौर्य के सिद्धान्त का अनुकरण किया जाए तो, आज विश्व में व्याप्त भ्रष्टाचार व काले धन पर अंकुश लगाया जा सकता है। महावीर ने,

स्त्रियों को पूर्णतः स्वतंत्र और स्वावलम्बी बताया। आज स्त्रियों के समान अधिकार एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता हेतु महावीर के विचार आज भी सार्थक हैं।

महावीर ने तन-मन की शुद्धि तथा आत्म बल बढ़ाने हेतु, साधना एवं तपश्चर्या पर बल दिया। आज के भौतिकवादी युग में जहाँ खान-पान की अशुद्धता एवं अनियमितता है और जीवन तनावयुक्त है। महावीर द्वारा बताई तप, त्याग एवं साधनामय जीवन-शैली ही समस्याओं का समाधान है। महावीर के सिद्धांत न केवल सामाजिक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में, वरन राजनीति क्षेत्र में भी प्रासंगिक हैं। महावीर का **'अहिंसा'** का दिव्य संदेश, स्वार्थ प्रवृति एवं संकीर्ण मनोवृत्ति को विराम दे सकता है। चुनावी हिंसा और आतंक को रोक सकता है। **'सत्य'** का आचरण घोटालों में लिप्त राजनेताओं एवं नौकरशाहों को राष्ट्रहित की प्रेरणा दे सकता है। **'अचौर्य'** और **'अपरिगृह'** का संदेश, भ्रष्टाचार एवं कालाबाजारी को रोक, सामाजिक विषमता को कम कर सकता है। **'जियो एंव जीने दो'** का सिद्धांत, आपसी बैर भाव और कटुता को कम कर सकता है। महावीर के अनेकान्तवाद के सच्चे प्रयोग से चुनाव में व्याप्त साम्प्रदायिकता एवं कट्टरता को भगाया जा सकता है।

भगवान वर्धमान महावीर के मूल्य एवं संस्कार केवल जैनों की ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवता की धरोहर हैं, जिनको अपनाने से मानव जाति के साथ-साथ ब्रह्मांड के जीवों का कल्याण निश्चित है।

आपको और आपके प्रियजनों को महावीर जन्म कल्याणक (जयंती) की शुभकामनाएँ। ✧✧

चॉकलेट का डिब्बा

- **श्री धर्मीचन्द कांकरिया जैन,** राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस, चेन्नई (तमिलनाडु)

पूरे चार महीने बाद वो शहर से कमाकर गाँव लौटा था। अम्मा उसे देखते ही चहकी। 'आ गया मेरा लाल! कितना दुबला हो गया है रे! खाली पैसे बचाने के चक्कर में ढ़ंग से खाता-पीता भी नहीं क्या? 'बारह घंटे की डयूटी है अम्मा, बैठकर थोड़े खाना है! ये लो, तुम्हारी मनपसंद मिठाई!'- कहकर उसने मिठाई का डिब्बा माँ को थमा दी! 'कितने की है?' 'साढ़े तीन सौ की!' 'इस पैसे का फल नहीं खा सकता था! अब तो अंगूर का सीजन भी आ गया है!' -अम्मा ने उल्हाना दिया। पूरा दिन गाँव-घर से मिलने में बीत गया था! रात हुई, एकांत में उसने बैग खोलकर एक पैकेट निकाला और पत्नी की ओर बढ़ा दिया - 'क्या है ये?' 'चॉकलेट का डिब्बा, खास तुम्हारे लिए!' 'केवल मेरे लिए ही क्यों!' 'अरे समझा करो। सबके लिए तो मिठाई लायी ही है!' 'कितने का है?' 'आठ सौ का!' 'हांय!!' 'विदेशी ब्रांड है!' 'तो क्या हुआ!' 'तुम नहीं समझोगी! खाना, तब बताना!' 'पर घर में और लोग भी हैं। अम्मा, बाबूजी, तीन-तीन भौजाइयां, भतीजे। सब खा लेते तो क्या हर्ज था!'

'अरे पगली, बस चार पीस ही है इसमें, सबके लिए कहाँ से लाता!' 'तो तोड़कर खा लेते!' 'और तुम!' 'बहुत मानते हैं मुझे?' 'ये भी कोई कहने की चीज है!' 'आह! कितनी भाग्यशाली हूँ मैं जो तुम मुझे मिले!' उसकी आँखें चमक उठी -'मेरे जैसा पति बहुत भाग्य से मिलता है!' 'सच है! लेकिन पता है, ये सौभाग्य मुझे किसने दिया है?' 'किसने?' 'तुम्हारी अम्मा और बाबूजी ने! उन्होंने ही तुम्हारे जैसा हट्टा-कट्टा, सुंदर और प्यार करने वाला पति मुझे दिया है! सोचो, तुम्हारे जन्म पर खुशी मनाने के लिए मैं नहीं थी, एक अबोध शिशु से जवान बनने तक, पढ़ाने-लिखाने और नौकरी लायक बनाने तक मैं नहीं थी। मैं तुम्हारे जीवन में आऊं, इस लायक भी उन्होंने ही तुम्हें बनाया!' 'तुम आखिर कहना क्या चाहती हो?' 'यही कि ये पैकेट अब सुबह ही खुलेगा! एक माँ है, जो साढ़े तीन सौ की मिठाई पर भी इसलिए गुस्सा होती है कि उसके बेटे ने उन पैसों को अपने ऊपर खर्च नहीं किया! और वो बेटा आठ सौ का चॉकलेट चुपके से अपनी बीवी को दे, ये ठीक लग रहा है तुम्हें!'

वो चुप हो गया! पत्नी ने बोलना जारी रखा, 'अम्मा-बाबूजी और लोग गाँव में रहते हैं। तुम ही एकमात्र शहरी हो। बहुत सारी चीजे ऐसी होंगी, जो उन्हें इस जन्म में नसीब तो क्या, उनका नाम भी सुनने को नहीं मिलेगा। भगवान ने तुम्हें ये सौभाग्य दिया है कि तुम उन्हें ऐसी अनसुनी-अनदेखी खुशियाँ दो। वैसे कल को हमारे भी बेटे होंगे। अगर यही सब वे करेंगे तो' अचानक उसे झटका लगा। चॉकलेट का डिब्बा वापस बैग में रख वो बिस्तर पर करवट बदल सुबकने लगा! 'क्या हुआ? बुरा लगा सुनकर!'

❖❖

स्वयं के निर्माता : भगवान महावीर

- सौ. शुभांगी मनोजकुमार कात्रेला, निगड़ी, प्राधिकरण, पुणे (महाराष्ट्र)

हिला दे जो तख्त उसे बलवान कहते है।
जो हरले पीर दुःखियों की उसे धनवान कहते है।
मिटा दे जुल्म जगत् से उसे इन्सान कहते है।
लाखों तारे और तिर जाए उसे महावीर कहते है।

तीर्थंकर भगवान महावीर स्वयंभू थे। जो स्वयं के निर्माता स्वयं ही थे। भगवान महावीर का जन्म कल्याणक मनाना या भगवान महावीर को मानना आसान है, लेकिन भगवान महावीर को जानना, भगवान महावीर की मानना बहुत कठिन है। जिन महावीर की हम प्रतिवर्ष जन्म जयंती मनाते हैं उसी महावीर को हम नहीं मानते, और कहते हैं- परमात्मा जानने के लिए हैं कि मानने के लिए । परमात्मा को निहारने के लिए जो विनम्रता की आँखें चाहिए, जो प्रेम की आँखें चाहिए, जो मन के शुभ भाव चाहिए, वो नहीं है हमारे पास । जब तक मन में प्रेम नहीं जागता, जब तक आदमी समर्पण में जीना नहीं जानता, तब तक महावीर को निहारना मुश्किल है। भगवान महावीर ने कहा- **'अप्पा सो परमप्पा'** - आत्मा ही परमात्मा है । जिसने स्वंय को पहचान लिया, उसने परमात्मा को पहचान लिया।

हर कंकर शंकर बन सकता है, यदि कोई बनने वाला हो।
हर पुस्तक शास्त्र बन सकती है यदि कोई पढ़ने वाला हो।
हर राह मंजिल बन सकती है यदि कोई चलने वाला हो।
हर आत्मा परमात्मा बन सकती है यदि कोई बनने वाला हो।

भगवान महावीर प्रभु के जीवन दर्शन के विभिन्न आयामों पर विगत सैंकड़ों वर्षों से निरंतर चिंतक, विद्वद्जनों की लेखनी अविराम गति से गतिशील है, वह धारा अभी तक खंडित नहीं हो पायी है। प्रभु महावीर स्वामी का जीवन उस अथाह सागर के समान है। जिसमें से जितना निकालो, जितना देखो उतना कम है। प्रभु के जीवन की एक-एक घटना अनेक मानवों के लिए मुक्ति का कारण बनी है, बन रही है। प्रभु के हर संदेश से अनेक जीव कर्मों के बंधनों से मुक्त हुए है। प्रभु महावीर एक महान् तीर्थ है, जो स्वयं के निर्माता स्वयं ही है।

महावीर कोई इतिहास नहीं है, वह तो हर पल हमारे हृदय में बसा हुआ एक सुनहरा रूप है। महावीर कोई किस्सा नहीं है, हमारे जीवन को नई रोशनी देने वाला एक स्वर्णिम दीप स्तंभ है।

जैन धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है, जिसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव को भी सर्वश्रेष्ठ माना है। भगवान महावीर प्रभु ने संसार के समस्त जीवों के सुख-दुःख के बारे में गहराई एवं सहानुभूति से सोचा। क्योंकि सत्पुरुषार्थ से प्रत्येक की आत्मा-परमात्मा बन सकती है। किसी भी जाति, वर्ण, पंथ इत्यादि का भेदभाव परमात्म-पद की प्राप्ति में बाधक नहीं है। लोकतंत्र, अनुशासन, संगठन, सामाजिक संबंधों के बारे में भगवान महावीर के विचारों, तत्त्वों की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही कायम है, जितनी कि उस समय की जनता के लिए हितकारक थी।

महावीर ने स्वयं की बात का कभी आग्रह नहीं किया क्योंकि उनका मानना था कि जब और जहाँ भी आग्रह को पनपने का मौका मिलेगा, वहाँ हिंसा की घुसपैठ शुरु हो जाएगी। भगवान कहते थे, **'अहा सुहं देवाणुप्पिया'** जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो । **'पन्ना समिक्खए धम्मं'** प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करो । **'मा पडिबंधं करेह'** परन्तु धर्माचरण में प्रमाद मत करो। उनके आचरण से हम सीख सकते हैं कि उन्होंने अपने मत, विचार को दूसरों पर थोपे नहीं। भगवान महावीर स्वामी ने अनेकान्त का अमोघ मंत्र दिया, उनकी शब्दावली का सबसे अनमोल शब्द है- सम्यक्, जिसका अर्थ है सही। भगवान महावीर अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह - इन पाँच सिद्धान्तों पर धर्म के महल को खड़ा किया। ये मूल पाँच अणुव्रतों/महाव्रतों में ही जीवन का सार समाया हुआ है।

भगवान महावीर ने कोई नया धर्म नहीं चलाया, धर्म की स्थापना नहीं की, उद्घाटन किया है। महावीर ने धर्म को नहीं, धर्म में खोई आस्था को प्रस्थापित किया। बस लक्ष्य निर्धारित, मंजिल का पता किया और विकट साधना पथ पर आरुढ़ होकर कदम बढ़ाते चले गये। **'बुध्दाणं-बोहियाणं, तिण्णाणं-**

-तारयाणं, जिणाणं-जावयाणं।' खुद जगे और दूसरों को भी जगया। भगवान महावीर ने निज में जिन को पा लिया था। निज ही तो जिन हैं। दोनों में ध्वनि वही है, केवल निज के 'ज' को आगे लाना है और 'न' को पीछे कर देना हैं और जब निजत्व में जिनत्व जग जाता है तब अनंत-अनंत काल का सोया हुआ देवत्व प्रकट हो ही जाता है। भगवान महावीर खुद जगे और दूसरों को जगाया। खुद संसार सागर से पार हुए औरों को पार होने का महामार्ग भी बताया। काम, क्रोध आदि विकारों से मुक्ति पाकर खुद बन्धनों से मुक्त हुए और दूसरों को बंधन मुक्त होने की कला सिखाई। **'इच्छा निरोध स्तपः।'** इच्छा रूपी मन का घोड़ा जो बेलगाम दौड़ता है, उसे लगाम लगाना ही नियंत्रण है।

भगवान महावीर वैज्ञानिक युग के सबसे पहले वैज्ञानिक थे। उनका हर एक संदेश-उपदेश विज्ञान की भाषा है। हर सूत्र मात्र आत्मशुद्धि का सोपान ही नहीं है अपितु शारीरिक स्वस्थता, पारिवारिक आनंद, निरोगी काया, शुद्ध विचार, संयमित जीवन इत्यादि अनेकों लाभ उसके आचरण में समाये हुए हैं। उन्होंने मानव मन को गहराई से स्पर्श किया है। उन्होंने अपनी बात किसी पर थोपी नहीं बल्कि हर बात को समझाया और उसके हर पहलू से परिचय करवाया। भगवान महावीर उदारता और विराटता के पक्षधर थे। संकीर्णता में जीना उन्हें कुबूल नहीं था। क्योंकि संकीर्णता में जीने वाला व्यक्ति अनासक्ति के धरातल पर आरुढ़ नहीं हो पाता, वह आसक्ति में ही उलझा रहता है और आसक्ति ही तमाम अशुभ कर्मों की जननी है। आज जरुरत है हम भगवान महावीर की उदारता और विराटतावादी भावना को समझें। भगवान महावीर ने कहा है- **'सद्धा परम दुल्लहा।'**- श्रद्धा परम दुर्लभ है। श्रद्धा ही भक्ति का मूल्य है। जप, तप, संयम, ध्यान सब के मूल में श्रद्धा का होना अत्यंत आवश्यक है। श्रद्धा के साथ सब प्राणवान है। भगवान महावीर के भक्त बनना है तो हमें विभाव से स्वभाव में आना चाहिए ।

तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस आज हम सबको, जीने की और आत्म-विजय की प्रेरणा देता हैं। भगवान महावीर की जयंती मानवता की जन्म जयन्ती है, हमें मानवीय सुगंध को विस्तारित करते हुए, समाज में जो विभिन्न समस्याएँ है, उन्हें सुलझाने के लिये संगठित होकर मदद करके, भगवान महावीर के **'जीओ और जीने दो'** के सिद्धांत को आत्मसात् करके धर्म का मार्ग प्रशस्त करना है। कल्याणक कलियुग के क्लेश का नाश करने वाला होता है। आज हमें साम्प्रदयिक कटुता को भी त्यागना है। ❖❖

आइए 'पक्षियों' से कुछ सीखें

रात को कुछ नहीं खाते।
रात को घूमते नहीं।
अपने बच्चे को सही समय पर सिखाते हैं।
ठूंस-ठूंस के कभी नहीं खाते।
आपने कितने भी दाने डाले हों,
थोड़ा खा के उड़ जाएंगे, साथ कुछ नहीं ले जाते।
रात होते ही सो जाएंगे, सुबह जल्दी जाग जाएंगे, गाते-चहकते उठेंगे।
अपने शरीर से खूब काम लेते हैं।
रात के सिवा आराम नहीं करते।
उनकी तरह परिश्रम करने से हृदय, किडनी, लीवर के रोग नहीं होते।
अपना आहार कभी नहीं बदलते।
बीमारी आई तो खाना छोड़ देंगे, तभी खाएंगे जब वे ठीक हो जाएंगे।
अपने बच्चे को भरपूर प्यार देंगे।
प्रकृति से उतना ही लेते हैं, जितनी जरूरत है।

बंद करे बोन चाईना की मांग

- श्री भद्रेश कुमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

ऐसे बर्तन आज कल हर घर में देखे जा सकते है, इस तरह की खास क्रॉकरी जो सफेद, पतली और अच्छी कलाकारी से बनाई जाती है, बोन चाइना कहलाती है। इस पर लिखे शब्द बोन का वास्तव में सम्बंध बोन (हड्डी) से ही है। इसका मतलब यह है कि आप किसी गाय या बैल की हड्डियों की सहायता से खा-पी रहे हैं। बोन चाइना एक खास तरीके का पॉर्सिलेन है जिसे ब्रिटेन में विकसित किया गया और इस उत्पाद को बनाने में बैल की हड्डी का प्रयोग मुख्य तौर पर किया जाता है। इसके प्रयोग से सफेदी और पारदर्शिता मिलती है।

बोन चाइना इसलिए महंगा होती है क्योंकि इसके उत्पादन के लिए सैकड़ों टन हड्डियों की जरुरत होती है, जिन्हें कसाईखानों से जुटाया जाता है। इसके बाद इन्हें उबाला जाता है, साफ किया जाता है और खुले में जलाकर इसकी राख प्राप्त की जाती है। बिना इस राख के चाइना कभी भी बोन चाइना नहीं कहलाता है। जानवरों की हड्डी से चिपका हुआ मांस और चिपचिपापन अलग कर दिया जाता है। इस चरण में प्राप्त चिपचिपे गोंद को अन्य इस्तेमाल के लिए सुरक्षित रख लिया जाता है। शेष बची हुई हड्डी को 1000 सेल्सियस तापमान पर गर्म किया जाता है, जिससे इसमें उपस्थित सारा कार्बनिक पदार्थ जल जाता है। इसके बाद इसमें पानी और अन्य आवश्यक पदार्थ मिलाकर कप, प्लेट और अन्य क्राकरी बना ली जाती है और गर्म किया जाता है। इस तरह बोन चाइना अस्तित्व में आता है। 49 प्रतिशत हड्डियों की राख 15 प्रतिशत चीनी मिट्टी और बाकी चाइना स्टोन। खास बात यह है कि बोन चाइना जितना ज्यादा महंगा होगा, उसमें हड्डियों की राख की मात्रा भी उतनी ही अधिक होगी।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या शाकाहारी लोगों को बोन चाइना का इस्तेमाल करना चाहिए? या फिर सिर्फ शाकाहारी ही क्यों, क्या किसी को भी बोन चाइना का इस्तेमाल करना चाहिये। लोग इस मामले में कुछ तर्क देते है। जानवरों को उनकी हड्डियों के लिए नहीं मारा जाता, हड्डियां तो उनको मारने के बाद प्राप्त हुआ एक उप-उत्पाद है। लेकिन भारत के मामले में यह कुछ अलग है। भारत में भैंस और गाय को उनके मांस के लिए नहीं मारा जाता क्योंकि उनकी मांस खाने वालों की संख्या काफी कम है। उन्हें दरअसल उनकी चमड़ी और हड्डियों के मारा जाता है। भारत में दुनियाँ की सबसे बड़ी चमड़ी मंडी है और यहां ज्यादातर गाय के चमड़े का ही प्रयोग किया जाता है। हम जानवरों को उनकी हड्डियों के लिए भी मारते है। देखा जाए तो वर्क बनाने का पूरा उद्योग ही गाय को सिर्फ उसकी आंत के लिए मौत के घाट उतार देता है। आप जनवरों को नहीं मारते, लेकिन आप या आपका परिवार बोन चाइना खरीदने के साथ ही उन हत्याओं का साझीदार हो जाता है, क्योंकि बिना मांग के उत्पादन अपने आप ही खत्म हो जायेगा।

चाइना सैट की परम्परा बहुत पुरानी है और जानवर लम्बे समय से मौत के घाट उतारे जा रहे हैं। यह सच है, लेकिन आप इस बुरे काम को रोक सकते हैं। इसके लिए सिर्फ आपको यह काम करना है कि आप बोन चाइना की मांग करना बंद कर दें। - *फेसबुक से साभार* ❖❖

रिश्तो में खटास मत आने दो।

पानी ने दूध से मित्रता की और उसमें समा गया, जब दूध ने पानी का समर्पण देखा तो उसने कहा मित्र तुमने अपने स्वरुप का त्याग कर मेरे स्व रुप को धारण किया है। अब मैं भी मित्रता निभाऊंगा और तुम्हे अपने मोल बिकवाऊंगा दूध बिकने के बाद जब उसे उबाला जाता है तब पानी कहता है - 'अब मेरी बारी है मै मित्रता निभाऊंगा और तुमसे पहले मैं चला जाऊँगा। दूध से पहले पानी उड़ता जाता है जब दूध मित्र को अलग होते देखता है तो उफन कर गिरता है और आग को बुझाने लगता है, जब पानी की बूंदे उस पर छींटककर उसे अपने मित्र से मिलाया जाता है तब वह फिर शांत हो जाता है पर इस अगाध प्रेम में थोड़ी सी खटास नीम्बू की दो चार बूँद डाल दी जाए तो दूध और पानी अलग हो जाते हैं थोड़ी सी मन की खटास अटूट प्रेम को भी मिटा सकती है। ❖❖

शराब की पार्टी - कहानी

- श्री नेकराम सिक्योरिटी गार्ड, मुखर्जी नगर, दिल्ली

सूरज, सुरेश, रमन तीनों दोस्तों ने अलग से समीर को पार्टी करने के लिए कहा था। देख समीर तेरे जन्मदिन पर शराब की बोतले खुलेंगी जमकर डांस होगा। सूरज के दो फ्लैट है, एक फ्लैट खाली पड़ा है, सूरज वहीं पार्टी की व्यवस्था कर देगा। दोपहर 12:00 बजे पार्टी शुरू करेंगे। शाम तक पार्टी चलेगी, यह बात समीर को दो दिन पहले ही सुरेश ने बता दी थी।

समीर ने घड़ी में देखा तो दोपहर के ग्यारह बज चुके थे। समीर माँ के नजदीक आकर कहने लगा, मैं जानता हूँ शाम को पापा मेरे लिए केक लेकर आएंगे। हर साल आप मेरा जन्मदिन मनाते आ रहे हो, लेकिन अब मैं बड़ा हो चुका हूँ, मेरे दोस्त भी बड़े हो चुके हैं। माँ ने समीर को खुश रखने के लिए कहा- तुम अपने दोस्तों को पार्टी देना चाहते हो? मैं सब जानती हूँ। मैं तुम्हें एक हजार रुपए दे रही हूँ, दोस्तों के साथ तुम पार्टी कर सकते हो। समीर का चेहरा उतरा देख माँ ने एक हजार रुपए और देते हुए कहा - 'अब तो ठीक है, पूरे दो हजार रुपए तुम्हें मिल चुके हैं।'

समीर को याद आया सुरेश ने कहा था पूरे पाँच हजार रुपए मांगना अपनी माँ से, तभी हम खुलकर पार्टी कर सकते हैं। समीर ने जिद्द करते हुए माँ को बताया मुझे पूरे पाँच हजार रुपए चाहिए। हम सब दोस्त खुलकर इंजॉय करेंगे, खूब खाना-पीना होगा। तब माँ ने चिंता भरे स्वर में कहा- 'समीर बेटा शाम को पापा भी तेरे जन्मदिन पर तेरे लिए तोहफा लाएंगे। समीर ने गुस्से से कहा इसका मतलब तुम अपने बेटे से प्यार नहीं करती हो, तुम मुझे पाँच हजार रुपए दे दो यह बात पिताजी को मत बताना।

माँ ने पाँच हजार रुपए देते हुए समीर से कहा - 'इन पैसों का गलत इस्तेमाल नहीं होना चाहिए, माँ का चेहरा थोड़ा उतर सा गया था, लेकिन समीर का ध्यान कहीं और ही था। समीर ने घड़ी में देखा तो 12 बजने वाले हैं। समीर ने बाइक निकाली हेलमेट पहना, इतने में सुरेश का कॉल आया, सुरेश ने कहा - 'हाँ समीर कहाँ पर हो? घर से पाँच हजार रुपए मिले कि नहीं मिले? 'समीर ने सुरेश को बताया मैं पहले ठेके जाऊंगा वहां से शराब की बोतलें, खाने-पीने का सामान लेकर तुम्हारे पास अभी 10 मिनट में पहुँचता हूँ। एक घंटे के बाद सुरेश ने सूरज से कहा - 'दोपहर का एक बज चुका है समीर अभी तक नहीं आया।' रमन ने कॉल मिलाया मगर समीर का फोन स्विच ऑफ जा रहा था, सुरेश ने घड़ी में देखा तो दोपहर के दो बज गए। रमन ने सुरेश को कहा शराब की दुकान तो पास में ही है, इतना समय समीर को कैसे लग रहा है, फोन भी स्विच ऑफ जा रहा है। घड़ी देखते-देखते तीनों दोस्तों की शाम हो गई, तीनों आपस में बोले समीर ने हमें धोखा दिया है।

शाम के 6:00 बज चुके थे, समीर के तीनों दोस्त समीर के घर चल पड़े, यह पता लगाने के लिए कि समीर घर पर है कि नहीं। समीर के घर आस-पड़ोसी जमा हो चुके थे। कुछ रिश्तेदार भी आ चुके थे, केक की तैयारी हो चुकी थी। तभी समीर की माँ ने सूरज, सुरेश, रमन तीनों दोस्तों को आते देखकर कहा - 'समीर शायद तुम तीनों के पास गया था पार्टी के लिए अभी तक समीर घर नहीं आया।

रमन ने बताया - 'आंटीजी 12:00 बजे समीर का कॉल आया था वह कह रहा था रास्ते में हूँ फिर उसके बाद कॉल स्विच ऑफ आने लगा यह बात सुनकर घर में एकदम सन्नाटा छा गया। फ्लैट में खड़े लोग कुछ और सोचते इससे पहले तभी समीर दरवाजे पर आता नजर आया। सबने समीर को घेर लिया, समीर के पिता समीर का हाथ पकड़के केक के पास ले आए, सब लोगों के मुरझाए चेहरे पर मुस्कान लौट आई।

सुरेश ने पूछ लिया, समीर तुम घर से 12:00 बजे निकले थे, अब शाम के 6:00 बजे आए हो। 6 घंटे से कहाँ लापता थे? माँ ने भी गुस्से से पूछ लिया, मैंने दोपहर को पाँच हजार रुपए दिए थे, तुमने उन रुपयों का क्या किया? सबको बताओ, तब एक पड़ोसन बोली तुम्हारा बेटा समीर अब बड़ा हो गया है, गलत जगह पैसा खर्च करके आया है। इतनी

बड़ी रकम तो हमने भी अपने बच्चों को नहीं दी। समीर बिगड़ चुका है, हमें तो शक है किसी लड़कीबाजी में पैसे उड़ा कर आया होगा। कुछ रिश्तेदार तो मन ही मन आनंदित हुए जा रहे थे आस-पड़ोसी भी यही चाहते थे कि समीर से गलती हो। तभी दरवाजे से एक अधेड़ आदमी झांकता दिखा, फिर घर के भीतर आ गया। समीर के पास खड़ा होकर बोला भगवान सबको ऐसा बेटा दे।

दोपहर 12:00 बजे सड़क किनारे मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। मेरा दिमाग एकदम सुन हो गया, मेरा एक हाथ जेब में था आते-जाते लोग मुझे देखते फिर चले जाते, ना तो मैं बोल पा रहा था, ना सुन पा रहा था, लेकिन दिखाई दे रहा था। तभी एक बाइक मेरे पास आकर रुकी, उसने तुरंत पास की दुकान से पानी की बोतल खरीदी और मुझे पानी पिलाते हुए कहा - 'अंकलजी सड़क किनारे क्यों बैठे हो? क्या घरबार नहीं है? चलो मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ दूं! तब मैंने कहा - 'घर जाकर क्या करूंगा, कबाड़ी का काम करता हूँ, मेरे पिताजी का आज देहांत हो गया, लेकिन घर में एक फूटी कोड़ी भी नहीं थी। इसलिए जहां मैं कबाड़ी का सामान बेचता था, वहां से बड़ी मुश्किल से पाँच हजार रुपए उधार लिए थे कि पिताजी का अंतिम संस्कार कर दूंगा, लेकिन बस में चढ़ने से पहले ही किसी ने मेरी जेब काट ली। अब वह कबाड़ी वाला भी दोबारा पैसे नहीं देगा, बीवी बच्चे मेरी राह देख रहे होंगे। आस-पड़ोसी सब जमा हो चुके हैं, मैं खाली हाथ किस मुंह से जाऊं, मैं बिलख-बिलख कर रोने लगा।

हम गरीबों के पास दौलत तो नहीं होती साहब, लेकिन बस एक सम्मान ही होता है। तब उसने मुझे मोटरसाइकिल पर बिठाया और मुझे मेरे घर ले गया। लोगों का जमावड़ा बढ़ता ही जा रहा था। मेरे घर आते ही मेरा छोटा बेटा दीपू बोला - 'पापा तुमने रुपए लाने में इतनी देर क्यों लगा दी? पड़ोसी तरह-तरह की बातें बना रहे थे, तब उसने पाँच हजार रुपए निकालकर मेरी बीवी कुसुम देवी को देते हुए कहा - 'अंकलजी को बस नहीं मिल रही थी, इसलिए अंकल जी को मैंने बाइक पर बिठा लिया और उनके रुपए रास्ते में गिर ना जाए इसलिए मैंने अपनी जेब में रख लिए थे। यह लो अंकलजी के पाँच हजार रुपए। तब मेरी बीवी ने कहा इन रूपयों को तुम अपने पास रखो, जहाँ-जहाँ खर्च होंगे करते चले जाना। 450 रूपए की अर्थी लेकर सजाई गई, उसने मेरे बूढ़े पिता को कांधा देते हुए शमशान तक आया। वहाँ ढ़ाई हजार की लकड़ियाँ खरीदी, पंडितजी ने देसी घी मंगवाने के लिए कहा तो 2 किलो देसी घी एक हजार रुपए का मंगवाया। पांच हजार रुपए में से जो रूपए बचे वह पंडितजी को दक्षिणा के रूप में दे दिए।

शाम को वह शमशान से हमारे घर आया, मोटरसाइकिल पर बैठा और कहा, कुछ दूरी पर हमारा घर है। आज मेरा जन्मदिन है, तुम्हें घर आना है उसने अपना पता बता दिया। तब मैं इस समीर को जन्मदिन की बधाई देने चला आया। माँ की आंखों में आंसू थे, वह सोचने लगी मैंने कहा था समीर इन पैसों का गलत इस्तेमाल नहीं होना चाहिए, आज एक बेटे ने माँ की लाज रख ली। समीर के तीनों दोस्त आज बहुत खुश थे कि हमें समीर जैसा मित्र मिला, रिश्तेदारों के तो गाल फूल चुके थे समीर का यह पुण्य का काम सुनकर समीर के एक दूर के रिश्तेदार ने कहा - 'अपनी खुशियों से बढ़कर किसी जरूरतमंद की मदद करना ही हमारी संस्कृति हमें सिखाती है। फ्लैट में खड़े मौजूद सभी लोगों ने एक साथ कहा - 'समीर जैसा बेटा भगवान सबको दे।

केक कटा और सब में बंटा। समीर ने एक बड़े से डिब्बे में बहुत सा खाना पैक करके उन अंकलजी के हाथ में थमा दिया। वे अंकलजी जब घर पहुंचे बच्चों से कहा तुम सुबह से भूखे हो। लो मैं, तुम लोगों के लिए खाना लाया हूँ। बच्चों ने जब डिब्बे खोले तो एक डिब्बे में नोट रखे हुए थे। साथ में एक लेटर भी। लेटर में लिखा था मैं समीर का पिता आपको पाँच हजार रुपए और दे रहा हूँ। इस समय तुम्हें पैसों की जरूरत होगी और आपके पिता की तेरहवीं का पूरा खर्चा भी हम उठाएंगे। मैं आज आपको धन्यवाद दे रहा हूँ इसलिए कि आपकी वजह से आज मेरा बेटा एक गुनाह करने से बच गया और वह गुनाह था- 'शराब की पार्टी।'

❖❖

मार्च 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति मार्चमाह में भी गति प्रदान की गई है। वर्तमान में होली चातुर्मास उपरांत विहार चल रहे हैं और हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मार्च माह में भी अप्रत्याशित कार्य हुए।

मार्च माह में राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना की केन्द्रीय समिति ने विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 10,76,000 रुपये की धनराशि मासिक वेतन के रूप में प्रदान की गई है। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 1,32,500 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च कर एक कीर्तिमान स्थापित किया गया। 16,500 रुपये की धनराशि पूज्य गुरु भगवंत के लिए एक व्हील चेयर क्रय करने में खर्च की गई। इस प्रकार कुल 12,25,500 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में मार्च माह में सेवार्थ खर्च की गई।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा, योजना की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलताजी राजावत, राष्ट्रीय महिला मंत्री श्रीमती मनीषाजी कागरेचा, योजना के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुलजी जैन ने सभी दानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए वैय्यावच्च या सेवा में अभिरुचि रखने वाले सभी महानुभावों से योजना में अधिक से अधिक सहयोग देने की पुरजोर करबद्ध अपील की है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचन्दजी सिंघवी द्वारा साधु-साध्वीवृन्द के प्रति सेवा कार्यों को जहाँ मुक्तहस्त से पूर्ण किया जा रहा है, वहीं आप पूज्य संत-सतीवर्ग की सेवा को अपना परम सौभाग्य मानते हैं। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी को इस पुण्यात्मक कार्य से जोड़ने के लिए अपनी एवं अपनी टीम की ओर से तहेदिल से आभार प्रकट किया।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

सौ वर्षीय लीलावती ने जीवनभर की पूंजी दान की

कोटा (राजस्थान) : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की कोरोना के खिलाफ जंग में आर्थिक मदद करने की अपील रंग ला रही है। देश की नामचीन हस्तियों के अलावा आमजन भी इसमें भागीदार बन रहे हैं। राजस्थान के कोटा शहर की सौ वर्षीय महिला ने भी इसमें बहुमूल्य योगदान दिया है। लालावती जैन ने जीवनभर की जमा पूंजी के रूप में एक लाख छः हजार रुपये की रकम पीएम के अर्स कोष में दान कर दी है। उन्होंने प्रधानमंत्री की अपील को सुनने के बाद अपने परिजनों से कोष में सहयोग की इच्छा जताई थी। इसकी शुरुआत करते हुए अपनी जीवनभर की कमाई दान कर दी। लालवती अपने हाथों से धनराशि दान करना चाहती थीं। उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए एडीएम सिटी आरडी मीणा और सूचना जनसंपर्क विभाग के उपनिदेशक हरिओम गुर्जर उनके छावनी स्थित घर पर जाकर उनसे उचेक प्राप्त किया। **प्रेषक : सुधीर जैन**

समाचार प्रकाश

युवाचार्यश्रीजी का होली चार्तुमास रेनीगुंटा में हर्षोल्लास के साथ मनाया

रेनीगुंटा (आन्ध्र प्रदेश) : श्रमण संघीय युवाचार्य, प्रज्ञा महर्षि पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. आदि ठाणा एवं आनंद श्रमणी रत्ना उप प्रवतिनी महासतीजी श्री कंचनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 6 का होली चार्तुमास बड़े हर्षोल्लासपूर्वक विशाल जन मेदिनी के बीच रेनीगुंटा में सम्पन्न हुआ। युवाचार्यश्रीजी ने अपने प्रवचन में फाल्गुनी चार्तुमासिक पक्खी का महत्व बताया एवं बतलाया कि यह एक ही चार्तुमासिक दिवस शेखे काल में आता है जिसे कोई भी स्थान पर मनाया जा सकता है। महासतीजी ने अपने उद्‌बोधन में होली चार्तुमास की महानता से सभी को अवगत कराया और आज के दिन कोई न कोई तप आराधना करने का आग्रह किया। ज्ञान की गंगा आपके द्वार तक आयी है इसका ज्यादा से ज्यादा लाभ लेने का अवसर प्राप्त हुआ है इसे हाथ से न गंवाएं।

समारोह की शुरुआत स्थानीय संघ की महिलाओं ने स्वागत गीत से की। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने अपने उद्‌बबोधन में कहा कि गुरुदेव का आगामी चार्तुमास ए.एम.के.एम. के प्रांगण में महासंघ के तत्वावधान में बहुत ही ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक होगा। पूरा महानगर गुरुदेव के चेन्नई महानगर में आगमन के लिए आतुर है। रेनीगुंटा संघ के अध्यक्ष ने सभी सुदुर प्रांतों से पधारे एवं श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ तमिलनाडु के पदाधिकारियों का तहेदिल से स्वागत किया।

महासंघ के चेयरमैन श्री अभयजी श्रीश्रीमाल ने गुरुदेव को विश्वास दिलाया कि आगामी चार्तुमास ऐतिहासिक होगा, जिसमें नवयुवकों के लिए विशेष कार्यक्रम होंगे एवं उसके लिए जोरों से तैयारीयां चल रही है। जैनिज्म को आज की साइंस के साथ जोड़ने हेतु दुनिया के विभिन्न जैन वैज्ञानिकों एवं विद्वानों के सान्निध्य में वर्कशॉप आयोजित करने के लिए कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा जैनिज्म एवं मॉर्डन साइंस की एक्जीबिशन का भी आयोजन किया जाएगा।

महासंघ के महामंत्री श्री धर्मीचंदजी सिंघवी जैन ने कहा कि गुरुदेव आन्ध्र प्रदेश के कठिनतम इलाकों को पार करके रेनीगुंटा पहुंचे है। कडप्पा से आगे रेनीगुंटा संघ एवं श्रीकालाहस्ती संघ के श्री मानकचंदजी बनवट एवं श्री रमेशजी कोठारी तथा उनके संघ के सदस्यों की विहार सेवाएं बहुत ही सराहनीय एवं अनुमोदनीय रही। रेनिगुंटा के छोटे से जैन समाज ने आज के इस एक दिवसीय चार्तुमास में सैंकडो की तादाद में पहुंची जनमेदिनी की शानदार व्यवस्था के लिए संघ के श्री महावीरचंद जी छल्लानी, कन्हैयालालजी आंचलिया, मानकचंदजी बनवट, राजेन्द्रजी आंचलिया इत्यादि सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया और सभी का अभिनंदन किया। संघ के सभी कार्यकर्ताओं की रात-दिन की मेहनत अनुकरणीय रही। मंत्री ने गुरुदेव के आगामी कार्यक्रमों के बारे में सबको अवगत कराया। सभा में विभिन्न प्रान्तों के पदाधिकारियों ने गुरुदेव के कर-कमलों में अपने-अपने बाजारों में पधारने की विनतियां रखी, जिसमें आरकोनम श्रीसंघ के पदाधिकारियों ने, तिरुपति, तिरुतनी, पुत्तुर, नगरी के सदस्यों ने, तिरुवल्लुर से भीकमचंदजी लुंकड ने पटाबीराम से जवरीलाल रांका ने, आवडी से जबरचंद खिवसरा ने, अन्नानगर, अमंजीकरै एवं शेनायनगर से सुदर्शन छल्लानी, पोरुर संघ से पदमचंद कांकरिया, जुगराज बोरुंदिया ने, विरुगमबाकम से मीठालाल पगारिया ने क्रोमपेट से अशोक बोहरा, वानगरम से अभिषेक दुगड़ एवं और भी कई सुदुर प्रांतों के महानुभावों ने गुरुदेव के सान्निध्य में अपने-अपने बाजारों में फरसने की पुरजोर विनंतीयाँ रखी। गुरुदेव ने सभी को आश्वासन दिया कि समयानुसार हर बाजार में फरसने की पूरी कोशिश रहेगी। महासंघ के अध्यक्ष श्री सुरेश लुनावत, सज्जनराज तालेड़ा, नेमीचंद सिंघवी, सुरेश गादिया, चन्द्रप्रकाश तालेड़ा, सुरेन्द्र बोहरा, राजेन्द्र सिंघवी, ललित संचेती, देवराज लुनावत, स्वरुप जामड, राजेन्द्र बोहरा, रमेश ओस्तवाल, चेतन पटवा, अशोक कोठारी, हीराचंद पींचा, नवरतन पींचा, ए.एम.के.एम. के अध्यक्ष सुनील बाफना, महान तपस्वी सुभाष कांठेड़, गौतमचंद दुगड़, भागचंद बरडिया, जवरीलाल चौधरी, महावीरचंदजी छल्लाणी, प्रकाशजी कटारिया, चैनराजजी छाजेड़, राकेशजी छाजेड़, नेमीचंद गहलोत, बोरूंदा, महावीरजी कोठारी युवा कॉन्फ्रेंस के सदस्यगण, पूना, सिकंदराबाद इत्यादि विभिन्न प्रांतों के गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं की भारी संख्या में उपस्थिति रही।

प्रेषक : राकेश छाजेड़ जैन

स्मरण दिवस पर गरीबों को कराया भोजन

जावरा (मध्य प्रदेश) : जीवन में कभी-कभी अचानक से ऐसा घटनाक्रम हो जाता है जो जीवन पर्यंत हमें यादगार पल दे जाता है। ऐसे ही करुणा के सागर भाग्यवान, पुण्यवान कहकर अपना आशीर्वाद देते हुए अपने प्रेम की, अपने दुलार की बौछार कर देने वाले तपस्वीराज, तपोनिधि श्री अभयमुनिजी म.सा. जिनके पंचम स्मरण दिवस पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ जावरा के सदस्य एवं गुरु भक्तों द्वारा स्थानीय श्री महावीर अन्नक्षेत्र रावण द्वार पर दरिद्र नारायण को भोजन कराया गया। श्री अभय मुनि जी म.सा. के पुण्य स्मरण दिवस को आजीवन चिर स्थाई बनाने का संकल्प सुजानमल निलेश कुमार औरा मामटखेड़ा वाले परिवार ने लिया। प्रतिवर्ष पूज्य गुरुदेव के पुण्य स्मरण दिवस पर दरिद्र नारायण को भोजन अन्नक्षेत्र समिति के माध्यम से कराया जाएगा **प्रेषक : संदीप रांका**

पूज्य श्री पंकजमुनिजी म.सा. की एंजियोप्लास्टी बैंगलोर में सफलतापूर्वक संपन्न हुई

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्रमण संघीय उपप्रवर्तक परम पूज्य श्री पंकजमुनिजी म.सा. को भगवान महावीर जैन हॉस्पिटल में हार्ट की एंजियोप्लास्टी देव-गुरु-धर्म की कृपा से बहुत ही सुखसातापूर्वक संपन्न हुई। उपरोक्त जानकारी देते हुए दक्षिण सूर्य पू. डॉ. श्री वरुणमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. श्री योगेशजी कोठरी एवं डॉ. राम अनिल राज जी ने बहुत ही ध्यान से पूज्य गुरुदेव की एंजियोप्लास्टी का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया। हम दोनों ही डॉ. महोदय एवं उनकी पूरी विशेषज्ञ टीम का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। इस अवसर पर युग प्रधान आचार्य सम्राट परम पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा., श्रमण संघीय युवाचार्य भगवंत परम पूज्य श्री महेंद्रऋषिजी म.सा., उत्तर भारतीय प्रवर्तक परम पूज्य श्री सुभद्रमुनिजी म.सा., राष्ट्र संत शिरोमणि डॉ. श्री वसंतविजयजी म.सा. एवं अनेक संत-साध्वियों की शुभ-मंगल कामना संदेश गुरुदेव के स्वास्थ्य लाभ हेतु प्राप्त हुए।

भगवान महावीर जैन हॉस्पिटल के अध्यक्ष महोदय श्रीमान महावीर जी रांका एवं मंत्री श्रीमान पारसजी भंडारी व ट्रस्ट मंडल की गणमान्य हस्तियों ने पूज्य गुरुदेव की विशेष सुखसाता पृच्छा की एवं बताया कि हमारे हॉस्पिटल का यह परम सौभाग्य है कि समय-समय पर चारों ही संप्रदायों के पूज्य गुरु भगवंतों की सेवा का सौभाग्य हमें प्राप्त होता रहता है। मधुर वक्ता श्री रूपेशमुनिजी म.सा. ने सभी साधु-साध्वीजी, श्रावक- श्राविकाओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया, जिन्होंने भी पूज्य गुरुदेव की स्वास्थ्य मंगल कामना के लिए आयंबिल तप की आराधना एवं नवकार महामंत्र जप साधना का विशेष उपक्रम किया। डॉ. श्री वरुणमुनिजी म.सा. ने बताया कि पूज्य गुरुदेव सुखसातापूर्वक हॉस्पिटल में स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। संभवतः दो-चार दिन में उन्हें हॉस्पिटल से छुट्टी मिल जाएगी और पूज्य गुरु भगवंत श्रीमान सा. बसंतजी मरलेचा के निवास स्थान पर कुछ दिन विराजने की भावना रखते हैं, स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से। इसी के साथ दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पुणे, सिकंदराबाद, चेन्नई, बैंगलोर से अनेक श्रद्धालु गुरु भक्तों के स्वास्थ्य लाभ हेतु मंगल कामना संदेश प्राप्त हो रहे हैं। हम सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

सम्राट् पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा. का 14वाँ पुण्य स्मृति दिवस मनाया

शिक्षा, संगठन और साधना की ओर अपने कदम बढ़ाये गुरु आनंद ने - साध्वी विपुलदर्शनाजी

बैंगलोर (कर्नाटक) : राजाजीनगर स्थानक में आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा. का 21वाँ पुण्य स्मृति दिवस उप-प्रवर्तिनी साध्वी श्री सत्यप्रभाजी, साध्वी श्री दर्शनप्रभाजी, साध्वी श्री मणिप्रभाजी, साध्वी श्री मल्लिश्रीजी, प्रज्ञा किरण साध्वी श्री विपुलदर्शनाजी, साध्वी श्री आगमश्रीजी एवं समस्त साध्वीवृन्द के पावन सान्निध्य में गुरु गुणगान, तप, त्याग तथा धर्म आराधना द्वारा मनाया गया। सामूहिक जाप से गुरुभक्ति दिवस का शुभारंभ हुआ। साध्वी श्री सत्यप्रभाजी ने कहा आचार्य गुरु आनंद महान साधक थे। उनके जीवन में नकारात्मक सोच बिलकुल नहीं थी। वे साधना के धनी थे। उनकी प्रवचन शैली

सरल किंतु प्रभाविक थी। उनके आनंद प्रवचन बहुत ही विख्यात हुए। उन्होंने गहरा ज्ञान अपने प्रवचनो में संजोया। उनको श्रवण कर श्रोता आनंद विभोर हुआ करते थे। साध्वी श्री दर्शनप्रभाजी ने कहा आप गंगा की तरह पवित्र और कमल की तरह सुगंधित थे। आप भक्तों के भगवान और दया के सागर थे। संघ समाज का संगठन ही आपका उद्देश्य था।

साध्वी श्री मणिप्रभाजी ने कहा श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषिजी महाराज अपने युग के अद्वितीय महान संत थे। वे जैन ही नहीं जन-जन के संत थे। आचार्यश्री का सम्पूर्ण जीवन अलौकिक गुणों का संगम स्थल था। गुरु आनंद ने केवल जैन दर्शन ही नहीं अपितु भारतीय दर्शन का अध्ययन किया था। विनय, सरलता, गुरु भक्ति और समभाव की साधना उनके जीवन की महान अंतरंग साधना थी।

साध्वी श्री विपुलदर्शनाजी ने कहा गुरु आनंद ने स्वाध्याय, शिक्षा, संगठन और साधना की ओर अपने कदम बढ़ाये। उनका स्वाध्याय के प्रति गहरा अध्ययन ही नहीं चिंतन भी था। उनकी शास्त्रों के प्रति अत्यधिक लगन थी। उनकी लेखनी भी उन्ही की तरह सरल थी। जिनका नाम भी आनंद था और काम भी आनंद था। वे भक्तों के लिए भगवंत स्वरूप थे। उन्होंने लगभग 79 वर्षों के संयम जीवन में जिनशासन की महति प्रभावना की। भक्तों को आनंद के चरणों में बैठकर आनंद की अनुभूति होती थी। उन्होंने कहा आचार्य आनंद 15 भाषाओं के ज्ञाता थे। आचार्य आनंद श्रमण संघ के शिरोमणि थे सरताज थे। श्रमण संघ को सुदृढ़ करने में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने जिनशासन की अटूट सेवा कर अपना सम्पूर्ण जीवन जिन शासन की प्रभावना में समर्पित किया। अपने जीवन में अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने कभी नियम से समझौता नहीं किया।

साध्वी श्री आगमश्रीजी ने कहा कि गुरु आनंद आचार्य की आठों संपदाओ के धनी थे। यें आठों संपदाये आचार्य आनंद में विध्यमानथी। वे ज्ञान के अनूठे भंडार थे। साध्वी आस्थाश्रीजी ने कहा उनका जीवन नंदनवन की तरह था। उनके सद्गुणो को हम ग्रहण कर इस अवसर पर उनके चरणों में सच्ची भेंट समर्पित कर सकते है। साध्वी श्री समृद्धिश्रीजी ने कहा आचार्य गुरु आनंद की तप-साधना अटूट थी। उन्होंने 29 वर्षों तक लगातार आयंबिल तप की साधना की। साध्वी श्री तरुणशीलाजी ने कहा कि जिनशासन के चमकते सितारे और सरलता की प्रतिमूर्ति थे आचार्य आनंद।

इस समारोह में त्रिशला महिला, त्रिशला बहु मण्डल, युवा, जिनेश्वर मंडल का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर हुबली, रानी बैनूर, सिंधनुर, बाणावर, अरसीकेरे तथा बैंगलोर के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक श्रद्धालुगण उपस्थित रहे। राजाजीनगर संघ अध्यक्ष प्रकाशचंद चाणोदिया, हुबली से महेंद्र सिंघी, प्रकाश कटारिया, श्रीरामपुरम से सिद्धार्थ बोहरा ने गुरु गुणगान में अपने विचार रखे। राजाजीनगर त्रिशला बहू मण्डल ने गुरु गुणगान में स्तवन की प्रस्तुति दी। हुबली श्री संघ से हुबली से महेंद्रसिंघी, अध्यक्ष उकचंद बाफना, बाबूलाल पारख, प्रकाश कटारिया, कांतिलाल बोहरा, गौतम गोलेच्छा, गौतम भुरट, अशोक कोठारी, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारी सर्वश्री सुरेशजी छल्लाणी, ज्ञानचंदजी लोढ़ा, किशोरकुमारजी दलाल, पदमचंदजी आच्छा, विकासजी कोठारी, कमलजी साँखला व अन्य श्री संघ अध्यक्ष/मंत्री सर्वश्री चेतनप्रकाशजी डूंगरवाल, आनंदकुमारजी नाहर, हस्तीमलजी बाफना, रिखभचंदजी मेहता, अभयकुमार बांठिया, अशोककुमारजी गुगलिया, कन्हैयालालजी सुराणा, प्रसन्नजी सेठिया, धर्मीचंदजी बोहरा, महावीरजी कोठारी, उत्तमचंदजी आच्छा, राजाजीनगर संघ के उपाध्यक्ष रोशनलालजी नाहर, सहमंत्री राकेशजी दलाल, कोषाध्यक्ष प्रसन्नजी भलघट, युवा अध्यक्ष धीरजजी नाहर, महिलाओं में सुशीलाबाईजी बोहरा, रेखाजी पोखरणा, नीतूजी लुंकड़, ललिताजी कटारिया, युवा मंडल में जिनेश्वर मण्डल, प्यारेलाल टपरावत, अशोकजी बागरेचा, महेंद्रजी चोरडिया, प्रवीणजी बंब व अन्य का सहयोग रहा । आनंद पुण्यस्मृति दिवस के उपलक्ष्य में अनेक भाई-बहनो ने आयंबिल एवं एकासन के प्रत्याख्यान लिए। अध्यक्ष प्रकाशचंद चाणोदिया ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया और संचालन संघ मंत्री नेमीचंदजी दलाल जैन ने किया।

प्रेषक : नेमीचंदजी दलाल जैन, संघ मंत्री

मुमुक्षु योगिता बोरा की जैन भगवती दीक्षा संपन्न

गौकुलवाड़ी, जालना (महाराष्ट्र) : गौकुलवाडी में गुरु गणेश प्रभा प्रतिभा प्रतिष्ठान पर मुमुक्षु योगिता रमेशजी बोरा जैन का बहुत सुंदर जैन भगवती दिक्षा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। कोटा संघ में इस वर्ष श्रमण संघ उप-प्रवर्तक युवा प्रेरक पू. श्री गौरवमुनिजी म.सा. एवं नवकार आराधिका कोटा संघ प्रमुखा महासती पू. श्री प्रतिभाकवंरजी म.सा. के सान्निध्य में द्वितीय दीक्षा का कार्यक्रम बहुत ही हर्ष उल्लास से नवदिक्षित पू. श्री प्रणितीश्रीजी म.सा. का संपन्न हुआ। जिसका जितना गुणगान अनुमोदन किया जाए कम है। विशेष यह है कि दिनांक 4/4/2024 यानि कुल 4+4+4+4 = 16 एवं पू. श्री प्रतिभाकवंरजी म.सा. भी आज से 16 ठाणा हो गए। इस दीक्षा महोत्सव को पू. श्री गौरवमुनिजी म.सा. एवं आयंबिल आराधिका पू. श्री प्रभुल्लाजी म.सा. ने अथक परिश्रम कर सफल बनाया एवं सुभाष भाऊ मुथा व समस्त गौकुलवाडी विश्वस्त मंडल/बदनापुर श्रीसंघ ने जो परिश्रम किया वह बधाई एवं साधुवाद के प्राप्त है। कार्यक्रम के सुंदर आयोजन / नियोजन / संचालन / भोजन / आवास-निवास की व्यवस्था सभी के लिए आप सभी को बहुत-बहुत बधाईयां एवं साधुवाद है। इस कार्यक्रम में पधारे जैन कान्फ्रेंस दिल्ली के पदाधिकारियों एवं सभी गुरु भक्तों दानशूर भामाशाह को भी बहुत बहुत साधुवाद एवं धन्यवाद प्रेषित किया गया। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार एवं जालना श्रीसंघ की ओर से भी बहुत-बहुत बधाईयां एवं साधुवाद व शुभकामनाएं।

प्रेषक : आनंद सुराणा जैन

श्री एस. एस. जैन सभा अरिहंत नगर के चुनाव संपन्न

अरिहंतनगर , दिल्ली : श्री एस.एस. जैन सभा अरिहंत नगर के चुनाव दिनांक 23/3/2024 को आम सभा की बैठक में आत्म भवन जैन स्थानक, अरिहंत नगर में संपन्न हुए, जिसमें सर्वसम्मति से श्रीमान् पंकजजी जैन को अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया और उन्होंने अपनी कार्यकारिणी का गठन किया। कार्यकारिणी में पांच-संरक्षक, एक प्रमुख मार्गदर्शक, तीन मार्गदर्शक, चेयरमैन श्री चक्रेशजी जैन, महामंत्री श्री जसवंतजी जैन, मंत्री, सहमंत्री, कोषाध्यक्ष श्री संजयजी जैन, प्रबंधक, सह-प्रबंधक एवं चार कार्यकारिणी सदस्यों को मनोनीत किया गया।

प्रेषक : जसवंत जैन

श्री जिनेश्वर शोभा जैन ने फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया

इंदौर (मध्य प्रदेश) : अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप्स फेडरेशन (रजि.) के वर्ष 2024-26 के कार्यकाल हेतु श्री जिनेश्वर शोभा जैन को राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वसम्मति से मनोनित किया गया। श्री जिनेश्वर शोभा जैन विगत 22 वर्षों से सोशल ग्रुपों से जुड़े हुए है। इस अवसर पर उद्योगपति जयसिंहजी टीना जैन, संस्थापक अध्यक्ष श्री वीरेंद्र रेखा जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र नीलू जी जैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय सुनीता नाहर, राजेश संगीता दुग्गड चापडा आदि ने भी बधाई प्रदान की।

प्रेषक : जिनेश्वर जैन

अथक प्रयास से दुर्लभ जैन मूर्तियों की नीलामी पर लगी रोक

दिल्ली : श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी मोदी, गृहमंत्री श्री अमितजी शाह, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री एकनाथजी शिन्दे को 01 अप्रैल 2024 को पत्र लिखकर टोदीवाला ऑक्सन हाउस द्वारा प्रस्तावित 16 अप्रैल 2024 को मुंबई में 17 दुर्लभ जैन मूर्तियों की नीलामी को रोकने का अनुरोध किया था। ज्ञात हुआ है कि महासभा के सदप्रयासों के परिणाम स्वरूप प्रस्तावित 17 दुर्लभ जैन मूर्तियों की नीलामी को रोक दी गई है। श्री गजराज जैन गंगवाल ने उन सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया है जिन्होनें इस सदकार्य में अपना सहयोग दिया। दुर्लभ जैन मूर्तियों की नीलामी के समाचार से सम्पूर्ण जैन समाज में आक्रोश था। भविष्य में इस तरह की घटना की पुनरावृति नहीं हो, ये पवित्र मूर्तियां जैन समाज की धरोहर हैं। नीलामी रोकने के लिये त्वरित कार्रवाई हेतु महासभा भारत सरकार महाराष्ट्र सरकार तथा संबंधित सरकारी एजेंसियों का हृदय से आभार व्यक्त करती है तथा उन्हें इस सदकार्य के लिये धन्यवाद देती है।

प्रेषक : श्री गजराज जैन गंगवाल

शोक समाचार

राजस्थान प्रांतीय महामंत्री श्रीमान् शांतिलालजी मारू जैन का निधन

उदयपुर (राजस्थान) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महामंत्री जुझारू, समर्पित, निष्ठावान, विनम्र स्वभाव के धनी, आदरणीय श्री शांतिलालजी मारू जैन हमारे बीच नहीं रहे, उनका देवलोकगमन दिनांक 27 मार्च 2024 को हो गया। इस खबर ने पूरे स्थानकवासी जैन समाज, श्रमणसंघ और दिवाकर संप्रदाय में सनसनी फैला दी। वे एक गोमाता के भक्त के साथ ही रोज गो माता के लिये चारा पानी कि चिंता करने वाले पूज्य गुरुदेव जैन दिवाकर चौथमल जी म.सा. व श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के प्रति अटूट निष्ठावान थे।

समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार व जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान पदाधिकारी व सदस्यगण ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे और परिवार के सभी सदस्यों को यह वज्रपात सहन करने की ताकत दे।

वरिष्ठ श्राविका श्रीमती सुंदरबाईजी पगारिया जैन का निधन

घाटकोपर (महाराष्ट्र) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्रीमान् महेन्द्रजी पगारिया जैन की दादीजी वरिष्ठ श्राविका श्रीमती सुंदरबाईजी पगारिया जैन धर्मपत्नी स्व. श्री इन्द्रमलजी पगारिया जैन निवासी मदारा-रेलमगरा, हाल मुकाम (घाटकोपर) का देहांत हो गया है। आप श्री रोशनलालजी, दिनेशचंद्रजी की माताजी एवं श्री दिलीपजी, महेन्द्रजी, विजयजी, अमितजी पगारिया की दादीजी, विनयजी, प्रीतजी, आरवजी, रिदांतजी की पड़ दादीजी थी। आप एक धार्मिक आदर्श सुश्राविका थी। आपने अपने समस्त परिवार को धार्मिक संस्कारों से सींचा, जिसका परिणाम है कि आपका संपूर्ण परिवार साधु-साध्वीवृंद की सेवा हो या समाज सेवा, हमेशा अग्रणी रहकर निस्वार्थ भाव से तन-मन-धन से प्रदान करता है।

संथारा साधिका, सुश्राविका श्रीमती उर्मिलाजी जैन का निधन

बड़ौत (उत्तर प्रदेश) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड के प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमान् अमितरायजी जैन की माताजी संथारा साधिका, सुश्राविका श्रीमती उर्मिलाजी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री सुरेशचंदजी जैन का देवलोकगमन दिनांक 25 मार्च 2024 को हो गया। आपकी माताजी एक धर्मनिष्ठ सुश्राविका थी। माताजी ने घरेलु एवं धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण समस्त परिवारजनों को प्रदान किया। जिनका पालन आपका पूरा परिवार तन्मयता से करता आ रहा है, परन्तु विधि की विडम्बना के आगे हम सभी नतमस्तक हैं। आप, अपने पीछे सुपुत्र श्रीमान् अनुराग जैन, श्रीमान् अमितराय जैन, पुत्रवधुए, सुपौत्र-सुपौत्रवधु, सुपुत्री-दामाद आादि सहित भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं। आपकी माताजी की इस तेजोमय आत्मा की शांति के लिए जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से, वीर प्रभु से मंगल कामना करते हैं कि ऐसी महान आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करें।

श्रीमान् बलवंतसिंहजी हिंगड़ जैन का स्वर्गवास

अकोला (राजस्थान) : जैन कॉन्फ्रेंस में विभिन्न पदाधिकारी पदों पर सेवा देने वाले कर्मठ, सेवाभावी, मधुरभाषी कार्यकर्ता श्रीमान् बलवंतजी हिंगड़ जैन का अकास्मिक देवलोकगमन दिनांक 25 मार्च 2024 हो गया। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर, वीर प्रभु से मंगल कामना करते हैं कि ऐसी महान आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करें।

श्रीमती त्रिशांगी खेतपालिया का स्वर्गवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्रीमती त्रिशांगी खेतपालिया धर्मपत्नी श्री मोहित खेतपालिया का दिनांक 25 मार्च 2024 हो गया स्वर्गवास हो गया। विधि की विडंबना के आगे हम सभी नतमस्तक है। भगवान वीर प्रभु दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करें, हार्दिक श्रद्धांजलि।

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

सूरत : शिवाचार्य भगवंत एवं गच्छाधिपति आचार्य श्री कुलचन्द्रसूरिश्वर (K.C.) जी म.सा. आदि ठाणा का आत्मीय मिलन।

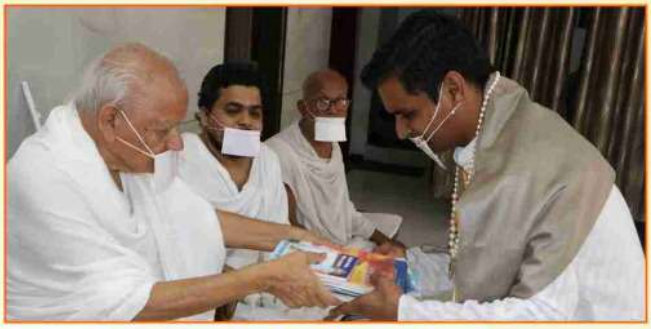

सूरत : शिवाचार्य भगवंत से आशीर्वाद एवं साहित्य प्राप्त करते वैरागी श्री चन्द्रप्रकाश जी जैन।

सूरत : शिवाचार्य भगवंत से आशीर्वाद प्राप्त करते राज्यसभा सदस्य श्री लहरसिंहजी सिरोया, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री अशोकजी मेहता आदि महानुभाव

रेनीगुंटा : युवाचार्य भगवंत श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा. आदि ठाणा - 3 का होली चातुर्मास - 2024 हेतु रेनीगुंटा, आन्ध्र प्रदेश में प्रवेश ।

रेनीगुंटा, आन्ध्र प्रदेश - युवाचार्य भगवंत श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा., पूज्य श्री हितेन्द्रऋषिजी म. सा., पूज्य श्री धवलऋषिजी म. सा. आदि ठाणा - 3 व महासती श्री कंचनकंवरजी म. सा. आदि ठाणा - 6 के सान्निध्य में होली चातुर्मास के शुभ अवसर पर आयोजित धार्मिक अनुष्ठान में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमलजी छल्लाणी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदजी कांकरिया श्री सुरेशजी लुणावत, श्री राजेन्द्रजी बोहरा सहित अनेकों जैन कॉन्फ्रेंस पदाधिकारियों ने दर्शनों का लाभ प्राप्त किया।

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

पानीपत - उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म. सा. से धर्म चर्चा कर आशीर्वाद - मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए राष्ट्रीय चेयरमैन - श्री सुभाषजी ओसवाल जैन आदि।

बैंगलोर - उपप्रवर्तिनी महासती श्री मणिप्रभाजी म. सा. आदि ठाणा - 3 के विहार सेवा में राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना अध्यक्ष श्री रतनजी सिंघवी आदि।

गोकुलवाड़ी, जालना - उपप्रवर्तक श्री गौरवमुनिजी म. सा. व महासती श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा. आदि संत - सतीवृन्द के सान्निध्य में वैरागन योगिता जैन की दीक्षा सम्पन्न। साध्वी प्रणतिजी म. सा. नामकरण सम्पन्न ।

दिल्ली - राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमलजी छल्लाणी चेयरमैन - विश्वस्त मण्डल श्री रमनलालजी लुंकड की अध्यक्षता में संचालित जीवन प्रकाश योजना के अन्तर्गत कन्या उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आर्थिक सहयोग का चेक प्रदान करते हुए।

बैंगलोर - विश्वस्त मंडल सदस्य श्री प्रकाशसा बुरड़ राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती आरतीजी बुरड़ आदि के साथ श्री सुनीलजी लोढा, श्री विकासजी कोठारी आदि युवा सदस्यों के साथ शिष्टाचार भेंट स्वागत अभिनन्दन विचारों का आदान-प्रदान।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन	अशोक मेहता जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा
जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 वेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित